CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६४६

स्वाध्याय पद संग्रह

11.4

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदयचन्द्र जैन
वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाध्याय पद संग्रह

4697

☆प्रकाशक☆
श्री शान्तिलाल वनमालीदास शेठ
फाउन्डेशन, जयनगर, बेंगलोर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nana, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूल्य : स्वाध्याय

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

Shri Shantilal Vanmalidas
Sheth Foundation
"Daya - Shanti"
2212, 9th 'A' Main Road,
3rd Block, Jayanagar,
Bangalore - 560 011.
Ph : (080) 6632808 / 6633711
Fax : (080) 6633711

Printed at :
Indev Laminators,
Bangalore - 560 040.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

श्री आदिनाथ भगवान

(बेंगलोर जिन मंदिर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

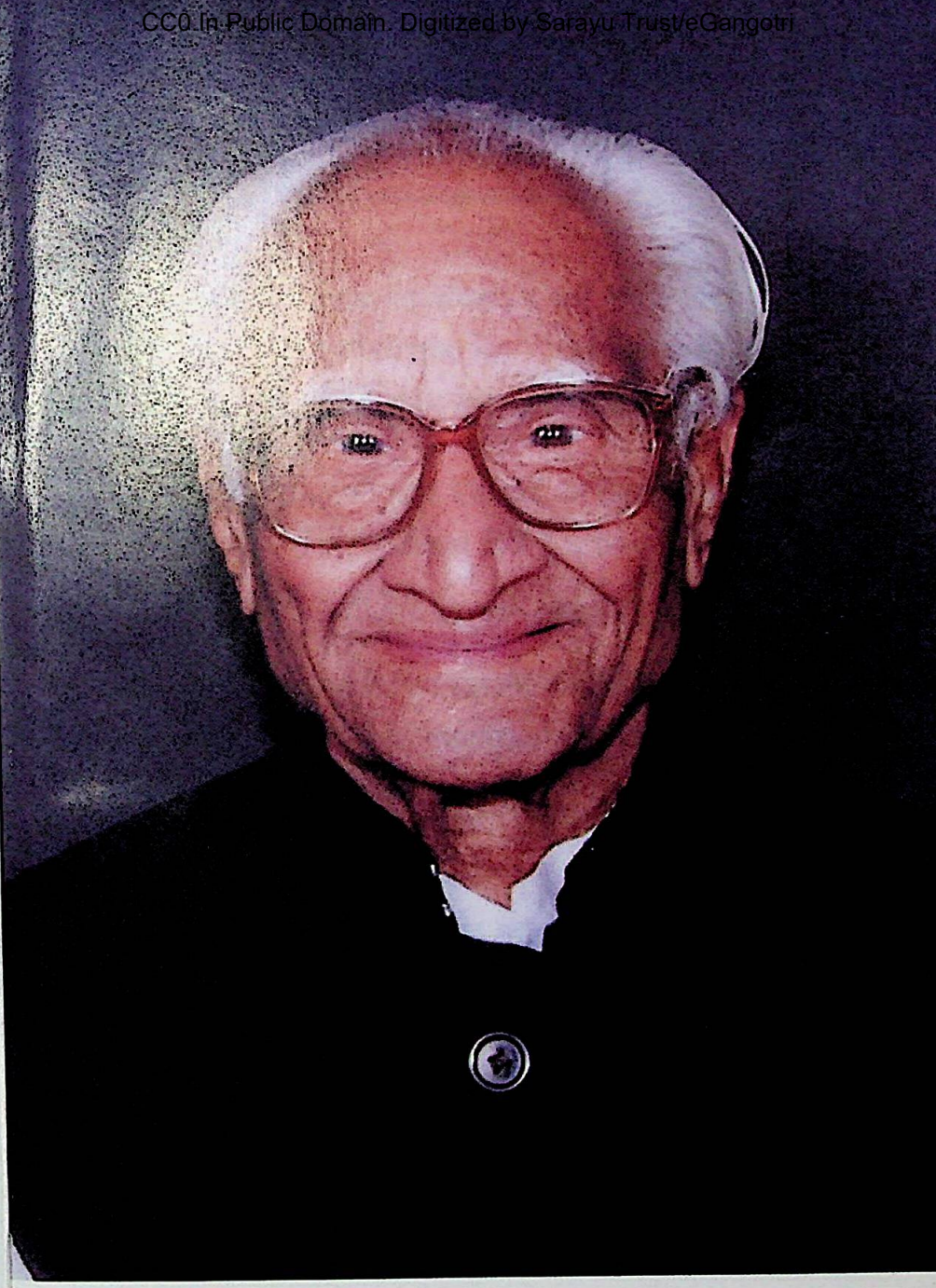

परम श्रद्धेय आदरणीय

पूज्य श्री शान्तिलालजी वनमालीदास शेठ

जन्म : 21-05-1911 (जेतपुर-गुजरात)

देहविलय : 11-07-2000 (बेंगलोर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

यह पुस्तक 'स्वाध्याय-पद-संग्रह' - हम हमारे परम श्रद्धेय पूज्य श्री शान्तिलालजी वनमालीदास शेठ - की पावन स्मृति में मुमुक्षु समाज के स्वाध्याय, चिंतन व मनन अर्थ सादर समर्पित भेंट करते हैं।

इस पुस्तक में उन सभी खास रचनाओं का संकलन किया गया है जो पूज्य श्री व परिवारजनों को विशेष प्रिय हैं व नित्य नियम स्वाध्याय में इनका पाठ अनवरत करते हैं।

इस पुस्तक के संकलन में जिन सत्साहित्य में से प्रेरणा ली हैं - हम उन सभी रचनाकारों, प्रकाशकों, संकलनकर्ताओं, मुद्रक व अन्य समस्त सहयोगियों का - जिनका हमें प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहकार प्राप्त हुआ हैं - हम हृदय से आभारी हैं।

हम सब व मुमुक्षु समाज इसका स्वाध्याय, चिंतन व मनन कर लाभान्वित हों - इस पवित्र भावना के साथ -

सादर समर्पित -

श्रीमती दयाबहन शान्तिलाल शेठ परिवार

बेंगलोर

21-5-2001

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय - सूची

क्र०	विषय	लेखक	पृष्ठ सं०
	मंगल-पाठ खण्ड		
1	सुभासियं		1
2	सुभासियं पदों के अर्थ		4
3	सुभाषितम्		7
	स्तुति-पाठ खण्ड		
1	भक्तामर स्तोत्रम्	मुनि श्री मानतुंगाचार्य	9
2	दर्शन - स्तुति (सकल ज्ञेय....)	पं० दौलतरामजी	18
3	दर्शन -स्तुति (अति पुण्य....)	पं० अमरचन्दजी	20
4	देव -स्तुति (प्रभु पतित....)	पं० बुधजनजी	22
5	प्रभु -स्तुति (जगनां अगाध....)		23
6	जिनेन्द्र-स्तुति (सन्मार्गदर्शी....)		23
7	आराधना -पाठ (मैं देवनित....)	पं० द्यानतरायजी	24
8	मेरी भावना (जिसने राग....)	पं० युगवीरजी	26
9	श्री शांतिनाथ स्तुति		29
10	श्री जिन आरती		34
	पूजन-पाठ खण्ड		
1	पूजा पीठिका		35
2	देव-शास्त्र-गुरु पूजन	पं० बाबू युगलजी	39

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3	पंच-परमेष्ठी पूजन	पं० राजमलजी पवैया	44
4	चतुर्विंशति जिन पूजा	पं० राजेन्द्र जैन कुमरेश	48
5	श्री आदिनाथ जिन पूजा		52
6	श्री महावीर पूजन	डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल	57
7	महार्घ्य-पाठ		62
8	शान्ति-पाठ		63

आलोचना-पाठ खण्ड

1	आलोचना पाठ (बंदौ पाँचों....)	पं० जौहरीलालजी	65
2	समाधिमरण पाठ (बन्दौ श्री....)	पं० सूरचन्दजी	69
3	सिद्ध -स्तुति (अविनाशी....)		78
4	समाधिमरण स्वरुप	पं० गुमानीरामजी	79
5	समाधि-भावना (दिन रात....)	पं० शिवरामजी	81
6	सामायिक- पाठ (सौ प्राणीआ....)	मुनिश्री अमितगति	82
7	रत्नाकर पच्चीशी (मंदिर छो....)		88
8	समाधि -भावना (भगवन समय....)		93
9	मृत्यु महोत्सव (आज मेरा....)	पं० राजमलजी पवैया	94
10	बारह भावना (वन्दू श्री....)	पं० मंगतरायजी	98
11	बारह भावना (राजा राणा....)	पं० भूधरदासजी	104
12	सांत्वनाष्टक (शान्त चित....)		106
13	अपूर्व अवसर	श्रीमद् राजचन्द्रजी	108
14	अमूल्य तत्वविचार	श्रीमद् राजचन्द्रजी	113
15	श्री सद्गुरुभक्ति रहस्य	श्रीमद् राजचन्द्रजी	114
16	काल कोई ने नहि मूके	श्रीमद् राजचन्द्रजी	117
17	धर्म विषे (साह्यबी सुखद....)	श्रीमद् राजचन्द्रजी	119

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

18	मूल मारग सांभलो जिननो रे....	श्रीमद् राजचन्द्रजी	121
19	श्री सद्गुरु -माहात्म्य	श्रीमद् राजचन्द्रजी	123
20	मंगल-स्तुति (मंगलमय....)	श्रीमद् राजचन्द्रजी	124
21	क्षमापना (हे भगवान !....)	श्रीमद् राजचन्द्रजी	126
22	प्रणिपात स्तुति	श्रीमद् राजचन्द्रजी	128
23	छह सामान्यगुण		129

भक्ति-पाठ खण्ड (हिन्दी)

1	मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा		131
2	देखो जी आदीश्वर स्वामी	पं० दौलतरामजी	131
3	तुम से लागी लगन	पं० पंकजजी	132
4	मेरे मन मन्दिर में आन		132
5	निरखो अंग-अंग जिनवर के		133
6	तुम्हारे दर्श बिन स्वामी		133
7	संसारी जीवनां भावमरणो	पं० हिम्मतलालशाह	134
8	महिमा है अगम जिनागम की	पं० भागचन्दजी	135
9	सांची तो गंगा यह	पं० भागचन्दजी	135
10	चरणों में आ पडा हूं	पं० सुदर्शनजी	136
11	जिनवाणी माता दर्शन की		136
12	ऐसे मुनिवर देखे वन में		137
13	संत साधु बन के विचरुं		137
14	धन्य मुनीश्वर आतम हित में		137
15	म्हारा परम मुनिवर आया		138
16	देखा जब अपने अंदर में		139
17	दुनिया में सबसे न्यारा		139

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

18	मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ	हुकमचन्दजी भारिल्ल	140
19	जो जो देखी वीतराग ने		140
20	स्वत: परिणमति वस्तु के		141
21	हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम	सहजानन्द वर्णीजी	141

भक्ति-पाठ खण्ड (गुजराती)

1	हे नेमी जिनेश्वरजी	पं० सौभाग्यजी	142
2	कहे राजुलदे नार		142
3	प्रभुनी वाणी जोर रसाल		143
4	तन मन फूला दर्शन पा	पं० सौभाग्यजी	143
5	आज मारा हृदय मां		144
6	सीमंधर मुखथी फूलडा खरे		145
7	सुख शान्ति प्रदाता		146
8	जंगल वसाव्युं रे जोगीओ		147
9	जागो जोगी अलख स्वरूपी		148
10	प्रभु मेरे ! तूं सब वाते पूरा		149
11	ऐसा स्वरुप विचारो हंसा		149
12	संसार सागर तारवा	पं० हिम्मतलाल शाह	150
13	गुरुदेव ! तारा चरणमां		151
14	अहो! अहो! श्री सद्गुरु	श्रीमद् राजचन्द्रजी	152

स्वाध्याय-पाठ खण्ड

1	स्वाध्याय (पद्य)	154
2	स्वाध्याय (गद्य)	162

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभासियं

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। (1)

उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च,
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे। (2)

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंस - वासुपुज्जं च,
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सतिं च वंदामि। (3)

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुनिसुव्वयं नमि जिणं च,
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च। (4)

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु। (5)

चत्तारि मंगलं - अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णतो धम्मो मंगलं। (6)

चत्तारि लोगुत्तमा - अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमो। (7)

चत्तारि सरणं पवज्जामि - अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि। (8)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयइ जगजीवजोणी - वियाणओ जगगुरु जगाणंदो,
जगणाहो जग बंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं। (9)

दाणाण - सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्ज वयंति,
तवेसु वा उत्तम - बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते। (10)

जीवाऽजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावाऽऽसवो तहा,
संवरा, निज्जरा, मोक्खो, संतेए तहिया नव। (11)

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो,
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सयामणो। (12)

धम्मो वत्थुसहावो, खमादिभावो य दसविहो धम्मो,
रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो। (13)

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जिविउं न मरिज्जिउं,
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंधा वज्जयं तिणं। (14)

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति,
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइमरणं वयंति। (15)

एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिसंइ किंचणं,
अहिंसासमयं चेव, एतावंते वियाणिया । (16)

चित्तमंत्तमचितं वा, परिगिज्झ किसामवि,
अन्नं वा अणुजाणाइ, एवं दुक्खा ण मुच्चइ। (17)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली,
अप्पा काम दुहा धेणू, अप्पा मे नंदणंवणं। (18)

खणमित्त सुक्खा, बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा,
संसार मोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा। (19)

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए,
जयं भुंजतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ। (20)

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण,
अमला असंकलिट्ठा, ते होंति परित्त संसारी। (21)

अरहंत भासियत्थं, गणहरदेवेहि गंथियं सम्मं,
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोदहिं सिरसा। (22)

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे,
मिती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं ण केण वि। (23)

णाणं सरणं मे, दंसणं च सरणं च, चरिय सरणं च,
तव संजमं च सरणं, भगवं सरणों महावीरो। (24)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभासियं पदों के अर्थ

अर्हंतों को नमस्कार, सिद्धो को नमस्कार, आचार्यो को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार, लोकवर्ती सर्वसाधुओ को नमस्कार। (1)

मै 1. ऋषभ, 2. अजित, 3. सम्भव, 4. अभिनन्दन, 5. सुमति, 6. पद्मप्रभः, 7. सुपार्श्व तथा 8. चन्द्रप्रभः को वन्दन करता हूँ। (2)

मै 9. सुविधि (पुष्पदंत), 10. शीतल, 11. श्रेयांस, 12. वासुपूज्य, 13. विमल, 14. अनंत, 15. धर्म, 16. शान्ति को वंदन करता हूँ। (3)

मै 17. कुन्थु, 18. अर, 19. मल्लि, 20. मुनिसुंव्रत, 21. नमि, 22. अरिष्टनेमि, 23. पार्श्व तथा 24. वर्धमान को वन्दन करता हूँ। (4)

चंद्र से अधिक निर्मल, सूर्य से अधिक प्रकाश करनेवाले, सागर की भांति गम्भीर सिद्ध भगवान मुझे सिद्धि (मुक्ति) प्रदान करे। (5)

अर्हंत मंगल है,सिद्ध मंगल है,साधु मंगल है, केवलिप्रणीत धर्म मंगल है। (6)

अर्हंत लोकोत्तम है, सिद्ध लोकोत्तम है, साधु लोकोत्तम है, केवलि प्रणीत धर्म लोकोत्तम है। (7)

अर्हंतो की शरण लेता हूँ, सिद्धो की शरण लेता हूँ, साधुओं की शरण लेता हूँ, केवलि - प्रणीत धर्म की शरण लेता हूँ। (8)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवों की उत्पत्ति के स्थान को जानने वाले जगत्गुरु, जगत को आनंद देने वाले चराचर जगत के नाथ, विश्व बंधु, जगत के पितामह, भगवान तीर्थंकर देवाधिदेव जयवंत है। (9)

जैसे दानो मे अभयदान श्रेष्ठ है, सत्यवचनों मे अनवध वचन (पर-पीडाजनक नही) श्रेष्ठ है। जैसे सभी सत्यतपों मे ब्रह्मचर्य उत्तम है, वैसे ही ज्ञातपुत्र श्रमण भगवान महावीर लोक मे उत्तम थे। (10)

जीव, अजीव, बंध, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा और मोक्ष, ये नव यथातथ्य (तत्व) है। (11)

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण है। जिसका मन सदा धर्म मे रमा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते है। (12)

वस्तु का स्वभाव धर्म है। क्षमा आदि भावों की अपेक्षा से वह दस प्रकार का है। रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र) तथा जीवों की रक्षा करना धर्म है। (13)

सभी जीव जीना चाहते है, मरना नहीं। इसलिए प्राणवध को भयानक जानकर उसका वर्जन करना चाहिए। (14)

राग और द्वेष कर्म के बीज (मूल कारण) है। कर्म मोह से उत्पन्न होता है। वह जन्म मरण का मूल है। जन्म मरण को दु:ख का मूल कहा गया है। (15)

ज्ञानी होने का सार यही है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। इतना जानना ही पर्याप्त है कि अहिंसामूलक समता ही धर्म है। अथवा यही अहिंसा का विज्ञान है। (16)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजीव या निर्जीव, स्वल्प वस्तु का भी जो परिग्रह (आसक्ति) रखता है अथवा दूसरे को उसकी अनुज्ञा देता है, वह दुःख से मुक्त नही होता। (17)

मेरी आत्मा ही वैतरणी नदी है। मेरी आत्मा ही कूटशाल्मली वृक्ष है। मेरी आत्मा ही कामदुहा धेनु है और मेरी आत्मा ही नन्दन वन है। (18)

काम भोग क्षणभर सुख और चिरकाल तक दुःख देने वाले है। बहुत दुःख और थोडा सुख देने वाले है। संसार-मुक्ति के विरोधी और अनर्थो की खान है। (19)

यत्ना (विवेक या उपयोग) पूर्वक चलने, यत्नाचार पूर्वक रहने, यत्नाचार पूर्वक सोने, यत्नाचार पूर्वक खाने और यत्नाचार पूर्वक बोलने से पाप कर्म का बंध नही होता। (20)

जो जिनवचन मे अनुरक्त है तथा जिनवचनों का भानपूर्वक आचरण करते है, वे निर्मल और अंसक्लिष्ट होकर परीत संसारी (अल्प जन्म-मरण वाले) हो जाते है। (21)

जो अर्हंत के द्वारा अर्थरूप मे उपदिष्ट है तथा गणधरो के द्वारा सूत्ररूप मे सम्यक्गुंफित है, उस श्रुतज्ञानरूपी महासिन्धु को मैं भक्तिपूर्वक सिर नवाकर प्रणाम करता हूँ। (22)

मै सब जीवों को क्षमा करता हूँ। सब जीव मुझे क्षमा करें। मेरा सब प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव है। मेरा किसी से भी वैर नहीं है। (23)

ज्ञान मेरा शरण है, दर्शन मेरा शरण है, चारित्र मेरा शरण है, तप और संयम मेरा शरण है तथा भगवान् महावीर मेरे शरण है। (24)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभाषितम्

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।
ओंकारं बिन्दु, संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः,
कामदं, मोक्षदं चेव, ॐकाराय नमो नमः। (1)

अर्हंतो भगवंत इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः,
आचार्या जिनशासनोन्नत्तिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। (2)

श्री सिद्धांत सुपाठका मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वंतु नो मंगलम्। (3)

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिता,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमोः। (4)

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमोगणी,
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्। (5)

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारनम्,
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम्। (6)

ब्राह्मी चंदन बालिका भगवती, राजीमती द्रौपदी,
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्राशिवा। (7)

कुन्ती शीलवती नलस्य दहिता, चूला प्रभावत्यपि,
पद्मावत्यापि सुंदरी दिनमुखे, कुर्वंतु वो मंगलम्। (8)

अज्ञान तिमिरान्धानं, ज्ञानांजन शलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः। (9)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मा ज्ञानं, स्वयं ज्ञानं, ज्ञानादत्यत्करोति किम्,
परभावस्य कर्त्तात्मा, मोहोदयं व्यवहारिणाम्। (10)

सत्त्वेषुमैत्रीं गुणिषुं प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं,
माध्यस्थभावं, विपरीतवृतौ, सदा ममात्मा विदधातु देव!। (11)

नमस्कार समो मंत्रः, शत्रुंजय समोगिरिः,
वीतराग समो देवो, न भूतो न भविष्यति। (12)

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने,
सदा मेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे भवे। (13)

नहित्राता नहित्राता, नहित्राता जगत्त्रये,
वीतरागत्परो देवो, न भूतो न भविष्यति। (14)

स्वदोष शान्तया विहतात्म शान्ति,
शान्तिर् विधाता शरणां गतामा,
भूयात् भव क्लेश स्वदोष शान्तये,
शान्तिर् जिनो मे भगवान शरणयं। (15)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तामर स्तोत्रम्

4697

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि - प्रभाणा,
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्,
सम्यक्प्रणम्य जिन - पाद - युगं युगादा-,
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम्। (1)

यः संस्तुतः सकल - वांगमय - तत्त्व बोधा-,
दुद्भूत - बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक नाथैः,
स्तोत्रैर्जगत्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्। (2)

बुद्धया विनापि विबुधार्चित - पाद - पीठ,
स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगत - त्रपोऽहम्,
बालं विहाय जल - संस्थितमिन्दु बिम्ब,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्। (3)

वक्तुं गुणान्गुण - समुद्र शशांक - कांतान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया,
कल्पान्त - काल- पवनोद्धत - नक्र- चक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्। (4)

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनिश,
कर्तु स्तवं विगत - शक्तिरपि प्रवृत्तः,
प्रीत्यात्म - वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निज - शिशोः परिपालनार्थम्। (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास - धाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्,
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र - चारु - कलिका - निकरैकहेतुः। (6)

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति - सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्,
आक्रान्त - लोकमलि - नीलमशेषमाशु,
सूर्यांशु - भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्। (7)

मत्त्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-,
मारभ्यते तनु - धियापि तव प्रभावात्,
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी - दलेषु,
मुक्ताफल - द्युतिमुपैति ननूद - बिन्दुः। (8)

आस्तां तव स्तवनमस्त - समस्त - दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति,
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि। (9)

नात्यद्भुतं भुवन - भूषण भूत - नाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः,
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति। (10)

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष - विलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः,
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध सिन्धोः,
क्षारं जलं जल - निधेरसितुं क इच्छेत्। (11)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यैः शान्त - राग - रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैक - ललाम - भूत,
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रुपमस्ति। (12)

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग - नेत्र - हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम्,
बिम्बं कलंक - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डु पलाश - कल्पम्। (13)

संपूर्ण- मण्डल - शशांक - कला - कलाप-,
शुभ्रा गुणस्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति,
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान्नि वारयति संचरतो यथेष्टम्। (14)

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-,
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम्,
कल्पान्त - काल - मरुता - चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि - शिखरं चलितं कदाचित्। (15)

निर्धूम - वर्तिरपवर्जित - तैल - पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि,
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः। (16)

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु - गम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति,
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा - प्रभावः,
सूर्यातिशायि - महिमासि मुनीन्द्र ! लोके। (17)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारं,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्,
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्व - शशाङ्क - बिम्बम्। (18)

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु - दलितेषु तमस्सु नाथ,
निष्पन्न - शालि - वन - शालिनि जीव - लोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जल - भार - नम्रैः। (19)

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु,
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच - शकले किरणाकुलेऽपि। (20)

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति,
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्त रेऽपि। (21)

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता,
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र - रश्मि,
प्राच्यैव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्। (22)

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्य - वर्णममलं तमसः परस्तात्,
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव - पदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ! (23)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर मनन्तमनंग केतुम्,
योगीश्वरं विदित - योगमनेकमेकं,
ज्ञान - स्वरुपममलं प्रवदन्ति सन्तः। (24)

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि - बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन - त्रय - शंकरत्वात्,
धातासि धीर शिव - मार्ग - विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि। (25)

तुभ्यं नमस्त्रिनभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय,
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि - शोषणाय। (26)

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-,
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश,
दोषै रुपात्तविविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद पीक्षितोऽसि। (27)

उच्चैरशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख-,
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्,
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त - तमो - वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति। (28)

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा - विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्,
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता - वितानं,
तुंगोदयाद्रि शिरसीव सहस्त्र - रश्मेः। (29)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुन्दावदात - चल - चामर - चारु - शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्,
उद्यच्छशांक - शुचिनिर्झर - वारि - धार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्। (30)

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक- कान्तम्,
मुच्चैः स्थितं स्थगित - भानु - कर - प्रतापम्,
मुक्ता - फल - प्रकर - जाल - विवृद्ध - शोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्। (31)

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभाग-,
स्त्रैलोक्य - लोक - शुभ - संगम - भूति - दक्षः,
सद्धर्मराज - जय - घोषण - घोषकःसन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी। (32)

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात-,
सन्तानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि - रुद्धा,
गन्धोद - बिन्दु - शुभ - मन्द - मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा। (33)

शुम्भत्प्रभा - वलय - भूरि - विभा विभोस्ते,
लोक - त्रय द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती,
प्रोद्यद्दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम - सौम्याम्। (34)

स्वर्गापवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्व - कथनैक - पटुस्त्रिलोक्याः,
दिव्य - ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ - सर्व-,
भाषा - स्वभाव - परिणाम - गुणै - र्प्रयोज्यः। (35)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्निद्र - हेम - नव - पंकज - पुञ्ज - कान्ती ,
पर्युल्लसन्नख - मयूख - शिखाभिरामौ,
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति। (36)

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य,
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रह - गणस्य विकासिनोऽपि। (37)

श्च्योतन्मदाविल - विलोल - कपोल - मूल-,
मत्तभ्रमद् भ्रमर - नाद - विवृद्ध - कोपम्,
ऐरावताभ मिभमुद्धत मापतन्तं,
दृष्टवा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्। (38)

भिन्नेभ - कुम्भः गलदुज्जवल - शोणिताक्त-,
मुक्ता - फल - प्रकर - भूषित - भूमि - भागः,
बद्ध - क्रमः क्रम - गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगाचल - संश्रितं ते। (39)

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत -वह्नि - कल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्,
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नाम - कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम्। (40)

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ - नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्,
आक्रामति क्रम - युगेण निरस्त - शंङ्कः,
स्त्वन्नाम - नाग - दमनी ह्रदि यस्य पुंसः। (41)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वल्गतुरंग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्,
उद्यद्दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति। (42)

कुन्ताग्र - भिन्न - गज - शोणित - वारिवाह,
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे,
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेय - पक्षा,
स्त्वत्पाद - पंकज - वनाश्रयिणो लभन्ते। (43)

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण - नक्र -चक्र,
पाठीन - पीठ - भय - दोल्वण - वाडवाग्नौ,
रंगत्तरंग - शिखर - स्थित - यान - पात्रा-,
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति। (44)

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत - जीविताशाः,
त्वत्पाद - पंकज - रजोमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज - तुल्यरूपाः। (45)

आपाद - कण्ठमुरुश्रृंखल - वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगड - कोटि - निघृष्ट - जंघा,
त्वन्नाम - मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत - बन्ध - भया भवन्ति। (46)

मत्तद्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि,
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्,
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते। (47)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रूचिर - वर्ण - विचित्र पुष्पाम्,
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गतामजस्त्रं,
तं 'मानतुंग' मवशा समुपैति लक्ष्मीः। (48)

दुखमयी पर्याय क्षणभंगुर सदा कैसे रहे?
अमर है ध्रुव आतमा वह मृत्यु को कैसे वरे?
ध्रुवधाम से जो विमुख वह पर्याय ही संसार है,
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।

संयोग क्षणभंगुर सभी पर आतमा ध्रुवधाम है,
पर्याय लयधर्मा परन्तु द्रव्य शाश्वत धाम है,
इस सत्य को पहिचानना ही भावना का सार है,
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन-स्तुति

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन,
सो जिनेंद्र जयवंत नित, अरि - रज - रहस विहीन। (1)

जय वीतराग - विज्ञानपूर, जय मोहतिमिर को हरन सूर,
जय ज्ञान अनंतानंत धार, दृगसुखवीरजमण्डित अपार। (2)

जय परमशांत मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत,
भवि भागन वचजोगेवशाय, तुम धुनि ह्वैं सुनि विभ्रम नशाय। (3)

तुम गुण चिंतत निजपर विवेक, प्रगटै विघटैं आपद अनेक,
तुम जगभूषण दूषणविमुक्त, सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त। (4)

अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरुप, परमात्म परम पावन अनूप,
शुभ अशुभ विभावअभाव कीन, स्वभाविकपरिणतिमय अछीन। (5)

अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टयमयराजत गंभीर,
मुनिगणधरादि सेवत महंत, नव केवललब्धिरमा धरंत। (6)

तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव,
भवसागर में दुख छार वारि, तारन को और न आप टारि। (7)

यह लखिनिजदुखगद हरणकाज, तुमही निमित्तकारण इलाज,
जाने तातैं मैं शरण आय, उचरों निज दुख जो चिर लहाय। (8)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाप,
निजको परको करता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान। (9)

आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतष्णा जानि वारि,
तन परिणति में आपो चितार, कबहूँ न अनुभव्यो स्वपदसार। (10)

तुमको बिन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश,
पशु नारक नर सुरगति मँझार, भव धर-धर मर्‌यो अनंत बार। (11)

अब काललब्धि बलतैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल,
मन शांत भयो मिटि सकल द्वन्द, चाख्योस्वातमरस दुख निकंद। (12)

तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरै न कभी तुव चरण साथ,
तुम गुणगण को नहिं छेव देव, जग तारन को तुव विरद एव। (13)

आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय,
मैं रहूँ आपमें आप लीन, सो करो होउँ ज्यों निजाधीन। (14)

मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश,
मुझ कारज के कारन सु आप, शिव करहु हरहु मम मोहताप। (15)

शशि शांतिकरन तपहरन हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत,
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय,त्यों तुम अनुभवतैं भव नशाय। (16)

त्रिभुवन तिहूंकाल मँझार कोय, नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय,
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जहाज। (17)

तुम गुणगणमणि गणपति, गणत न पावहिं पार,
'दौल' स्वल्पमति किम कहै, नमूँ त्रियोग सँभार। (18)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन-स्तुति

अति पुण्य उदय मम आया, प्रभु तुमरा दर्शन पाया,
अब तक तुमको बिन जाने, दुख पाये निज गुण हाने।
पाये अनंते दुःख अब तक, जगत को निज जानकर,
सर्वज्ञ भाषित जगत हितकर, धर्म नहिं पहिचान कर।

भव बंधकारक सुखप्रहारक, विषय में सुख मानकर,
निज पर विवेचक ज्ञानमय, सुखनिधि-सुधा नहिं पानकर।
तव पद मम उर में आये, लखि कुमति विमोह पलाये,
निज ज्ञान कला उर जागी, रुचि पूर्ण स्वहित में लागी।

रुचि लगी हित में आत्म के, सतसंग में अब मन लगा,
मन में हुई अब भावना, तव भक्ति में जाऊँ रँगा।
प्रिय वचन की हो टेव, गुणिगण गान में ही चित पगै,
शुभ शास्त्र का नित हो मनन, मन दोष वादनतैं भगै।

कब समता उर में लाकर, द्वादश अनुप्रेक्षा भाकर,
ममतामय भूत भगाकर, मुनिव्रत धारूँ वन जाकर।
धरकर दिगम्बर रूप कब, अठ-बीस गुण पालन करूँ,
दो-बीस परिषह सह सदा, शुभ धर्म दस धारन करूँ।

तप तपूँ द्वादश विधि सुखद नित, बंध आस्त्रव परिहरूँ,
अरू रोकि नूतन कर्म संचित, कर्म रिपुकों निर्जरूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कब धन्य सुअवसर पाऊँ, जब निज में ही रम जाऊँ,
कर्तादिक भेद मिटाऊँ, रागादिक दूर भगाऊँ।

कर दूर रागादिक निरन्तर, आत्म को निर्मल करूँ,
बल ज्ञान दर्शन सुख अतुल, लहि चरित क्षायिक आचरूँ।
आनन्दकन्द जिनेन्द्र बन, उपदेश को नित उच्चरूँ,
आवै 'अमर' कब सुखद दिन, जब दुःखद भवसागर तरूँ।

हर हरकत की मूल में, कारण सच्चा देख,
बिन कारण संसार में, पत्ता हिले न एक।
जैसा तेरा आचरण, फल वैसा ही होय,
दुराचरण दुःख ही बढे, सदाचरण सुख होय।
जो चाहे सुख ना घटे, होय दुःख का नाश,
दासी बन तृष्णा रहे, बन मत तृष्णा-दास।
कुदरत का कानून है, इससे बचा न कोय,
मैले मन दुखिया रहे, निर्मल सुखिया होय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव-स्तुति

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरन आयो सरन जी,
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी,
या बुद्धिसेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी।

भव विकट वन में करम वैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‌यो,
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो।

धन घडी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो,
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो।

छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासापै धरैं,
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छविको हरैं।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो, उदय रवि आतमभयो,
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो।

मैं हाथ जोड नवाय मस्तक, वीनऊँ तुव चरन जी,
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन - तरन जी।

जाचूँ नहीं सुर वास पुनि, नरराज परिजन साथ जी,
'बुध' जाचहुँ तुव भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

પ્રભુ - સ્તુતિ

જગના અગાધ તિમિરે પ્રભુ ! સુર્ય તું છે,
અજ્ઞાન-અધં જગનું પ્રભુ ! નેત્ર તું છે;
ભવસાગરે પતિતનું પ્રભુ ! નાવ તું છે,
માતા, પિતા, ગુરુ, જિનેશ્વર ! સર્વ તું છે.
તીર્થંકરો જગતના જયવંત વર્તો,
ઉઁકારનાદ જિનનો જયવંત વર્તો;
જિનના સમોસરણ સૌ જયવંત વર્તો,
ને તીર્થ ચાર જગમાં જયવંત વર્તો.

જીનેન્દ્ર - સ્તુતિ

સન્માર્ગ દર્શી, બોધિદાતા, કૃપા અતિ વર્ષાવતા,
આશ્રય અને કરુણા થકી, અમ રંકને ઉદ્ધારતા;
વિમળજ્ઞાની શાન્તમૂર્તિ, દિવ્ય ગુણે દિપતા,
જિનરાજજી તુમ ચરણમાં, દિન ભાવથી હો વંદના.
ઇમ સકલસુખકર, દુરિત ભયહર, વિમલ લક્ષણ ગુણધરો,
પ્રભુ અજર, અમર, નરેન્દ્રવંદિત, વિનવ્યો સીમંધરો,
નિજ નાદતર્જિત, મેઘગર્જિત, ધૈર્યનિર્જિત, મંદરો,
રે ભકતજન હું, ચરણસેવક, સીમંધરપ્રભુ જય કરો.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आराधना पाठ

मैं देव नित अरहंत चाहूँ, सिद्ध का सुमिरन करौं,
मैं सूर गुरु मुनि तीन पद ये, साधुपद हिरदय धरौं।
मैं धर्म करुणामयी चाहूँ, जहाँ हिंसा रंच ना,
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूँ, जासु में परपंच ना। (1)

चौबीस श्री जिनदेव चाहूँ, और देव न मन बसैं,
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूँ, वंदिते पातक नसैं।
गिरनार शिखर सम्मेद चाहूँ, चम्पापुरी पावापुरी,
कैलाश श्री जिनधाम चाहूँ, भजत भाजैं भ्रम जुरी। (2)

नव तत्व का सरधान चाहूँ, और तत्व न मन धरौं,
षट् द्रव्य गुण परजाय चाहूँ, ठीक तासौं भय हरों।
पूजा परम जिनराज चाहूँ, और देव नहीं कदा,
तिहुँकाल की मैं जाप चाहूँ, पाप नहिं लागे कदा। (3)

सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित्र, सदा चाहूँ भाव सों,
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूँ, महा हर्ष उछाव सों।
सोलह जु कारण दुख निवारण, सदा चाहूँ प्रीति सों,
मैं नित अठाई पर्व चाहूँ, महामंगल रीति सों। (4)

मैं वेद चारों सदा चाहूँ, आदि अन्त निवाह सों,
पाये धरम के चार चाहूँ, अधिक चित्त उछाह सों।
मैं दान चारों सदा चाहूँ, भुवनवशि लाहो लहूँ,
आराधना मैं चार चाहूँ, अन्त में ये ही गहूँ। (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावना बारह जु भाऊँ, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूँ, त्याग भाव उद्योत हैं।
प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूँ, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्म तैं मैं छुटा चाहूँ, शिव लहूँ जहँ मोह ना। (6)

मैं साधुजन को संग चाहूँ, प्रीति तिनहीं सों करौं,
मैं पर्व के उपवास चाहूँ, आरम्भ मैं सब परिहरौं।
इस दुखद पंचमकाल माहीं, कुल श्रावक मैं लह्यौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं, निबल तन मैंने गह्यौं। (7)

आराधना उत्तम सदा चाहूँ, सुनो जिनराय जी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्याय जी।
वसुकर्म नाश विकास, ज्ञान प्रकाश मुझको दीजिये,
करि सुगति गमन समाधिमरन, सुभक्ति चरनन दीजिये। (8)

निज आत्मा निश्चय - शरण व्यवहार से परमातमा,
जो खोजता पर की शरण वह आतमा बहिरातमा,
ध्रुवधाम से जो विमुख वह पर्याय ही संसार है,
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी भावना

जिसने राग-द्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो,
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो। (1)

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं,
निज-पर के हित साधन में जो, निशि-दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुखः-समूह को हरते हैं। (2)

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूँठ कभी नहिं कहा करूं,
पर-धन-वनिता पर न लुभाऊं, सन्तोषामृत पिया करूँ। (3)

अहंकार का भाव न रखूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ। (4)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे,
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा-स्त्रोत बहे।
दुर्जन क्रूर - कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्य-भाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे। (5)

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे। (6)

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे। (7)

होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे,
पर्वत नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहिं भय खावे।
रहे अडोल - अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट-वियोग-अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे। (8)

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे,
बैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावे।
घर - घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म फल सब पावे। (9)

ईति-भीति व्यापै नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे। (10)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे,
अप्रिय कटुक - कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करैं,
वस्तु-स्वरूप - विचार खुशी से, सब दुख-संकट सहा करैं। (11)

विपदा आयी देख कर, मत तडपै मत रोय,
राख आसरो धरम को, सदा भलो ही होय।
चित्त - मैल त्यागे नहीं, करे ईश की आश,
यही मोह, यह मूढता, यह बंधन, यह पाश।
शोक -तप्त व्याकुल रहे, मूरख मूढ अजान,
लोक -चक्र उलझे नहीं, पंडित धीर सुजान।
निज करनी सुधरी नहीं, करी पराई आश,
धर्म -चक्र छूटा, बँधा लोक-चक्र के पाश।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શ્રી શાન્તિનાથ સ્તુતિ

શારદમાય નમું શીર નામિ,
હું ગુણ ગાઉ ત્રિભૂવનકા સ્વામિ;
શાન્તિ શાન્તિ જપે જે કોઇ,
તે ઘેર શાન્તિ સદા સુખ હોય. (1)

શાન્તિ જપી જે કીજે કામ,
સોહી કામ હોવે અભિરામ;
શાન્તિ જપી પરદેશ સિધાવે,
તે કુશલે કમલા લેઈ આવે. (2)

ગર્ભથકી પ્રભુ માર નિવારી,
શાન્તિજી નામ દિયેા હિતકારી;
જે નર શાન્તિ તણા ગુણ ગાવે,
ઋદ્ધિ અચિંત્ય તે નર પાવે. (3)

જે નરકો પ્રભુ શાન્તિ સહાય,
તે નરકો કછું આર્તિ નાંહિ;
જો કછુ વંછે સો હી પૂરે,
દુઃખ દારિદ્ર મિથ્યામતિ ચૂરે. (4)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

અલખ નિરંજન જ્યોત પ્રકાશી,
ઘટ ઘટ અંતર કે પ્રભુ વાસી;
સ્વામી-સ્વરૂપ કહ્યું નવિ જાયે,
કહેતાં મુજ મન અચરજ થાયે. (5)

ડાલ દીયા સબ હી હથીઆરા,
જીવ્યા મોહ તણા દલ સારા;
નારી તજી શિવસુરંગ રાચ્યો,
રાજ તજ્યો તો ભી સાહેબ સાચો. (6)

મહા બલવંત કહીજે દેવા,
કાયર કુંથું એક હણેવા;
ઋદ્ધિ સબલ પ્રભુ પાસ કહી જે,
તો ભી ભીખ્ખુ નામ કહીજે. (7)

નિંદક પૂજક કો સમ જાનત,
પણ સેવક કો હૈ સુખદાયક;
જીત પરિગ્રહ હુઆ જગ નાયક,
નામ યતિ સર્વ સિદ્ધિ દાયક. (8)

શત્રુ - મિત્ર સમચિત્ત ગણીજે,
નામદેવ અરિહંત ભણીજે;
સકલ જીવ હિતવંત કહીજે,
સેવક જાણી મહાપદ દીજે. (9)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સાગર જૈસા હોત ગંભીરા,
દુષણ એક ન માંહી શરીરા;
મેરુ અચલ જેમ અંતર જામી,
પણ ન રહે પ્રભુ એક હી ઠામી. (10)

લોક કહે જિનજી સબ દેખે,
પણ સુપનાંતર કબહુ ન પેખે;
રીષ વિના બાઇસ પરિષહા,
સેના જીતી તે જગદીશા. (11)

માનવિના જગ આણ મનાઇ,
માયા વિના શિવ સુખ લાઇ;
લોભ વિના ગુણરાશી ગ્રહિજે,
ભિખ્ખુ ભાવે સમવસરણ સેવીજે. (12)

નિર્ગ્રંથ પણે શીર છત્ર ધરાવે,
નામ યતિ પણ ચમર ઢળાવે;
અભયદાન - દાતા સુખ કારણ,
આગળ ચક્ર ચાલે અરિદારણ. (13)

શ્રી જિનરાજ દયાળ ભણીજે,
કર્મ શત્રુકો નાશ કરીજે;
ચૌવિહ સંઘ તીરથ સ્થાપ,
લક્ષ્મી ઘણી દેખે નવી આપે. (14)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

વિનયવંત ભગવંત કહાવે,
નાહીં કિસીકો શીશ નમાવે;
અકિંચનકો બિરૂદ ધરાવે,
પણ સુવર્ણપદ - પંકજ ઠાવે. (15)

રાગ નહિ પણ સેવક તારો,
દ્વેષ નહિ નગુણા સંગ વારો;
તજી આરંભ નિજ આત્મધ્યાવો,
શીવ રમણીકો સાથ ચલાવો. (16)

તેરો મહિમા અદ્‌ભૂત કહીજે,
તેરા ગુણકો પાર ન લીજે;
તું પ્રભુ સમરથ સાહેબ મેરા,
હું મન મોહન સેવક તોરા. (17)

તું રે ત્રિલોક તણો પ્રતિપાળ,
હું છું અનાથ ને તું છો દયાળ;
તું શરણાગત રાખત ધીરા,
તું પ્રભુ તારક છો બડવીરા. (18)

તું હી સમોવડ ભાગ જ પાયો,
તો મેરો કાજ સધ્યો રે સવાયો;
કરજોડી પ્રભુ વિનવું તુમ શું,
કરો કૃપા જિનવરજી અમશું. (19)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

જનમ - મરણના ભય નિવારો,
ભવસાગરથી પાર ઉતારો;
શ્રી હસ્તિનાપુર મંડળ સોહે,
ત્યાં શ્રી શાન્તિ સદા મન મોહે. (20)

મહા સુખ સાગર જ્ઞાન પ્રસાદ,
શ્રી ગુણ સાગર કરે નિજધ્યાન;
જે નરનારી એક ચિત્તે ગાવે,
તે મનવાંછિત નિશ્ચય પાવે. (21)

ૐ શાંતિ: શાંતિ: શાંતિ:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શ્રી જિન આરતિ

જય અંતરયામી સ્વામી જય અંતરયામી;
દુઃખ હારી સુખકારી, પ્રભુ તૂ ત્રિભુવન સ્વામી.

નાથ નિરંજન સબ દુઃખ ભંજન, સંતન-આધારા;
પાપ-નિકંદન ભવ દુઃખ ભંજન, સંપત્તિ-દાતારા.

કરુણાસિંધુ દયાલુ દયાનિધિ, જય જય ગણધારી;
વાંછિત પૂરણ શ્રી જિન સબજન, સબજન હિતકારી.

જ્ઞાન-પ્રકાશી શિવપુરવાસી, અવિનાશી અવિકાર;
અલખ અગોચર ત્રિભૂમેં,અવિચલ શિવરમણી ભરતાર.

વિમલ કૃતારથ કલમલહારક, તુમ હો દીન દયાલ;
જય જયકારક તારક સ્વામી, ષટ્ જીવન રક્ષપાલ.

ન્યામત ગુણ ગાવે પાપ નશાવે,ચરનન શિરનાવે;
પુનિ પુનિ અરજ સુનાવે સેવક, શિવ-કમલા પાવે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय । नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु, णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
(*ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः, पुष्पांजलि क्षिपामि*)

चत्तारि मंगलं - अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
(*ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पांजलि क्षिपामि*)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा,
ध्यायेत्पञ्च नमस्कारं सर्व पापैः प्रमुच्यते। (1)

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा,
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः। (2)

अपराजितमन्त्रोऽयं सर्व विघ्न विनाशनः,
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः। (3)

एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं। (4)

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः,
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्। (5)

कर्माष्टक - विनिर्मुक्तं मोक्ष - लक्ष्मी निकेतनम्,
सम्यक्त्वादि - गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्। (6)

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी - भूत - पन्नगाः,
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे। (7)

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः,
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमहं यजे।
(ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र - मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायकमनन्त - चतुष्टयार्हम् ।

श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र - यज्ञ - विधिरेष मयाऽभ्यधायि ।

स्वस्ति त्रिलोक - गुरवे जिन - पुंङ्गवाय,
स्वस्ति स्वभाव - महिमोदय - सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश - सहजोर्ज्जि - दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न - ललिताद्भुत - वैभवाय ।

स्वस्त्युच्छलद्विमल - बोधसुधा प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव - परभाव -विभासकाय ।

स्वस्ति त्रिलोकवितैक - चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल - सकलायत-विस्तृताय।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।

आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वलान्,
भूतार्थ - यज्ञ - पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।

अर्हन् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।

अस्मिञ्चद्विमल - केवल - बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।

(ॐ यज्ञविधि प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्ति मंगलपाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।

श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः ।

श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।

श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।

श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।

श्रीश्रेयान्सः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।

श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।

श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ।

श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।

श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।

श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।

श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव-शास्त्र-गुरु पूजन

केवल-रवि किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर,
उस श्री जिन-वाणी में होता, तत्वों का सुन्दरतम दर्शन ।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण,
उन देव, परम-आगम, गुरु को शत-शत वन्दन, शत-शत वन्दन।

ॐ ह्रीं श्री देव - शास्त्र - गुरुसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री देव - शास्त्र गुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री देव - शास्त्र - गुरुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

इन्द्रिय के भोग मधुर विष-सम, लावण्यमयी कंचन काया,
यह सब कुछ जड़ की क्रीड़ा है, मैं अब तक जान नहीं पाया।
मैं भूल स्वयं निज वैभव को, पर-ममता में अटकाया हूँ,
अब निर्मल सम्यक् - नीर लिये, मिथ्यामल धोने आया हूँ ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़-चेतन की सब परिणति प्रभु ! अपने-अपने में होती है,
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ती है ।
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढाया है,
सन्तप्त हृदय प्रभु ! चन्दन सम, शीतलता पाने आया है।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनायचंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

उज्वल हूँ कुन्द-धवल हूँ प्रभु पर से न लगा हूँ किञ्चित् भी,
फिर भी अनुकूल लगें उन पर, करता अभिमान निरन्तर ही ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया,
निज शाश्वत अक्षत-निधि पाने, अब दास चरण रज में आया।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं,
निज अन्तर का प्रभु ! भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।
चिंतन कुछ फिर संभाषण कुछ, वृत्ति कुछ की कुछ होती है,
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ जो, अन्तर का कालुष धोती है।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से, प्रभु ! भूख न मेरी शान्त हुई,
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही ।
युग-युग से इच्छा सागर में, प्रभु ! गोते खाता आया हूँ ,
चरणों में व्यंजन अर्पित कर, अनुपम रस पीने आया हूँ ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे चैतन्य सदन में प्रभु ! चिर व्याप्त भयंकर अंधियारा ,
श्रुत-दीप बुझा हे करुणानिधि ! बीती नहिं कष्टों की कारा ।
अतएव प्रभो ! यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हूँ ,
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर दीप जलाने आया हूँ ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी,
मैं रागी द्वेषी हो लेता, जब परिणति होती जड़ केरी।
यों भाव-करम या भाव-मरण, सदियों से करता आया हूँ ,
निज अनुपम गंध-अनल से प्रभु, पर-गंध जलाने आया हूँ ।

ॐ ह्रीं श्री देव - शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है,
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है ।
मैं शान्त निराकुल चेतन हूँ, है मुक्ति-रमा सहचर मेरी,
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु ! सार्थक फल पूजा तेरी ।

ॐ ह्रीं श्री देव - शास्त्र - गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्या-मल को धो देता है ,
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है ।
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जगमग करता है,
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है ।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु ! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा ,
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु ! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

भव वन में जी भर घूम चुका, कण-कण को जी भर-भर देखा,
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा।
झूँठे जग के सपने सारे, झूँठी मन की सब आशायें,
तन-जीवन-यौवन अस्थिर है, क्षण-भंगुर पल में मुरझाये ।
सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या?
अशरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या?
संसार महा दुखसागर के, प्रभु दुखमय सुख आभासों में,
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन-कामिनि प्रासादों में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं एकाकी एकत्व लिये, एकत्व लिये सब ही आते,
तन धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते।
मेरे न हुए ये, मैं इन से, अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ,
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज सम रस पीने वाला हूँ।
जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह मँहगा जीवन घुल जाता,
अत्यन्त अशुचि जड़ काया से, इस चेतन का कैसा नाता।
दिन रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता,
मानस वाणी और काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता।
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल,
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल।
फिर तप की शोधक वह्नी जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें,
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें।
हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा,
निज लोक हमारा वासा हो, शोकांत बनें फिर हमको क्या।
जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नय-तम सत्वर टल जावे,
बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊँ, मद - मत्सर-मोह विनश जावे।
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी,
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।
चरणों में आया हूँ प्रभुवर! शीतलता मुझको मिल जावे,
मुझमें ज्ञान-लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे।
सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला,
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक में घी डाला।
तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख को ही अभिलाषा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब तक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुख की भी परिभाषा।
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर ! जग में रहते जग से न्यारे,
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे ।
स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं,
उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं ।
हे गुरुवर! शाश्वत सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है ,
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है ।
जब जग विषयों में रच-पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो,
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विषकंटक बोता हो ।
हो अर्द्ध-निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों ,
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्वों का चिंतन करते हो ।
करते तप शैल-नदी-तट पर, तरु-तल वर्षा की झडियों में,
समता-रस-पान किया करते, सुख-दुःख दोनों की घड़ियों में।
अन्तर्ज्वाला हरती वाणी, मानों झडती हों फुलझडियाँ ,
भव-बन्धन तड-तड टूट पड़ें, खिल जावें अन्तर की कलियाँ।
तुम-सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दीं जग की निधियाँ,
दिन रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणियाँ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे निर्मल देव ! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान-दीप आगम ! प्रणाम,
हे शान्ति-त्याग के मूर्तिमान, शिव-पथ-पंथी गुरुवर ! प्रणाम।

(इति पुष्पान्जलिं क्षिपेत्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंच-परमेष्ठी पूजन

अर्हन्त सिद्ध आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन;
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भव सागर तारण हार नमन।
मन-वच-काया पूर्वक करता हूँ, शुद्ध हृदय से आह्वानन,
मम हृदय विराजो तिष्ठ तिष्ठ, सन्निकट होहु मेरे भगवन।
निज आत्मतत्त्व की प्राप्ति हेतु, ले अष्ट द्रव्य करता पूजन,
तुम चरणों की पूजन से प्रभु, निज सिद्ध रूप का हो दर्शन।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिनः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिनः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री पंचरपमेष्ठिनः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ,
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्जवल जल भरकर लाया हूँ।
मैं जन्म-जरा-मृतु नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव - दुःख मेटो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार ताप में जल-जल कर, मैंने अगणित दुःख पाये हैं,
निज शान्त स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाए हैं।
शीतल चंदन हैं भेंट तुम्हें, संसार ताप नाशो स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुःख मेटो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुःखमय अथाह भवसागर में, मेरी यह नौका भटक रही,
शुभ-अशुभ भाव की भंवरों मे, चैतन्य शक्ति निज अटक रही।
तन्दुल है धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी ।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं काम व्यथा से घायल हूँ, सुख की न मिली किंचित् छाया,
चरणों में पुष्प चढाता हूँ, तुम को पाकर मन हर्षाया।
मैं काम भाव विध्वंस करूँ, ऐसा दो शील हृदय स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं क्षुधा रोग से व्याकुल हूँ, चारों गति में भरमाया हूँ,
जग के सारे पदार्थ पाकर भी, तृप्त नहीं हो पाया हूँ।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह क्षुधा रोग मेटो स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी ।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहान्ध महा - अज्ञानी मैं, निज को पर का कर्ता माना,
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्मस्वरूप न पहिचाना ।
मैं दीप समर्पण करता हूँ, मोहान्धकार क्षय हो स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी ।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों की ज्वाला धधक रही, संसार बढ रहा है प्रतिपल ,
संवर से आस्रव को रोकूँ, निर्जरा सुरभि महके पल-पल।
मैं धूप चढाकर अब आठों कर्मों का हनन करूँ स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी ।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज आत्मतत्त्व का मनन करूँ, चिंतवन करूँ निज चेतन का,
दो श्रद्धा-ज्ञान-चरित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का।
उत्तम फल चरण चढाता हूँ, निर्वाण महा फल हो स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ,
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ।
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद दो स्वामी,
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, निज ध्यान लीन गुणमय अपार,
अष्टादश दोष रहित जिनवर, अर्हन्त देव को नमस्कार।

अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार,
जय अजर अमर हे मुक्तिकंत, भगवंत सिद्ध को नमस्कार।

छत्तीस सुगुण से तुम मण्डित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार,
हे मुक्ति वधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार।

एकादश अंग पूर्व चौदह के, पाठी गुण पच्चीस धार,
बाह्यान्तर मुनि मुद्रा महान, श्री उपाध्याय को नमस्कार।

व्रत समिति गुप्ति चारित्र धर्म, वैराग्य भावना हृदय धार,
हे द्रव्य-भाव संयममय मुनिवर, सर्व साधु को नमस्कार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु पुण्य संयोग मिला नरतन, जिनश्रुतजिनदेवचरणदर्शन,
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे, तो सफल बने मानव जीवन।

निज-पर का भेद जानकर मैं, निज को ही निज में लीन करूँ,
अब भेदज्ञान के द्वारा मैं, निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ।

निज में रत्नत्रय धारण कर, निज परिणति को ही पहचानूँ,
पर-परिणति से हो विमुख सदा, निज ज्ञानतत्व को ही जानूँ।

जब ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता विकल्प तज, शुक्लध्यान मैं ध्याऊँगा,
तब चार घातिया क्षय करके, अर्हन्त महापद पाऊँगा।

है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु कब इसको पाऊँगा,
सम्यक् पूजा फल पाने को, अब निजस्वभाव में आऊँगा।

अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु, हे प्रभु मैंने की है पूजन,
तब तक चरणों में ध्यान रहे, जब तक न प्राप्त हो मुक्ति सदन।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मंगल रूप अमंगल हर, मंगलमय मंगल गान करूँ,
मंगल में प्रथम श्रेष्ठ मंगल, नवकार मन्त्र का ध्यान करूँ।
(इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चतुर्विंशति जिन पूजा

भव भोगों से होकर विरक्त, प्रभु हुए स्वयम् तुम आत्म मगन,
प्रगटा तब केवलज्ञान सूर्य फिर रहे नहीं विधि के बन्धन ।
तीर्थंकर हो जग त्राण किया तुमने पाया नव अभिनन्दन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर शत् शत् प्रणाम शत् शत् वंदन ।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिन समूह अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्राननम् ।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिन समूह अत्र मम सन्निहितो सन्निधिकरणम् ।

भव वन में भटक रहा भगवन भारी जीवन दुखदाई है,
कर दर्शन नाथ तुम्हारा यह मुझको मेरी सुधि आई है।
मिट जाये मेरा जन्म मरण जल से करता हूँ मैं अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण ।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यो जलम् ।

भवताप कहूँ क्या प्रभु तुमसे मुझसे न सहन अब होता है,
इसलिए शरण में आया हूँ तुम पूजन भव - दुख खोता है।
जग का सन्ताप मिटे मेरा चन्दन से करता हूँ अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः चन्दनं।

अक्षय न यहां कुछ वसुधा पर जो कुछ है सब क्षय हो जाता,
इस दुखसे बहुत व्यथित व्याकुल मैं त्राण नहीं किंचित पाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षय पद मैं अब पा जाऊं अक्षत से करता हूँ अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः अक्षतम्।

यह काम बडा बलशाली है तन-मन को आकुल कर देता,
विषयों के वश कर प्राणी को, उसकी सुबुद्धि को हर लेता।
तुम कामजयी हो इसीलिये पुष्पों से करता हूँ अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः पुष्पम्।

है क्षुधा जगत में महारोग जिसका न अन्त हो पाया है,
युग युग से इसके वश होकर मैंने अखाद्य सब खाया है।
तुम इस पर विजयी हुए नाथ नैवेद्य चढा करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः नैवेद्यम्।

कुछ सरल बात है नहीं मोह-तम प्राणों से यह कढ जाये,
तुमसा वैरागी बनकर ही अपने स्वरूप को पा पाये।
तुम वीतराग हो निर्मोही मैं दीपक से करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः दीपम्।

यह कर्मों की माया सारी भव भव में इसने भरमाया,
योग मिला मुझको मैं शरण तुम्हारी हूँ आया।
तुमने कर्मों को जीत लिया मैं धूप चढा करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः धूपम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन की उलझन ने मुझ को उलझन में इतना उलझाया,
सुलझा न सका उसको अबतक कब शिवफल तुमसा प्रभु पाया।
तुम मुक्त हुये इस उलझन से फल से करता हूं मैं अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः फलम्।

मिट जाये मेरा जन्म मरण सन्ताप न हो अक्षय पद हो,
निष्काम रहूँ न बुभुक्षा हो ना मोह न यह विधि भयप्रद हो।
बन जाऊं जीवनमुक्त नाथ यह अर्घ्य चढा करता अर्चन,
ऋषभादि चतुर्विंशति जिनवर आदर्श रहो मेरे प्रतिक्षण।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाला

मैं उर में लेकर भक्ति भाव हे प्रभुवर करता हूँ प्रणाम,
मिथ्या तम से मैं दूर रहूँ बन जाऊं सम्यक् ज्योति-धाम।
तुम दर्शन पूजन से भगवन हो जाये निज दर्शन ललाम,
तुमसा बन जाऊं .इसीलिए करता हूँ मैं सादर प्रणाम ।
हे ऋषभनाथ हे आदिनाथ मुझ पर अब तो करुणा कर दो,
प्रभु अजितनाथ मेरे उर का चिरसंचित सब संशय हर दो।
संभव जिन मुझ पर हो दयालु सब काम असंभव बन जाये,
भज अभिनन्दन प्रभु को निशि दिन नव जीवन अभिनंदन पाये।
श्री सुमति सुमति मेरी करदो मिथ्या मति हो न कभी मेरी,
भव पार करो प्रभु पद्म प्रभु अब और न हो पाये देरी ।
भगवन सुपार्श्व मेरे भव के सब पाश नाश कर दो सत्वर ,
चन्द्रप्रभु मेरे इस उर का सब शाप ताप हरलो अघहर।
श्री सुविधिनाथ दो सुविधि बता मेरे टूटें सब विधि बन्धन ,
सन्तप्त हृदय शीतल कर दो शीतल जिन मेरा सुन क्रंदन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे श्रेयनाथ दो मुझे श्रेय भव बाधा का करदूँ भंजन,
मेरे उर के दृग खुल जाये हे वासुपूज्य दो वह अंजन।
श्री विमल विमल पद दो मुझको युग युग से भूला भटका हूँ,
करदो अनंत सब कष्ट अन्त भव भव में आ आ अटका हूँ।
पथ धर्मनाथ अब बतलादो शाश्वत सुख मुझको मिल जाये,
प्रभु शान्तिनाथ मेरे आकुल उर में सुखशान्ती छा जाये।
हे कुन्थुनाथ होकर कृपालु मुझ पर भी तनिक कृपा कर दो,
श्री अरहनाथ अब तो मेरे वसु अरि का बल विक्रम हरदो।
मेरे मन से यह मोह मल्ल हे मल्लिनाथ अब दूर करो,
मुनिसुव्रतनाथ सुनो विनंती तृष्णा मेरी चकचूर करो।
नमिनाथ तुम्हारे चरणों में मैं नमन कर रहा दुखियारा,
हे नेमिनाथ अब बांह गहो उद्धार करो मैं हूं हारा।
तुम नाथ अनाथों के अपने हो पारसनाथ सुनो मेरी,
शिवधाम मुझे दो वर्धमान मेटो मेरी भव भव फेरी।
'कुमरेश' तुम्हारा दास प्रभो अब तो मुझ पर करूणा कर दो,
बन जाए यह जीवन सुखमय मुझको प्रभुवर ऐसा वर दो।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि - चतुर्विंशति - जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यम्।

प्रेरणा

जो भक्ति भाव से प्रेरित हो पूजन करता है जिनवर की,
उसको सुधि आ जाती अपनी ममता नहिं रहती है पर की।
जग का जंजाल न भाता हैं तृष्णा मिट जाती है उर की,
कर्मों के बन्धन हों ढीले मिल जाय राह भी शिवपुर की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શ્રી આદિનાથ જિન પૂજા

કર્મભૂમિકી આદિ રિષભ જિનવર ભયે,
ધર્મપંથ દરશાય સકલ જગ સુખ દયે;
તિનકે પદ ઉર ધ્યાઇ હરષ મનમેં ધરું ,
અત્ર તિષ્ઠ જિનરાજ ચરણ પૂજા કરું .

ઓઁ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્ર! અત્ર અવતર સંવૌષટ.

ઓઁ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્ર! અત્ર તિષ્ઠ ઠઃ ઠઃ સ્થાપનં

ઓઁ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્ર! અત્ર મમ સન્નિહિતો ભવ વષટ્

પરમ પાવન ઉજ્જવલ લાયકે, જલ જિનેશ્વર ચરણ ચઢાયકે;
જનમ મરણ ત્રિદોષ સબૈ હરું, રિષભદેવ ચરન પૂજા કરું.

ઓઁ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય જન્મજરામૃત્યુવિનાશનાય જલં....

સરસ ચંદન ગંધ સુહાવનો, પરમ શીતલ ગુણ મન ભાવનો;
જન્મતાપ તૃષાદુઃખકો હરું, રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.

ઓઁ હ્રી શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય ભવતાપવિનાશનાય ચંદનં....

શરદ ઇન્દુ સમાન સુહાવનો, અમલ અક્ષત સ્વચ્છ પ્રભાવનો;
સહજ રુપ સુધી રમણી વરું, રિષભદેવ ચરનપુજા કરું.

ઓઁ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય અક્ષયપદ પ્રાપ્તયે અક્ષતં....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કુસુમરત્ન સુવર્ણમઇ કરો, કનક ભાજનમેં બહુતે ભરૂં;
મદનબાન મહા દુઃખકો હરું, રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.
ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય કામબાણવિધ્વંસનાય પુષ્પં....

સરસ મોહન પાવક લીજિયે, ચરુ અનેક પ્રકાર સુકીજિયે;
અસદવેદ્ય ક્ષુધા દુઃખકો હરું, રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.
ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય ક્ષુધારોગવિનાશનાય નૈવેદ્યં....

રતનદીપ અમોલક લીજિયે, નિજ સુયોગ્ય મનોહર કીજિયે;
અતુલ મોહમહાતમ કો હરું રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.
ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય મોહાંધકારવિનાશનાય દીપં ....

સરસ ધૂપ સુગંધ સુહાવની, અગર આદિક દ્રવ્ય સુપાવની;
ધૂપ ખેય દુખદ વિધિકો હરું, રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.
ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય અષ્ટકર્મદહનાય ધૂપં....

સરસ મિષ્ટ ફલાવલિ લીજિયે, ચરણ જિનવર ભેટ કરીજિયે;
સહજ રૂપ સુધી રમણી વરું, રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.
ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય મોક્ષફલપ્રાપ્તયે ફલં....

જલફલાદિક દ્રવ્ય મિલાયકે, કનકથાલ સુ અર્ઘ બનાયકે;
નિજ સ્વભાવ અરી વિધિકો હરું, રિષભદેવ ચરનપૂજા કરું.
ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય અનર્ઘ્યપદપ્રાપ્તયે અર્ઘં...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

પંચકલ્યાણક

અષાઢ વદી દ્વિતીયા જાન, તજો સરવારથસિદ્ધિ વિમાન;
ભયૌ ગરભાગમ મંગલ સોય, નમૂં જિનકો નિત હર્ષિત હોય.

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय अषाढवदीद्वितीयायां गर्भ कल्याणकप्राप्ताय अर्घं....

સુચૈત વદી નવમી દિન જાન, ભયૌ શુભ તા દિન જન્મકલ્યાન;
સરાસુર ઈંદ્ર શચીજુત આય, કરૌ ગિરશીસ મહોત્સવ જાય.

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय चैत्रवदीनवम्यां जन्मकल्याणक-प्राप्ताय अर्घं.....

વદી નવમી શુભ ચૈત બતાય, પ્રભુ ઢિંગ દેવ રિષીશ્વર આય;
કરી બહુ ભક્તિ નવાય સુભાલ , લયૌ તપ તાદિન શ્રી જિન હાલ.

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय चैत्रवदीनवम्यां तपकल्याणक प्राप्ताय अर्घं.....

વદી શુભ ગ્યારસ ફાલ્ગુન જાન, સુ તાદિન ઘાતિ હને ભગવાન;
કરૌ વર કેવલજ્ઞાનપ્રકાશ, હરો જગકો ભ્રમ મોહવિલાસ.

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय फाल्गुनवदी एकादशम्यां ज्ञान कल्याणकप्राप्ताय अर्घं....

વદી શુભ માઘ ચતુર્દસિ જાન, લયૌ પ્રભુને શિવથાન મહાન;
કરૌ બહુ ઉત્સવ ઈંદ્ર નરેંદ્ર ભરૌ મમ આશ સદા જિનચંદ્ર.

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेंद्राय महावदी चतुर्दस्यां मे।क्षमंगल- प्राप्ताय अर्घं.....

જયમાલા

આદિ ધર્મ કરતા પ્રભુ, આદિ બ્રહ્મ જગદીશ;
તીર્થંકર પદ જિહિ લયૌ, પ્રથમ નવાઊં શીશ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

નમો દેવ દેવેન્દ્ર તુમ ચર્ણ ધ્યાવૈ,
નમો દેવ ઇન્દ્રાદિ સેવક રહાવૈ;
નમો દેવ તુમકો તુમ્હી સુખદાતા,
નમો દેવ મેરી હરો દુખ અસાતા. (1)

તુમ્હી બ્રહ્મરૂપી સુબ્રહ્મા કહાવૌ,
તુમ્હી વિષ્ણુ સ્વામી ચરાચર લખાવો;
તુમ્હી દેવ જગદીશ સર્વજ્ઞ નામી,
તુમ્હી દેવ તીર્થેશ નામી અકામી. (2)

સુશંકર તુમ્હી હો તુમ્હી સુખકારી,
સુજન્માદિ ત્રયપુર તુમ્હી હો વિદારી;
ધરૈં ધ્યાન જો જીવ જગકે મઝારી,
કરૈં નાસ વિધિકો લહૈં જ્ઞાન ભારી. (3)

સ્વયંભૂ તુમ્હી હો મહાદેવ નામી,
મહેશ્વર તુમ્હી હો તુમ્હી લોકસ્વામી;
તુમ્હેં ધ્યાનમેં જો લખેં પુન્યવંતા,
વહી મુક્તિકો રાજ વિલસૈં અનંતા. (4)

તુમ્હી હો વિધાતા તુમ્હી નંદદાતા,
નમૈ જો તુમ્હેં સો સદાનંદ પાતા;
હરો કર્મ કે ફંદ દુઃખકંદ મેરે,
નિજાનંદ દીજૈ નમો ચર્ણ તેરે. (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

મહા મોહકો મારી નિજ રાજ લીનૌ;
મહાજ્ઞાનકો ધારી શિવવાસ કીનૌ;
સુનો અર્જ મેરી રિષભદેવ સ્વામી,
મુજ વાસ નિજ પાસ દીજે સુધામી. (૭)

નાભિરાય મરુદેવી સુત, સદા તુમ્હારી આસ;
મનવચકાય લગાયકે, નમેં જિનેશ્વરદાસ.

ૐ હ્રીં શ્રી આદિનાથ જિનેંદ્રાય મહાઅર્ઘં નિર્વપામીતિ સ્વાહા.

વર્તમાન જિનરાય ભરત કે જાનિયે,
પંચકલ્યાનક ધારી ગયે શિવ થાનિયે;
જો નર મનવચકાય પ્રભુ પૂજૈ સહી,
સો નર દિવસુખ પાય લહૈ અષ્ટમ મહી.
।। ઈત્યાશીર્વાદઃ । પુષ્પાંજલિ ક્ષિપેત્ ।।

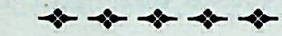

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री महावीर पूजन

जो मोह माया मान मत्सर, मदन मर्दन वीर हैं,
जो विपुल विघ्नों बीच में भी, ध्यान धारण धीर हैं।
जो तरण-तारण भव-निवारण, भव - जलधि के तीर हैं,
वे वन्दनीय जिनेश, तीर्थंकर स्वयं महावीर हैं।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर - अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ - तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव- भव वषट्।

जिनके गुणों का स्तवन पावन करन अम्लान है,
मल-हरन निर्मल- करन भागीरथी नीर-समान है।
संतप्त - मानस शान्त हों जिनके गुणों के गान में,
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिपटे रहें विषधर तदपि - चन्दन विटप निर्विष रहें,
त्यों शान्त शीतल ही रहो-रिपु विघन कितने ही करें।
॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-ज्ञान-दर्शन-वीर जिन अक्षत समान अखण्ड हैं,
हैं शान्त यद्यपि तदपि जो दिनकर समान प्रचण्ड हैं।
॥सन्तप्त॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिभुवनजयी अविजित कुसुमसर सुभट मारन सूर हैं,
पर-गन्ध से विरहित तदपि निज-गन्ध से भरपूर हैं।
।।सन्तप्त।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यदि भूख हो तो विविध व्यंजन मिष्ट इष्ट प्रतीत हों,
तुम क्षुधा - बाधा रहित जिन ! क्यों तुम्हें उनसे प्रीति हो ?
।।सन्तप्त।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

युगपद् विशद् सकलार्थ झलकें नित्य केवलज्ञान में,
त्रैलोक्य-दीपक वीर - जिन दीपक चढाऊं क्या तुम्हें।
।।सन्तप्त।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो कर्म ईन्धन दहन पावक पुंज पवन समान हैं,
जो हैं अमेय प्रमेय पूरण ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान हैं।
।।सन्तप्त।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सारा जगत फल भोगता नित पुण्य एवं पाप का,
सब त्याग समरस निरत जिनवर सफ़ल जीवन आपका।
।। सन्तप्त।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अनर्घ्य पद के सामने ?
उस परम-पद को पा लिया हे पतितपावन आपने।
।।सन्तप्त।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याणक अर्घ्य

सित छठवीं आषाढ, माँ त्रिशला के गर्भ में,
अन्तिम गर्भावास, यही जान प्रणमूं प्रभो।

ॐ ह्रीं श्री आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तेरस दिन सित चैत, अन्तिम जन्म लियो प्रभू,
नृप सिद्धार्थ निकेत, इन्द्र आय उत्सव कियो।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दशमी मंगसिर कृष्ण, वर्द्धमान दीक्षा धरी,
कर्म कालिमा नष्ट, करने आत्मरथी बने।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सित दशमी बैसाख, पायो केवलज्ञान जिन,
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य, प्रभुपद पूजा करें हम।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कार्तिक मावस श्याम, पायो प्रभु निर्वाण तुम,
पावा तीरथधाम, दीपावली मनाँय हम।

ॐ ह्रीं कार्तिकृष्णअमावस्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखे असि-तीर,
परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर।

हे मोह-महादलदलन वीर, दुद्धर - तप संयम धरण धीर,
तुम हो अनन्त आनन्दकन्द, तुम रहित सर्व जग दंद-फंद।

अघकरन करन-मन हरन-हार, सुखकरन हरन भवदुख अपार,
सिद्धार्थ तनय तन रहित देव,सुर -नर-किन्नर सब करत सेव।

मतिज्ञान रहित सन्मति जिनेश, तुम राग-द्वेष जीते अशेष ,
शुभ-अशुभ राग की आग त्याग, हो गये स्वयं तुम वीतराग।

षट् द्रव्य और उनके विशेष, तुम जानत हो प्रभुवर अशेष ,
सर्वज्ञ-वीतरागी जिनेश, जो तुम को पहिचाने विशेष ।

वे पहिचानें अपना स्वभाव, वे करें मोह-रिपु का अभाव ,
वे प्रगट करें निज-पर विवेक, वे ध्यावें निज शुद्धात्म एक ।

निज आतम में ही रहें लीन, चारित्र-मोह को करें क्षीण ,
उनका हो जावे क्षीण राग, वे भी हो जावें वीतराग ।

निज आतम में ही रहें लीन, चारित्र-मोह को करें क्षीण,
उनका हो जावे क्षीण राग, वे भी हो जावें वीतराग।

जो हुए आज तक अरीहंत, सबने अपनाया यहीं पंथ,
उपदेश दिया इस ही प्रकार, हो सबको मेरा नमस्कार ।

जो तुमको नहिं जाने जिनेश, वे पावें भव-भ्रमण क्लेश,
वे माँगे तुमसे धन - समाज, वैभव पुत्रादिक राज - काज ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनको तुम त्यागे तुच्छ जान, वे उन्हे मानते हैं महान,
उनमें ही निशदिन रहें लीन, वे पुण्य - पाप में ही प्रवीन ।

प्रभु पुण्य - पाप से पार आप, बिन पहिचाने पावें संताप,
संतापहरण सुखकरण सार, शुध्दात्मस्वरूपी समयसार ।

तुम समयसार हम समयसार, सम्पूर्ण आत्मा समयसार ,
जो पहिचानें अपना स्वरूप, वे हो जावें परमात्मरूप ।

उनके ना कोई रहे चाह, वे अपना लेवें मोक्ष राह ,
वे करें आत्मा को प्रसिद्ध, वे अल्पकाल में होय सिद्ध ।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा ।

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान,
वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

छिद्रमय हो नाव डगमग चल रही मझधार में ,
दुर्भाग्य से जो पड गई दुर्दैव के अधिकार में,
तब शरण होगा कौन जब नाविक डुबा दे धार में,
संयोग सब अशरण शरण कोई नहीं संसार में ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी,
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा,
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ,
पंचमेरु - नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा,
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिव गेह के।
जल गंधाक्षत पुष्पचरु, दीप धूप फल लाय,
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं श्री अर्हन्तसिद्धचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो द्वादशांगजिनवाणीभ्यो उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो, सम्यग्दर्शनज्ञान, चारित्रेभ्यो त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो, पन्चमेरौ अशीति चैत्यालयेभ्यो नन्दीश्वर द्वीपस्थद्वीपंचाशज्जिनालयेभ्यो श्री सम्मेदशिखर, गिरनारगिरी कैलाशगिरी, चम्पापुर, पावापुर आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो, अतिशयक्षेत्रेभ्यो सीमंधरादि विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो ऋषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भगवज्जिन सहस्राष्ट नामेभ्येश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्ति - पाठ

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी,
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजें।
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी,
इन्द्र-नरेंद्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा,
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं शिर नाई,
परम शांति दीजे हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघ को।

पूजैं जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके,
इंद्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत् प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को,
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।
होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा,
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहै, व्याधियों का अंदेशा।
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज,
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का,
सद् वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ,
तौलौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौं लौं न पाऊँ।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणो में,
तबलौं लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति-पद मैने।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे,
क्षमा करो प्रभुसो सब, करुणाकरिपुनि छुडाहु भव-दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ-तव चरण-शरण बलिहारी,
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

(क्षमापन)

बिन जाने वा जान के रही टूट जो कोय,
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।
पूजन - विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान,
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव,
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलोचना पाठ

बंदौ पाँचों परम - गुरु, चौबीसों जिनराज,
करुँ शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज । (1)

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी,
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम सरण लही जिनराज। (2)

इक बे ते चउ इन्द्री वा, मनरहित सहित जे जीवा,
तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वैं घात विचारी। (3)

समरंभ समारंभ आरंभ, मन वच तन कीने प्रारंभ,
कृत कारित मोदन करिकैं, क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं। (4)

शत आठ जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परि छेदनतैं,
तिनकी कहुं कोलों कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी। (5)

विपरीत एकांत विनयके, संशय अज्ञान कुनयके,
वस होय घोर अघ कीने, बचतैं नहिं जाय कहीने । (6)

कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदयाकरि भीनी,
या विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुँगति मधि दोष उपायो । (7)

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर-वनितासों दृग जोरी,
आरंभ परिग्रह भीनो, पन पाप जु या विधि कीनो । (8)

सपरस रसना घ्राननको, चखु कान विषय-सेवनको,
बहु करम किये मनमाने, कछु न्याय अन्याय न जाने । (9)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फल पंच उंदबर खाये, मधु मांस मद्य चित चाहे,
नहिं अष्ट मूलगुण धारी, विसनन सेये दुखकारी। (10)

दुइबीस अभख जिन खाये, सो भी निस दिन भुंजाये,
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों करि उदर भरायो। (11)

अनंतानु जु बंधी जानों, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो,
संज्वलन चौकरी गुनिये, सब भेद जु षोडश सुनिये। (12)

परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संयोग,
पनवीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम। (13)

निद्रावश शयन कराई, सुपने मधि दोष लगाई,
फिर जागि विषय-बन धायो, नानाविध विष-फल खायो। (14)

आहार विहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा,
बिन देखी धरी उठाई, बिन शोधी वस्तु जु खाई। (15)

तब ही परमाद सतायो, बहुविधि विकलप उपजायो,
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गयी है। (16)

मरजादा तुम ढिंग लीनी, ताहूँ में दोष जु कीनी,
भिन्न भिन्न अब कैसें कहिये, तुम ज्ञानविषैं सब पइये। (17)

हा हा ! मैं दुठ अपराधी, त्रस - जीवन - राशि विराधी,
थावर की जतन न कीनी, उरमें करुणा नहिं लीनी । (18)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जांगा चिनाई,
बिन गाल्यो पुनि जल ढोल्यो, पंखातैं पवन विलोल्यो। (19)

हा हा! मैं अदयाचारी, बहु हरितकाय जु विदारी,
तामधि जीवनके खंदा, हम खाये धरि आनंदा। (20)

हा हा! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई,
तामधि जे जीव जु आये, ते हू परलोक सिधाये। (21)

बीध्यो अन राति पिसायो, ईंधन बिन सोधि ज़लायो,
झाडू ले जाँगा बुहारी, चिंवटी आदिक जीव बिदारी। (22)

जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी,
नहिं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई। (23)

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि-कुल बहु घात करायो,
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये। (24)

अन्नादिक शोध कराई, तामैं जु जीव निसराई,
तिनका नहीं जतन कराया, गलियारैं धूप डराया। (25)

पुनि द्रव्य कमावन काज, बहु आरंभ हिंसा साज,
किये तिसनावश अघ भारी, करुना नहिं रंच विचारी। (26)

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवंता,
संतति चिरकाल उपाई, वानी तैं कहिय न जाई। (27)

ताको जो उदय अब आयो, नानाविध मोहि सतायो,
फल भुंजत जिय दुख पावै, बचतैं कैसें करि गावै। (28)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम जानत केवलज्ञानी, दुख दूर करो शिवथानी,
हम तो तुम शरण लही हैं, जिन तारन विरद सही है । (29)

जो गांवपती इक होवे, सो भी दुखिया दुख खोवै,
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेट्हु अंतरजामी । (30)

द्रौपदीको चीर बढायो, सीता प्रति कमल रचायो,
अंजन से किये अकामी, दुख मेट्यो अंतरजामी। (31)

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद सम्हारो,
सब दोषरहित करि स्वामी, दुख मेटहु अंतरजामी। (32)

इद्रांदिक पद नहिं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ,
रागादिक दोष हरीजै, परमातम निज-पद दीजै। (33)

दोषरहित जिनदेवजी, निजपद दीज्यो मोय,
सब जीवन के सुख बढ़े, आनंद मंगल होय। (34)

अनुभव माणिक पारखी, 'जौहरी' आप जिनंद,
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरन आनन्द। (35)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाधिमरण पाठ

वन्दौ श्री अरंहत परमगुरु, जो सबको सुखदाई,
इस जग में दुःख जो मैं भुगते, सो तुम जानो राई,
अब मैं अरज करुँ प्रभु तुमसे, कर समाधि उर मांही,
अन्त समय में यह वर मांगूँ, सो दीजे जग राई। (1)

भव-भव में तन धार नये मैं, भव-भव शुभ संग पायो,
भव-भव में नृप रिद्धि लई मैं, मात पिता सुत थायो,
भव-भव में तन पुरुष-तनों धर, नारी हूँ तन लीनों,
भव-भव में मैं भयो नपुंसक, आतमगुण नहीं चीनों। (2)

भव-भव में सुरपदवी पाई, ताके सुख अति भोगे,
भव-भव में गति नरकतनी धर, दुःख पाये विधि योगे,
भव-भव में तिर्यंच योनि धर, पायो दुःख अति भारी,
भव-भव में साधर्मी जन को, संग मिल्यो हितकारी। (3)

भव-भव में जिनपूजन कीनी, दान सुपात्रहिं दीनो,
भव-भव में मैं समवसरण में, देख्यो जिनगुण भीनो,
एती वस्तु मिली भव-भव में, सम्यकगुण नहिं पायो,
ना समाधियुत मरण कियो मैं, तातैं जग भरमायो। (4)

काल अनादि भयो जग भ्रमतैं, सदा कुमरणहिं कीनों,
एकबार हूँ सम्यकयुत मैं, निज आतम नहिं चीनों,
जो निजपरको ज्ञान होय तो, मरण समय दुःख काँई,
देह विनासी मैं निजभासी, शांति स्वरुप सदाई। (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयकषायन के वश होकर, देह आपनो जान्यो,
कर मिथ्या सरधान हिये विच, आतम नाहिं पिछान्यो,
यों कलेश हिय धार मरणकर, चारों गति भरमायो,
सम्यकदर्शन - ज्ञान - चरन ये, हिरदे में नहिं लायो। (6)

अब या अरज करुँ प्रभु सुनिये, मरण समय यह मांगों,
रोग जनित पीडा मत होवो, अरु कषाय मत जागो,
ये मुझ मरणसमय दुःखदाता, इन हर साता कीनै,
जो समाधियुत मरण होय मुझ, अरु मिथ्यामद छीजै। (7)

यह तन सात कुधातमई है, देखत ही घिन आवै,
चर्म लपेटी ऊपर सोंहै, भीतर विष्टा पावै,
अतिदुर्गन्ध अपावनसों यह, मूरख प्रीति बढ़ावै,
देह विनासी, जिय अविनासी नित्यस्वरुप कहावै। (8)

यह तन जीर्ण कुटीसम आतम, यातैं प्रीति न कीजैं,
नूतन महल मिलै जब भाई, तब यामैं क्या छीजै,
मृत्यु होन से हानि कौन है, याको भय मत लावो,
समता से जो देह तजोगे, तो शुभ तन तुम पावो। (9)

मृत्यु मित्र उपकारी तेरो, इस अवसर के मांही,
जीरन तन से देत नयो यह, या सम साहू नाहीं,
या सेती इस मृत्यु समय पर, उत्सव अति ही कीजै,
क्लेशभाव को त्याग सयाने समताभाव धरीजै। (10)

जो तुम पूरब पुण्य किये हैं, तिनको फल सुखदाई,
मृत्यु मित्र बिन कौन दिखावै, स्वर्ग सम्पदा भाई,
राग द्वेष को छोड़ सयाने, सात व्यसन दुःखदाई,
अन्त समय में समता धारो, परभव पन्थ सहाई। (11)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्म महादुठ बैरी मेरो, तासेती दुःख पावै,
तन पिंजर में बन्द कियो मोहि, यासों कौन छुडावै,
भूख तृषा दुःख़ आदि अनेकन, इस ही तन में गाढैं,
मृत्युराज अब आय दयाकर, तनपिंजरसें काढै। (12)

नाना वस्त्राभूषण मैंने, इस तनको पहराये,
गन्ध सुगन्धित अतर लगाये, षठरस असन कराये,
रात दिना मैं दास होयकर, सेव करी तनकेरी,
सो तन मेरे काम न आयो, भूल रह्यो निधि मेरी। (13)

मृत्युराय को शरन पाय तन, नूतन ऐसो पाऊँ,
जामैं सम्यकरतन तीन लहि आठों कर्म खपाऊँ,
देखो तन सम और कृतघ्नी, नाहिं सु या जगमाहिं,
मृत्यु समय में ये ही परिजन, सब ही हैं दुःखदाई। (14)

यह सब मोह बढावन हारे, जियको दुर्गतिदाता,
इनसे ममत निवारो जि़यरा, जो चाहो सुख साता,
मृत्यु कल्पद्रुम पाय सयाने, मांगो इच्छा जेती,
समता धरकर मृत्यु करो; तो पावो संपति तेती। (15)

चौ आराधन सहित प्राण तज, तौ ये पदवी पावो,
हरि प्रतिहरि चक्री तीर्थेश्वर, स्वर्ग मुक्ति में जावो,
मृत्यु कल्पद्रुम सम नहि दाता, तीनों लोक मझारै,
ताको पाय कलेश करो मत, जन्म जवाहर हारे। (16)

इस तनमें क्या राचै जियरा, दिन-दिन जीरन हो है,
तेजकांति बल नित्य घटत है, या सम अथिर सु को है,
पांचों इन्द्री शिथिल भई अब, स्वास शुद्ध नहिं आवै,
तापर भी ममता नहिं छोडें, समता उर नहिं लावै। (17)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मृत्युराज उपकारी जियको, तनसों तोहि छुडावै,
नातर या तनबन्दीग्रह में, पर्‌यो - पर्‌यो बिललावै,
पुद्‌गल के परमाणु मिलकर पिण्डरुप तन भासी,
याही मूरत मैं अमूरती, ज्ञान ज्योति गुणखासी। (18)

रोग-शोक आदिक जो वेदन, ते सब पुद्‌गल लारै,
मैं तो चेतन व्याधि बिना नित, हैं सो भाव हमारे,
या तनसों इस क्षेत्र सम्बन्धी, कारण आन बन्यो है,
खान पान दे याको पोष्यो अब सम भाव ठन्यो है। (19)

मिथ्यादर्शन आत्मज्ञान बिन, यह तन अपनो जान्यो,
इन्द्रीभोग गिने सुख मैने, आपो नाहिं पिछान्यो,
तन विनशनतैं नाश जानि निज, यह अयान दुःखदाई,
कुटुम्ब आदि को अपनो जान्यो, भूल अनादी छाई। (20)

अब निज भेद जथारथ समझ्यो, मैं हूँ ज्योतिस्वरुपी,
उपजैं विनसै सो यह पुद्‌गल, जान्यो याको रूपी,
इष्टऽनिष्ट जेते सुख दुःख हैं, सो सब पुद्‌गल सागै,
मैं जब अपनो रुप विचारो, तब वे सब दुःख भागैं। (21)

बिन समता तनऽनंत धरे मैं, तिन में ये दुःख पायो,
शस्त्रघाततैंऽनन्त बार मर, नाना योनि भ्रमायो,
बार अनन्तहि अग्नि माहिं जर, मूवो सुमति न लायो,
सिंह व्याघ्र अहिऽनन्त बार मुझ, नाना दुःख दिखायो। (22)

बिन समाधि ये दुःख लहे मैं, अब उर समता आई,
मृत्युराजको भय नहिं मानो, देवै तन सुखदाई,
यातैं जब लग मृत्यु न आवै तब लग जप तप कीजै,
जप तप बिन इस जग के माहीं, कोई कभी ना सीजै। (23)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्ग सम्पदा तपसों पावै, तपसों कर्म नसावै,
तपही सों शिवकामिनिपति ह्वै, यासों तप चित लावै,
अब मैं जानी समता बिन मुझ, कोऊ नाहिं सहाई,
मात पिता सुत बांधव तिरिया, ये सब हैं दुःखदाई। (24)

मृत्यु समय में मोह करें ये, तातैं आरत हो है,
आरततैं गति नीची पावै, यों लख मोह तज्यो है,
और परीग्रह जेते जग में, तिनसों प्रीत न कीजे,
परभव में ये संग न चालैं नाहक आरत कीजे। (25)

जे-जे वस्तु लखत हैं ते पर, तिनसों नेह निवारो,
परगति में ये साथ न चालैं, ऐसो भाव विचारो,
जो परभवमें संग चलें तुझ, तिनसों प्रीत सु कीजै,
पंच पाप तज समता धारों, दान चार विध दीजै। (26)

दशलक्षणमय धर्म धरो उर, अनुकम्पा उर लावो,
षोडशकारण नित्य विचारो, द्वादश भावन भावो,
चारों परवी प्रोषध कीजै, अशन रात को त्यागो,
समता धर दुरभाव निवारो, संयमसों अनुरागो। (27)

अन्त समय में यह शुभ भावहि, होवैं आनि सहाई,
स्वर्ग मोक्षफल तोहि दिखावें, ऋद्धि देहिं अधिकाई,
खोटे भाव सकल जिय त्यागो, उर में समता लाकैं,
जा सेती गतिचार दूर कर, बसहु मोक्षपुर जाकैं। (28)

मन थिरता करकै तुम चिंतो, चौ आराधन भाई,
ये ही तोकों सुखकी दाता, और हितू कोउ नाहीं,
आगे बहु मुनिराज भये हैं, तिन गहि थिरता भारी,
बहु उपसर्ग सहे शुभ पावन, आराधन उरधारी। (29)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिनमें कछु इक नाम कहुँ मैं, सो सुन जिय चित्त लाकै,
भावसहित अनुमोदे तासों, दुर्गति होय न ताकै,
अरु समता निज उरमें आवैं, भाव अधीरज जावै,
यों निश दिन जो उन मुनिवरको, ध्यान हिये विचलावै। (30)

धन्य - धन्य सुकुमाल महामुनि, कैसे धीरज धारी,
एक श्यालनि जुग बच्चाजुत, पांव भख्यो दुःखकारी,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (31)

धन्य-धन्य जु सुकौशल स्वामी, व्याघ्रीने तन खायो,
तो भी श्रीमुनि नेक डिगे नहीं, आतम सो हितलायो,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (32)

देखो गजमुनिके शिर ऊपर, विप्र अगिनि बहु बारी,
शीश जलै जिम लकडी तिनको, तौ भी नाहिं चिंगारी,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (33)

सनतकुमार मुनि के तन में, कुष्ट वेदना व्यापी,
छिन्न-भिन्न तन तासों हूवो, तब चिन्त्यो गुण आपी,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (34)

श्रेणिक सुत गंगा में डूब्यो, तब जिननाम चिताऱ्यो,
धर सलेखना परिग्रह छोड्यो, शुद्ध भाव उर धाऱ्यो,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (35)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संमतभद्र मुनिवर के तन में क्षुधा वेदना आई,
तो दुःख में मुनि नेक न डिगियो चिन्त्यौ निजगुण भाई,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (36)

ललित घटादिक तीस दोय मुनि, कौशांबी तट जानो,
नदी में मुनि बहकर मूवे, सो दुःख उन नहिं मानो,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (37)

धर्मघोष मुनि चम्पानगरी, बाह्य ध्यान धर ठाड़ो,
एक मास की कर मर्यादा, तृषा दुःख सह गाढो,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (38)

श्रीदत्तमुनिको पूर्वजन्म को, बैरी देव सु आके,
विक्रिय कर दुःख शीततनो सो, सह्यो साध मन लाके,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (39)

वृषभसेन मुनि उष्ण शिलापर, ध्यान धर्‌यो मनलाई,
सूर्यधाम अरु उष्ण पवन की, वेदन सहि अधिकाई,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (40)

अभयघोषमुनि काकन्दीपुर, महावेदना पाई,
वैरी चण्डने सब तन छेद्यो, दुःख दीनो अधिकाई,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (41)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्युतचरने बहु दुःख पायो, तो भी धीर न त्यागी,
शुभभावनसों प्राण तजे निज, धन्य और बडभागी,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (42)

पुत्र चिलाती नामा मुनिको, बैरी ने तन घाता,
मोटे-मोटे कीट पडे तन, तापर निज गुण राता,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (43)

दण्डकनामा मुनिकी देही, बाणन कर अरि भेदी,
तापर नेक डिगे नहिं वे मुनि, कर्म महारिपु छेदी,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (44)

अभिनन्दन मुनि आदि पांचसौ, घानी पेलि जु मारे,
तो भी श्रीमुनि समताधारी, पूरबकर्म विचारे,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (45)

चाणक मुनि गौधर के माहीं, मून्द अगिनि परजाल्यो,
श्रीगुरु उर समभाव धारकै, अपनो रुप सम्हाल्यो,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (46)

सातशतक मुनिवर दुःख पायो, हथनापुर में जानो,
बलि ब्राह्मणकृत घोर उपद्रव, सो मुनिवर नहिं मानो,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (47)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोहमयी आभूषण धडके, ताते कर पहराये,
पांचों पांडव मुनिके तन में, तौ भी नाहिं चिगाये,
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चित धारी,
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव भारी। (48)

और अनेक भये इस जग में, समता - रस के स्वादी,
वे ही हमकों हों सुखदाता, हरिहैं टेव प्रमादी,
सम्यकदशर्न ज्ञान चरन तप, ये आराधन चारों,
ये ही मोकों सुखकी दाता, इन्हें सदा उर धारों। (49)

यों समाधि उरमाहीं लावो, अपनो हित जो चाहो,
तज ममता अरु आठों मदको ज्योतिस्वरुपी ध्यावो,
जो कोई नित करत पयानो, ग्रामांतरके काजै,
सो भी शकुन विचारै नीके, शुभके कारण साजै। (50)

मात पितादिक सर्व कुटुम सब, नीके शकुन बनावै,
हलदी धनिया पुंगी अक्षत, दूब दही फल लावै,
एक ग्राम जाने के कारण, करें शुभाशुभ सारे,
जब परगतिको करत पयानो, तब नहिं सोचों प्यारे। (51)

सर्वकुटुम्ब जब रोबन लागै, तोहि रुलावै सारे,
ये अपशकुन करै सुन तोकों, तू यों क्यों न विचारै,
अब परगतिको चालत बिरियाँ, धर्मध्यान उर आनो,
चारों आराधन आराधो, मोहतनों दुःख हानो। (52)

होय निःशल्य तजो सबदुविधा, आतम राम सुध्यावो,
जब परगति को करहु पयानो, परम तत्त्व उर लावो,
मोहजाल को काट पियारे, अपनो रुप विचारो,
मृत्यु मित्र उपकारी तेरो, यों निश्चय उर धारों। (53)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मृत्यु महोत्सव पाठकों, पढो सुनो बुधिवान,
सरधा धर नित सुख लहो, 'सूरचन्द' शिवथान,
पंच उभय नव एक नभ, सम्बत् सो सुखदाय,
आश्विन श्यामा सप्तमी, कह्यो पाठ मन लाय। (54)

श्री सिद्ध स्तुति

अविनाशी अविकार परम - रस - धाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
शुद्धबुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगत - शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो।

ध्यान अग्निकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजन देव स्वरूपी हवै रहे।
ज्ञायक के आकार ममत्व निवारकैं,
सो परमातम सिद्ध नमूँ सिर नायकैं ।

अविचल ज्ञान प्रकाशते, गुण अनन्त की खान,
ध्यान धरै सो पाइए, परम सिद्ध भगवान।

अविनाशी आनन्द मय, गुण पूरण भगवान,
शक्ति हिये परमात्मा, सकल पदारथ ज्ञान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाधिमरण स्वरुप

हे भव्य ! तू सुन ! अब समाधिमरण का लक्षण वर्णन किया जाता है। **"समाधि"** नाम निःकषाय का है, शान्त परिणामों का है, कषाय रहित शांत परिणामों से मरण होना **समाधिमरण** है। संक्षिप्त रुप से समाधिमरण का यही वर्णन है। विशेष रुप से कथन आगे किया जा रहा है।

सम्यक्ज्ञानी पुरुष का यह सहज स्वभाव ही है कि वह समाधिमरण ही की इच्छा करता है, उसकी हमेशा यही भावना रहती है, अन्त में मरण समय निकट आने पर वह इस प्रकार सावधान होता है कि जिस प्रकार वह सोया हुआ सिंह सावधान होता है जिसको कोई पुरुष ललकारे कि हे सिंह ! तुम्हारे पर बैरियों की फौझ आक्रमण कर रही है, तुम पुरुषार्थ करो और गुफा से बाहर निकलो। जब तक बैरियों का समूह दूर है तब तक तुम तैयार हो जाओ बैरियों की फौज को जीत लो। महान् पुरुषों की यही रीति है कि **वे शत्रु के जागृत होने से पहले तैयार होते हैं।**

उस पुरुष के ऐसे वचन सुनकर शार्दूल तत्क्षण ही उठा और उसने ऐसी गर्जना की कि मानो आषाढ मास में इन्द्र ने ही गर्जना की हो ! सिंह की गर्जना सुनकर बैरियों की फौज में जो हाथी, घोडे आदि थे वे सब कंपायमान हो गये और वे सिंह को जीतने में समर्थ नहीं हुए। हाथियों ने आगे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कदम रखना बन्द कर दिया उनके हदय में सिंह के आकार की छाप पड गई है इसलिये वे धैर्य नहीं धारण कर रहे, क्षण-क्षण में निहार करते हैं, उनसे सिंह के पराक्रम का मुकाबला नहीं किया जा सकता। (इस उदाहरण को अब सम्यक्ज्ञानी की अपेक्षा से बताते हैं) सम्यक्ज्ञानी पुरुष तो शार्दूलसिंह और अष्टकर्म बैरी है सम्यक्ज्ञानी रुपी सिंह मरण के समय इन अष्टकर्मरुपी बैरियों को जीतने के लिए विशेष रुप से उद्यम करता है।

मृत्यु को निकट जानकर सम्यक्ज्ञानी पुरुष सिंह की तरह सावधान होता है और कायरपने को दूर ही से छोड देता है।

अंजुली - जल सम जवानी क्षीण होती जा रही,
प्रत्येक पल जर्जर जरा नजदीक आती जा रही,
काल की काली घटा प्रत्येक क्षण मँडरा रही,
किन्तु पल-पल विषय-तृष्णा तरुण होती जा रही।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाधि-भावना

दिन रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ,
देहान्त के समय में, तुमको न भूल जाऊँ,
शत्रु अगर कोई हो, सन्तुष्ट उनको कर दूँ,
समता का भाव धर कर, सबसे क्षमा कराऊं । (1)

त्यागूँ अहार पानी, औषध विचार अवसर,
टूटे नियम न कोई, दृढता हृदय में लाऊँ। (2)

जागें नहीं कषायें, नहिं वेदना सतावे,
तुमसे ही लौ लगी हो, दुरध्यान को भगाऊं। (3)

आतम स्वरुप अथवा, आराधना विचारुँ,
अरहन्त सिद्ध साधू , रटना यही लगाऊं । (4)

धरमातमा निकट हों, चरचा धरम सुनावें,
वो सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊं । (5)

जीने की हो न वाँछा,मरने की हो न ख्वाइश,
परिवार मित्र जन से,मैं मोह को हटाऊं। (6)

भोगे जो भोग पहिले, उनका न होवे सुमरन,
मैं राज्य सम्पदा या, पद इन्द्र का न चाहूँ । (7)

रत्नत्रय का पालन, हो अन्त में समाधी,
'शिवराम' प्रार्थना यह , जीवन सफल बनाऊँ। (8)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સામાયિક - પાઠ

સૌ પ્રાણી આ સંસારનાં, સન્મિત્ર મુજ વહાલાં થજો,
સદ્‌ગુણમાં આનંદ માનું, મિત્ર કે વેરી હજો;
દુઃખીયા પ્રતિ કરુણા અને, દુશ્મન પ્રતિ મધ્યસ્થતા,
શુભ ભાવના પ્રભુ ચાર આ, પામો હૃદયમાં સ્થિરતા. (1)

અતિ જ્ઞાનવંત અનંત શકિત, દોષહીન આ આત્મ છે,
એ ધ્યાનથી તરવાર પેઠે, શરીરથી વિભિન્ન છે ;
હું શરીરથી જૂદો ગણું એ જ્ઞાનબળ મુજને મળો,
ને ભીષણ જે અજ્ઞાન મારું, નાથ ! તે સત્વર ટળો. (2)

સુખદુઃખમાં અરિમિત્રમાં, સંયોગ કે વિયોગમાં,
રખડું વને વા રાજભુવને, રાચતો સુખ ભોગમાં ;
મમ સર્વકાળે સર્વજીવમાં ; આત્મવત્ બુદ્ધિબધી,
તું આપજે મુજ મોહ કાપી, આ દશા કરુણાનિધિ ! (3)

તુજ ચરણકમળનો દીવડો, રૂડો હૃદયમાં રાખજો,
અજ્ઞાનમય અંધકારના, આવાસને તમે બાળજો;
તદ્‌રૂપ થઈ એ દિવડો, હું સ્થિર થઈ ચિત્ત બાંધતો,
તુજ ચરણયુગ્મની રજમહીં હું પ્રેમથી નિત્ય ડૂબતો. (4)

પ્રમાદથી પ્રયાણ કરીને, વિચરતાં પ્રભુ ! અહીં તહી,
એકેન્દ્રિયાદિ જીવને, હણતાં કદી ડરતો નહીં ;
છેદી વિભેદી દુઃખ દઇ મેં ત્રાસ આપ્યો તેમને,
કરજો ક્ષમા મુજ કર્મ હિંસક, નાથ ! વિનવું આપને. (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કષાયને પરવશ થઇ બહુ, વિષયસુખ મેં, ભોગવ્યા,
ચારિત્રના જે ભંગ વિભુ ! મુક્તિ-પ્રતિકૂળ થઇ ગયા;
કુબુદ્ધિથી અનિષ્ટ કિંચિત્, આચરણ મેં આદર્યું,
કરજો ક્ષમા સૌ પાપ તે, મુજ રંકનું જે જે થયું. (6)

મન વચન કાય કષાયથી કીધાં પ્રભુ ! મેં પાપ બહુ,
સંસારનાં દુઃખ - બીજ સૌ, વાવ્યાં અરે ! હું શું કરૂ ;
તે પાપને આલોચના, નિંદા અને ધિક્કારથી,
હું ભસ્મ કરતો, મંત્રથી, જેમ વિષ જાતું વાદીથી. (7)

મુજ બુદ્ધિના વિકારથી, કે સંયમના અભાવથી,
બહુ દુષ્ટ દુરાચાર મેં સેવ્યા પ્રભુ ! કુબુદ્ધિથી;
કરવું હતું તે ના કર્યું, પ્રમાદ કેરા જોરથી,
સૌ દોષ મુક્તિ પામવા, માગું ક્ષમા હું હૃદયથી. (8)

મુજ મલિન મન જો થાય તો, તે દોષ અતિક્રમ જાણતો,
વળી સદાચારે ભંગ બનતાં, દોષ વ્યતિક્રમ માનતો ;
અતિચારી તે તો જાણવો, જે વિષય - સુખમાં મ્હાલતો,
અતિ વિષયસુખ - આસકતને, હું અનાચારી ધારતો. (9)

મુજ વચન વાણી ઉચ્ચારમાં, તલભાર વિનિમય થાય તો,
જો અર્થ માત્રા પદ મહીં, લવલેશ વધઘટ થાય તો ;
યથાર્થ વાણી ભંગનો, દોષિત પ્રભુ ! હું આપનો,
આપી ક્ષમા મુજને બનાવો, પાત્ર કેવળ બોધનો. (10)

પ્રભુવાણી ! તું મંગલમયી, મુજ શારદા હું સમજતો,
વળી ઇષ્ટ વસ્તુ દાનમાં, ચિંતામણિ હું ધારતો;
સુબોધ ને પરિણામશુદ્ધિ, સંયમને વરસાવતી,
ગીત સુણાવી સ્વર્ગનાં, તું મોક્ષલક્ષ્મી અર્પતી. (11)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સ્મરણ કરે યોગીજનો, જેનું ઘણા સન્માનથી,
વળી ઈંદ્ર નર ને દેવ પણ, સ્તુતિ કરે જેની અતિ ;
એ વેદ ને પુરાણ જેના, ગાય ગીતો હર્ષમાં,
તે દેવના પણ દેવ વ્હાલા, સિદ્ધ વસજો હૃદયમાં. (12)

જેનું સ્વરૂપ સમજાય છે, સદ્જ્ઞાન-દર્શન-યોગથી,
ભંડાર છે આનંદના જે, અચળ છે વિકારથી ;
પરમાત્મની સંજ્ઞા થકી, ઓળખાય જે શુભધ્યાનમાં,
તે દેવના પણ દેવ વ્હાલા, સિદ્ધ વસજો હૃદયમાં. (13)

જે કઠિન કષ્ટો કાપતા, ક્ષણવારમાં સંસારનાં,
નિહાળતાં જે સૃષ્ટિને જેમ બોરને નિજ હસ્તમાં;
યોગીજનો ને ભાસતા જે સમજતા સૌ વાતમાં,
તે દેવના પણ દેવ વ્હાલા, સિદ્ધ વસજો હૃદયમાં. (14)

જન્મો મરણના દુઃખને, નહીં જણતાં કદી જે પ્રભુ,
જે મોક્ષપથ દાતાર છે, ત્રિલોકને જોતાં વિભુ ;
કલંકહિન દિવ્યરૂપ જે, રહેતું નથી પણ ચંદ્રમાં,
તે દેવના પણ દેવ વ્હાલા, સિદ્ધ વસજો હૃદયમાં. (15)

આ વિશ્વના સૌ પ્રાણી પર, શુદ્ધ પ્રેમ નિસ્પૃહ રાખતા,
નહિ રાગ કે નહિ દ્વેષ જેને, અસંગભાવે વર્તતા ;
વિશુદ્ધ ઇન્દ્રિયશૂન્ય જેવા, જ્ઞાનમય છે રૂપમાં,
તે દેવના પણ દેવ વ્હાલા, સિદ્ધ વસજો હૃદયમાં. (16)

ત્રિલોકમાં વ્યાપી રહ્યા છે, સિદ્ધિ ને વિબુદ્ધિ જે,
નહિ કર્મ કેરા બંધ જેને, ધૂર્ત સમ ધૂતી શકે;
વિકાર સૌ સળગી જતા, મન મસ્ત થાતાં ધ્યાનમાં,
તે દેવના પણ દેવ વ્હાલા, સિદ્ધ વસજો હૃદયમાં. (17)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

તિમિર કેરો સ્પર્શ તલભર, થાય નહિ જેમ સૂર્યને,
તેમ દુષ્કલંકો કર્મના, અડકી શકે નહિ આપને;
જે એક ને બહુરૂપ થઈ, વ્યાપી બધે વિરાજતો,
તેવા સુદેવ સમર્થનું, સાચું શરણ હું માંગતો. (18)

રવિતેજ વિણ પ્રકાશ જે, ત્રણ ભુવનને અજવાળતો,
તે જ્ઞાનદીપ-પ્રકાશ તારા, આત્મામાં શું દીપતો!
જે દેવ મંગળ બોધ મીઠા, મનુજને નિત્ય આપતો,
તેવા સુદેવ સમર્થનું, સાચું શરણ હું માગતો. (19)

જો થાય દર્શન સિદ્ધનાં, વિશ્વદર્શન થાય છે,
જેમ સૂર્યના દીવા થકી, સૌ સ્પષ્ટતઃ દેખાય છે;
અનંત અનાદિ દેવ જે, અજ્ઞાન-તિમિર ટાળતો,
તેવા સુદેવ સમર્થનું, સાચું શરણ હું માગતો. (20)

જેણે હણ્યા નિજ બળ વડે, મન્મથ અને વળી માનને,
જેણે હણ્યા આ લોકના, ભય શોક ચિંતા મોહને;
વિષાદ ને નિદ્રા હણ્યા, જયમ અગ્નિ વૃક્ષો બાળતો,
તેવા સુદેવ સમર્થનું, સાચું શરણ હું માગતો. (21)

હું માંગતો નથી કોઈ આસન, દર્ભ પત્થર કાષ્ટનું,
મુજ આત્મના નિર્વાણ કાજે, યોગ્ય આસન આત્મનું;
આ આત્મ જો વિશુદ્ધ ને, કષાય-દુષ્મન વિણ જો,
અમૂલ્ય આસન થાય છે, શુભ સાધવા સમાધિ તો. (22)

મેળા બધા મુજ સંઘના, નહિ લોકપૂજા કામની,
જગ બાહ્યની નહિ એક વસ્તુ, કામની મુજ ધ્યાનની;
સંસારની સૌ વાસનાને, છોડ વ્હાલા વેગથી,
અધ્યાત્મમાં આનંદ લેવા, યોગ્યબળ લે હોંશથી. (23)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

આ જગતની કો વસ્તુમાં તો સ્વાર્થ છે નહિ મુજ જરી,
વળી જગતની પણ વસ્તુઓનો, સ્વાર્થ મુજ માં છે નહીં;
આ તત્વને સમજી ભલા તું બાહ્યનો મોહ છોડજે,
શુભ મોક્ષના ફળ ચાખવા, નિજ આત્મમાં તું સ્થિર થજે. (24)

જ્ઞાનમય વિશુદ્ધ આત્મ, સ્વ-આત્મથી જોવાય છે,
શુભ યોગમાં સાધુ સકળને, આ અનુભવ થાયછે;
નિજ આત્મમાં એકાગ્રતા, સ્થિરતા વળી નિજ આત્મમાં,
અખંડ સુખને સાધવા તું, આત્મથી જો આત્મમાં. (25)

આ આત્મ મારો એક ને, શાશ્વત નિરંતર રૂપ છે,
વિશુદ્ધ નિજ સ્વભાવમાં, રમી રહ્યો છે નિત્ય તે ;
વિશ્વની સૌ વસ્તુનો, નિજ કર્મ ઉદ્‌ભવ થાય છે,
નિજ કર્મથી વળી વસ્તુનો, વિનાશ વિનિમય થાય છે. (26)

જે આત્મ જોડે એકતા, આવી નહીં આ દેહની,
તે એકતા શું આવશે, સ્ત્રી, પુત્ર, મિત્રો સાથની ?
જો થાય જૂદી ચામડી, આ શરીરથી ઉતારતાં,
તો રોમ સુંદર દેહ પર, પામે પછી શું સ્થિરતા ? (27)

આ વિશ્વની કો વસ્તુમાં, જો સ્નેહ બંધન થાય છે,
તો જન્મમરણના ચક્રમાં, ચેતન વધુ ભટકાય છે;
મુજ મન વચન ને કાયનો, સયોંગ પરનો છોડવો,
શુભ મોક્ષના અભિલાષનો, આ માર્ગ સાચો જાણવો. (28)

સંસારરૂપી સાગરે જે અવનતિમાં લઈ જતી,
તે વાસનાની જાળ પ્યારા, તોડ સંયમજોરથી;
વળી બાહ્યથી છે આત્મ જૂદો, ભેદ મોટો જાણવો,
તલ્લીન થઈ ભગવાનમાં, ભવપંથ વિકટ કાપવો. (29)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કર્મો કર્યાં જે આપણે, ભૂતકાળમાં જન્મો લઇ,
તે કર્મનું ફળ ભોગવ્યા વિણ, માર્ગ એકે છે નહિ;
પરનું કરેલું કર્મ જો, પરિણામ આપે મુજને,
તો મુજ કરેલાં કર્મનો, સમજાય નહિ કંઇ અર્થને. (30)

સંસારના સૌ પ્રાણીઓ, ફળ ભોગવે નિજ કર્મનું,
નિજ કર્મના પરિપાકનો ભોક્તા, નહિ કો આપણું;
લઇ શકે છે અન્ય તેને, છોડ એ ભ્રમણા બૂરી,
પ્રભુ-ધ્યાનમાં નિમગ્ન થા, તુજ આત્મનો આશ્રય કરી. (31)

શ્રી અમિતગતિ અગમ્ય પ્રભુજી ! ગુણ અસીમ છે આપના,
હૃદયથી આ દાસ તારો, ગુણ ગાય તુજ સામર્થ્યના;
પ્રગટતા જે ગુણ બધા, મુજ આત્મમાં સદ્‌ભાવથી,
શુભ મોક્ષને વરવા પછી, પ્રભુ ! વાર કયાંથી લાગતી ? (32)

બત્રીશ ચરણનું આ બન્યું, મંગળ સુંદર કાવ્ય;
અનુભવતાં એક ધ્યાનથી, મોક્ષગતિ જીવ જાય. (33)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

રત્નાકર પચ્ચીશી

મંદિર છો મુક્તિતણા, માંગલ્ય ક્રીડાના પ્રભુ!
ને ઇન્દ્ર નર ને દેવતા, સેવા કરે તારી વિભુ!
સર્વજ્ઞ! સર્વ અતિશયોની પ્રધાનતાથી શોભતા,
ચિરકાળ હો જયવંત, હે ભંડાર જ્ઞાન કળા તણા. (1)

ત્રણ જગતના આધાર ને અવતાર હે! કરૂણાતણા,
વળી વૈદ્ય હે! દુર્વાર આ, સંસારનાં દુઃખો તણા;
વીતરાગ! વલ્લભ! વિશ્વના, તુજ પાસ અરજી ઉચ્ચરૂં,
જાણો છતાં પણ કહી અને, હું હૃદયને ખાલી કરૂં. (2)

શું બાળકો માબાપ પાસે, બાળક્રીડા નવ કરે?
ને મુખમાંથી જેમ આવે તેમ શું નવ ઉચ્ચરે?
તેમજ તમારી પાસ, પશ્ચાતાપના અતિરેકથી,
જેવું બન્યું તેવું કહું, તેમાં કશું ખોટું નથી. (3)

મેં દાન તો દીધું નહિ, ને શીળ પણ પાળ્યું નહીં,
તપથી દમી કાયા નહિ, શુભ ભાવ પણ ભાળ્યો નહીં;
એ ચાર ભેદે ધર્મમાંથી, કાંઇ પણ પ્રભુ! નવ કર્યું,
મારૂં ભ્રમણ ભવસાગરે, નિષ્ફળ ગયું! નિષ્ફળ ગયું? (4)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

હું ક્રોધ અગ્નિથી બળ્યો, વળી લોભ-સર્પ ડસ્યો મને,
ગળ્યો માનરૂપી અજગરે, હું કેમ કરી ધ્યાવું તને ?
મન મારૂં માયાજાળમાં, મોહન! મહા મૂંઝાય છે,
બંધાઇ એમ કષાયથી, મમ જીવ બહુ ગભરાય છે. (5)

મેં પરભવે કે આ ભવે, પણ હિત કંઇ કર્યું નહીં,
તેથી કરી સંસારમાં, સુખ અલ્પ પણ પામ્યો નહીં;
જિનેશ! મુજ સમ જન્મ તો, ભવ પૂર્ણ કરવાને થયા,
આવેલ બાજી હાથમાં, અજ્ઞાનથી હારી ગયા. (6)

અમૃત ઝરે તુજ મુખરૂપી, ચંદ્રથી તો પણ પ્રભુ,
ભીંજાય નહી મુજ મન અરેરે! શું કહું? હું તો વિભુ!
પત્થર થકી પણ કઠણ મારૂં, મન ખરે! કયાંથી દ્રવે?
મરકટ સમા આ મન થકી, હું તો પ્રભુ હાર્યો હવે. (7)

ભમતાં મહા ભવસાગરે, પામ્યો પસાયે આપના,
જે જ્ઞાન દર્શન શીળ રૂપી, રત્નત્રય દુષ્કર ઘણાં;
તે પણ ગુમાવ્યાં મેં પ્રમાદે, હે પ્રભુ! કહું છું ખરૂં,
કોની કને જગનાથ? આ પોકાર હું જઈને કરૂં? (8)

ઠગવા વિભુ ! આ વિશ્વને, વૈરાગ્યના રંગો ધર્યા,
ને ધર્મના ઉપદેશ રંજન લોકને કરવા કર્યા;
વિદ્યા ભણ્યો હું વાદ માટે, કેટલી કથની કહું?
સાધુ થઇને બહારથી, દાંભિક અંદરથી રહું. (9)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

મેં મુખને મેલું કર્યું, દોષો પરાયા ગાઈને,
ને નેત્રને નિંદિત કર્યા, પરનારીમાં લપટાઈને ;
વળી ચિત્તને દોષિત કર્યું, ચિંતી નઠારું પરતણું,
હે નાથ! મારું શું થશે? ચાલાક થઈ ચૂક્યો ઘણું. (10)

કરે કાળજાની કત્લ પીડા, કામની બિહામણી,
એ વિષયમાં બની અંધ હું, વિડંબના પામ્યો ઘણી ;
તે પણ પ્રકાશ્યું આજ લાવી લાજ આપ તણી કને,
જાણો સહુ, તેથી કહું કરો માફ મારા વાંકને. (11)

નવકારમંત્ર વિનાશ કીધો, અન્ય મંત્રો જાણીને,
કુશાસ્ત્રના વાકયો વડે, હણી આગમોની વાણીને ;
ધાર્યું હતું કુદેવથી મુજ કર્મ સઘળા કાપવા,
મતિભ્રમ થકી રત્નો ગુમાવી, કાચકટકા મેં ગ્રહર્યા. (12)

આવેલ દ્રષ્ટિમાર્ગમાં વીતરાગ! છોડી આપને,
મેં મૂઢતાથી હૃદયમાં ધ્યાયા મદનના ચાપને;
નેત્રબાણો ને પયોધર, નાભિને સુંદર કટી,
શણગાર સુંદરીઓ તણા, છટકેલ થઈ જોયાં અતિ. (13)

મૃગનયનપ્રિય નારી તણા, મુખચંદ્રને જોયાં થકી,
મુજ મન વિષે જે રંગ લાગ્યો અલ્પ પણ ગાઢો અતિ;
તે શ્રુતરૂપ સાગર મહીં ધોવા છતાં જાતો નથી,
તેનું કહો કારણ તમે, બચું કેમ હું આ પાપથી? (14)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સુંદર નથી આ શરીર, કે સમુદાય ગુણ તણો નથી,
ઉત્તમ વિલાસ કળાતણો, દેદીપ્યમાન પ્રભા નથી;
પ્રભુતા નથી તો પણ પ્રભુ! અભિમાનથી અક્કડ ફરૂં,
ચોપાટ ચાર ગતિતણી, સંસારમાં ખેલ્યા કરૂં. (15)

જીવન ઘટે ક્ષણક્ષણ છતાં પણ પાપબુદ્ધિ નવ ઘટે,
આશા જીવનની જાય પણ, વિષયાભિલાષા નવ મટે;
ઔષધ વિષે કરૂં યત્ન પણ, હું ધર્મને તો નવ ગણું,
બની મોહમાં મસ્તાન હું , પાયા વિનાના ઘર ચણું. (16)

"આત્મા નથી,પરભવ નથી, વળી પુણ્ય પાપ કશું નથી"
મિથ્યાત્વની કટુવાણી મેં, ધરી કાન પીધી સ્વાદથી ;
રવિસમ હતા જ્ઞાને કરી, પ્રભુ! આપશ્રી તો પણ અરે!
દીવો લઈ કૂવે પડયો, ધિક્કાર છે મુજને ખરે! (17)

મેં ચિત્તથી નહીં દેવની, કે પાત્રની પૂજા ચહી,
ને શ્રાવકો કે સાધુઓનો, ધર્મ પણ પાળ્યોનહીં!
પામ્યો પ્રભુ! નરભવ છતાં, રણમાં રડયા જેવું થયું,
ધોબીતણાં કુત્તા સમું, મમ જીવન સૌ એળે ગયું. (18)

હું કામધેનુ કલ્પતરુ, ચિંતામણીના ભોગમાં,
ખોટાં છતા ઝંખ્યો ઘણું, બની લુબ્ધ આ સંસારમાં;
જે પ્રગટ સુખ દેનાર તારો ધર્મ, તે સેવ્યો નહિ,
મુજ મુર્ખ ભાવોને નિહાળી , નાથ કર! કરુણા કંઈ. (19)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

મેં ભોગ સારા ચિંતવ્યા , પણ રોગ સમ જાણ્યા નહિ,
ઇચ્છયું મને બહુ ધન મળે, પણ મૃત્યુને પ્રીછયું નહિ;
ભોગો - વિલાસો નરકમાં લઇ જાય તે ભૂલી ગયો,
મધુબિંદુની આશા મહીં , ભયમાત્ર હું ભૂલી ગયો. (20)

હું શદ્ધ આચારો વડે, સાધુહૃદયમાં નવ રહ્યો,
કરી કામ પરઉપકારના, યશ પણ ઉપાર્જન નવ કર્યો,
વળી તીર્થના ઉદ્ધાર આદિ કોઇ કાર્યો નવ કર્યા ,
વ્યર્થ ગુમાવ્યો ભવ બધો , આત્માર્થ ને ભૂલી ગયો. (21)

ગરુ વાણીથી વૈરાગ્ય કેરો રંગ લાગ્યો નહિ અને,
દુર્જનતણાં વાકયો મહીં શાંતિ મળે કયાંથી મને?
તરૂં કેમ હું સંસાર જયાં અધ્યાત્મ ભાવો છે નહીં,
તૂટેલ તળિયાનો ઘડો જળથી ભરાયે કેમ કરી? (22)

મેં પરભવે નથી ધર્મ કીધો, ને નથી કરતો હજી,
તો આવતા ભવમાં કહો કયાંથી થશે? હે નાથજી!
ભૂત ભાવિ ને સાપ્રંત ત્રણે ભવ નાથ! હું હારી ગયો,
સ્વામિ! ત્રિશંકુ જેમ હું આકાશમાં લટકી રહ્યો. (23)

અથવા નકામું આપ પાસે નાથ! શું બકવું ઘણું?
હે દેવતાના પૂજય! આ ચારિત્ર મુજ પોતાતણું;
જાણો સ્વરૂપ ત્રણ લોકનું, તો માહરૂં શું માત્ર આ?
જયાં ક્રોડનો હિસાબ નંહિ, ત્યાં પાઇની તો વાત કયાં? (24)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

તારાથી ન સમર્થ અન્ય દીનનો ઉદ્ધારનારો પ્રભુ !
મારાથી નહિ અન્ય પાત્ર જગમાં જોતાં જડે હે વિભુ !
મુક્તિ મંગળસ્થાન ! તેથી મુજને ઇચ્છા ન લક્ષ્મી તણી,
આપો સમ્યગ્ રત્ન નાથ ! મુજને તો તૃપ્તિ થાયે ઘણી. (25)

સમાધિભાવના

ભગવન સમય હો ઐસા, જબ પ્રાણ તનસે નિકલે;
આતમસે લો લગી હો, તુમ ભાવ મુજસે નિકલે. (1)

નિજ સ્વરૂપકે નિહાળકે, તેરેમેં લૌ લગાકે;
તુજ ધ્યાન હું રહાધર, નિજ મગનતા સે નિકલે. (2)

ગુરુજી દરશ દીખાતે, ઉપદેશ ભી સુનાતે;
આરાધના કરાતે, કૃપા વચનસે નિકલે. (3)

પરભાવસે નિરાલા, લગતા હો ધ્યાન ધારા;
ત્યાંગુ સભી આહારા, નિજ ધ્યાન ધૂનસે નિકલે. (4)

સનમુખ સ્વરૂપ તેરા હો, ઉસપર નિગાહ મેરા હો;
સંસારસે નિવૃત હો, આત્મા ચમનસે નિકલે. (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मृत्यु महोत्सव

आज मेरा मृत्यु महोत्सव है !
नाचो गाओ हर्ष मनाओ, मंगल उत्सव है !
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

सर्व परिग्रह का मैं त्यागी, निज स्वभाव का मैं अनुरागी,
सम्यक् ज्ञान ज्योति उर जागी, अनुपम नर भव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

साम्यभाव निज उर में धारा, तीव्र कषाय भाव निरवारा,
निज को जन्म मरण से तारा, अब जीवन नव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

राग द्वेष मद मोह हटाऊँ, भव्य भावना द्वादश भाउं,
निज स्वरुप में ही रम जाऊँ, मंगल अभिनव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

पंच पाप का पूर्ण त्याग है, मुझे किसी से नहीं राग है,
अंतर में पूरा विराग है, नहीं उपद्रव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

अब वियोग की बेला आई, कोई रुदन न करना भाई,
देखा मोह महा दुखदाई, हुआ शिथिल अब है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षमा भावना उर में भरलूं, क्षमा-क्षमा मैं सबसे करलूं !
पर भव जा कर्मो को हरलूं, यह दृढ निश्चय है !
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

तत्व भावना सहज विचारुँ, निज परिणति निजरुप संवारुँ,
अब मैं वीतरागता धारुँ, फिर अवसर कब है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

हुआ आज निर्मल अभ्यंतर सोऽहं सोऽहं जपूं निरंतर,
मेरा आत्मदेव अभ्यंकर, अब न पुनर्भव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

निज के गीत सदा गाऊँगा, महामोक्ष मंगल पाऊँगा,
सिद्धशिला पर मैं जाऊँगा, यह विचार नव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

तन की पीडा तो है तनमें, नहीं वेदना किंचित मन में !
लिया समाधिमरण अब, मैंने सुधरा यह भव है !
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

मैं तो अजर अमर अविनाशी, काट रहा भव दुख की फांसी,
सिद्धपुरी का मैं हूँ वासी, जहां न कलरव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

भेद ज्ञान की बुधि ली मैंने, निज आतम की सुधि ली मैंने,
तीर्थयात्रा करली मैंने, आतम अनुभव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

निज स्वभाव गुण गाया मैंने, क्रूर विभाव भगाया मैंने,
संवर भाव जगाया मैंने, कहीं न आस्त्रव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीते समय आत्म जपने में, परिपूरण हूँ मैं अपने में,
मान कषाय न है सपने में, निरुपम मार्दव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

उदासीनता मुझको भाई, समता से हो गई सगाई,
ममता तजी महादुखदायी, जो भव दानव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

मेरा आत्म देव विख्याता, मंगलमय मंगल का दाता,
सर्वोत्कृष्ट स्वऋजु सुखदाता, पूर्ण आर्जव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

अब मेरे परिणाम सरल हैं, आत्म भावना अति निर्मल है,
सहज भाव सम्पूर्ण विमल है, राग पराभव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

कोई नहीं किसी का जग में, झूठे नाते हैं पग पग में!
मोह तोड आया शिवमग में, देखो जय जय है!
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

मन-वच-काय त्रियोग संवारुँ, खान पान सब ही तज डारुँ,
सल्लेखना पूर्ण मैं धारुँ जो सुख आर्णव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

दशलक्षण व्रत मन में लाऊँ, सोलह कारण भाव जगाऊँ,
रत्नत्रय की महिमा गाऊँ, भाव निरास्त्रव हैं।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

भाव भासना मुझे हुई है, राग वासना छुई मुई है,
निज सुख की अनुभूति हुई है, उर स्व चतुष्टय है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक् दर्शन मैंने पाया, सम्यक् ज्ञान हृदय को भाया,
सम्यक् चारित्र को अपनाया, चेतन निर्भय है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

जन्म-जन्म तक जिनश्रुत पाऊँ, भाव शुभाशुभ दूर हटाऊँ,
एक दिवस शिव पदवी पाऊँ, जो ध्रुव सुखमय है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

पंच परम परमेष्ठी ध्याऊँ, देव शास्त्र गुरु को सिर नाऊँ,
शुद्धातम में ही बस जाऊँ, जो निज वैभव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः जप लूँ, अंत समय दृढ संयम तप लूं,
वीतराग का पावन पथ लूँ, शाश्वत अक्षय है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

यह सन्यास मरण सुखकारा, दुर्मति-दुर्गति नाशन हारा,
मैंने मौन महाव्रत धारा, उज्ज्वल परभव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

तन कारा से मुक्त बनूं मैं, हर्षित सहज स्वभाव सनूं मैं,
क्रम - क्रम से वसु कर्म हनूं मैं, निज पद शिवमय है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

मंगल चौक पुराओं भाई, मंगल कलश सजाओ भाई,
मंगल गीत सुनाओ भाई, विदा महोत्सव है।
आज मेरा मृत्यु महोत्सव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारह भावना

वन्दू श्री अरहन्त पद, वीतराग विज्ञान,
वरणों बारह भावना, जग जीवन हित जान। (1)

कहाँ गये चक्री जिन जीता, भरत खण्ड सारा,
कहाँ गये वह राम रु लछमन, जिन रावण मारा,
कहाँ कृष्ण रुक्मिणी सतभामा, अरु सम्पति सगरी,
कहाँ गये वह रंग महल अरु, सुवरन की नगरी। (2)

नहीं रहे वह लोभी कौरव, जूझ मरे रन में,
गये राज तज पाँडव वन को, अग्नि लगी तन में,
मोह नींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को,
हो दयाल उपदेश करें, गुरु बारह भावन को। (3)

(अनित्य भावना)

सूरज चाँद छिपै निकले, ऋतु फिर - फिर कर आवे,
प्यारी आयु ऐसी बीते, पता नहीं पावे,
पर्वत पतित नदी सरिता जल, बह कर नहिं हटता,
श्वाँस चलत यों घटे काठ ज्यों, आरे सों कटता। (4)

ओस बून्द ज्यों गले धूप में, वा अन्जलि पानी,
छिन-छिन यौवन छीन होत है, क्या समझे प्रानी,
इन्द्रजाल आकाश नगर सम, जग सम्पत्ति सारी,
अथिर रूप संसार विचारो, सब नर अरु नारी। (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अशरण भावना)

काल सिंह ने मृग चेतन को घेरा भव वन में,
नहीं बचावन हारा कोई, यों समझो मन में,
मन्त्र यन्त्र सेना धन सम्पत्ति, राज पाट छूटे,
वश नहिं चलता काल लुटेरा, काय नगरि लूटे। (6)

चक्र रतन हलधर सा भाई, काम नहिं आया,
एक तीर के लगत कृष्ण की, विनश गई काया,
देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहिं कोई,
भ्रम से फिरे भटकता चेतन, यूं ही उमर खोई। (7)

(संसार भावना)

जनम - मरण अरु जरा रोग से, सदा दुःखी रहता,
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव, परिवर्तन सहता,
छेदन भेदन नरक पशु गति, वध बन्धन सहना,
राग उदय से दुःख सुरगति में, कहाँ सुखी रहना। (8)

भोगि पुण्य फल हो इक इन्द्री, क्या इसमें लाली,
कुतवाली दिन चार वही फिर, खुरपा अरु जाली,
मानुष जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा,
पञ्चम गति सुख मिले, शुभाशुभ का मेटो लेखा। (9)

(एकत्व भावना)

जन्मे मरे अकेला चेतन, सुख दुःख का भोगी,
और किसी का क्या इक दिन, यह देह जुदी होगी,
कमला चलत न पेंड जाय, मरघट तक परिवारा,
अपने-अपने सुख को रोवे, पिता पुत्र दारा। (10)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्यों मेले में पन्थी जन मिलि, नेह फिरे धरते,
ज्यों तरुवर पै रैन बसेरा, पन्छी आ करते,
कोस कोई दो कोस कोई उड, फिर थक-थक हारे,
जाय अकेला हंस संग में, कोई न पर मारे। (11)

(अन्यत्व भावना)

मोह रुप मृग तृष्णा जल में, मिथ्या जल चमके,
मृग चेतन नित भ्रम में उठ-उठ, दौड़े थक - थक के,
जल नहिं पावै प्राण गमावे, भटक- भटक मरता,
वस्तु पराई मानै अपनी, भेद नहीं करता। (12)

तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी,
मिले अनादि यतन तें बिछुड़े, ज्यों पय अरु पानी,
रुप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना,
जोलों पौरुष थके न तो लों, उद्यम सों चरना। (13)

(अशुचि भावना)

तू नित पोखे यह सूखे ज्यों, धोवे त्यों मैली,
निश दिन करे उपाय देह का, रोग दशा फैली,
मात पिता रज वीरज मिलकर, बनी देह तेरी,
माँस हाड़ नश लहू राध की, प्रगट व्याधि घेरी। (14)

काना पौण्डा पड़ा हाथ यह, चूँसे तो रोवै,
फले अनन्त जु धर्म ध्यान की, भूमि विषै बोवे,
केसर चन्दन पुष्प सुगन्धित, वस्तु देख सारी,
देह परसते होय अपावन, निश दिन मल जारी। (15)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(आस्रव भावना)

ज्यों सर जल आवत मोरी त्यों, आस्रव कर्मन को,
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब, पुद्गल भरमन को,
भावित आस्रव भाव शुभाशुभ, निश दिन चेतन को,
पाप पुण्य के दोनों करता, कारण बन्धन को। (16)

पन मिथ्यात योग पन्द्रह द्वादश अविरत जानो,
पंच रु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो,
मोह भाव की ममता टारे, पर परिणति खोते,
करे मोख का यतन निराश्रव, ज्ञानी जन होते। (17)

(संवर भावना)

ज्यों मोरी में डाट लगावे, तब जल रुक जाता,
त्यों आस्रव को रोके संवर, क्यों नहिं मन लाता,
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर, वचन काय मन को,
दश विधि धर्म परिषह बाइस, बारह भावन को। (18)

यह सब भाव सतावन मिलकर, आस्रव को खोते,
सुपन दशा से जागो चेतन, कहाँ पड़े सोते,
भाव शुभाशुभ रहित शुद्धि, भावन संवर पावै,
डाँट लगत यह नाव पडी, मझधार पार जावै। (19)

(निर्जरा भावना)

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पडे भारी,
संवर रोके कर्म निर्जरा, ह्वै सोखन हारी,
उदय भोग सविपाक समय, पक जाय आम डाली,
दूजी है अविपाक पकावें, पाल विषै माली। (20)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहली सबके होय नहिं कुछ, सरे काम तेरा,
दूजी करे जु उद्यम करके, मिटे जगत फेरा,
संवर सहित करो तप प्रानी, मिले मुक्ति राणी,
इस दुलहिन की यही सहेली, जाने सब ज्ञानी। (21)

(लोक भावना)

लोक अलोक अकाश माँहि थिर, निराधार जानो,
पुरुष रुप कर कटी भये षट् द्रव्यन सों मानो,
इसका कोई न करता हरता, अमिट अनादी है,
जीव रु पुद्गल नाचे यामैं, कर्म उपाधि है। (22)

पाप पुण्य सो जीव जगत में, नित सुख दुःख भरता,
अपनी करनी आप भरै, सिर औरन के धरता,
मोह कर्म को नाश मेटकर, सब जग की आसा,
निज पद में थिर होय लोक के, शीश करो वासा। (23)

(बोधिदुर्लभ भावना)

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरु त्रस गति पानि,
नर काया को सुरपति तरसे, सो दुर्लभ प्राणी,
उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ, श्रावक कुल पाना,
दुर्लभ सम्यक् दुर्लभ संयम, पंचम गुण ठाना। (24)

दुर्लभ रत्नत्रय आराधन दीक्षा का धरना,
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन, शुद्ध भाव करना,
दुर्लभ तै दुर्लभ है चेतन, बोधि ज्ञान पावे,
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर, इस भव में आवै। (25)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(धर्म भावना)

एकान्तवाद के धारी जग में, दर्शन बहु तेरे,
कल्पित नाना युक्ति बनाकर, ज्ञान हरे मेरे,
हो सुछन्द सब पाप करें सिर, करता के लावे,
कोई छिनक कोई करता से, जग में भटकावे। (26)

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन, श्री जिनकी वानी,
सप्त तत्व का वर्णन जामें, सब को सुख दानी,
इनका चितवन बार-बार कर, श्रद्धा उर धरना,
'मंगत' इसी जतन तें इक दिन, भवसागर तरना। (27)

एकान्तवास साधक के लिए श्रेयस्कर है

कुटुम्बरुपी काजल की कोठरी में रहने से संसार बढता है। चाहे जितना उसका सुधार करो, तो भी एकान्तवास से जितना क्षय होने वाला है उसका सौवां हिस्सा भी उस काजल की कोठरी में होने वाला नहीं है। वह कषाय का निमित्त है, मोह के रहने का अनादिकालीन पर्वत है। सुधार करते हुए कदाचित् सम्यगदर्शन होना सम्भव है। इसलिए वहाँ अल्पभाषी होना, अल्प परिचयी होना, अल्प सत्कारी होना, अल्प सहचारी होना, अपने परिणाम का विचार करना, यही श्रेयस्कर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारह भावना

राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार,
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार। (1)

दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार,
मरती बिरियाँ जीव को, कोऊ न राखन हार। (2)

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णा वश धनवान,
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान। (3)

आप अकेलो अवतरे, मरै अकेलो होय,
यूँ कबहूं इस जीव को, साथी सगा न कोय। (4)

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय,
घर संपत्ति पर प्रगट ये, पर हैं,परिजन लोय। (5)

दिपै चाम चादर मढी, हाड पींजरा देह,
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह। (6)

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा,
कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं। (7)

सतगुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमैं,
तब कछु बनहिं उपाय, कर्म चोर आवत रुकैं। (8)

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधैं भ्रम छोर,
या विधि बिन निकसैं नहीं, पैठे पूरब चोर। (9)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंच महाव्रत संचरन, समिति पंच परकार,
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार। (10)

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान,
तामें जीव अनादि तैं, भरमत हैं बिन ज्ञान। (11)

धन कन कंचन राज सुख, सबहि सुलभकर जान,
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान। (12)

जाँचे सुर तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन,
बिन जाँचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन। (13)

जिन्दगी इक पल कभी कोई बढा नहीं पायगा,
रस रसायन सुत सुभट कोई बचा नहीं पायगा,
सत्यार्थ है बस बात यह कुछ भी कहो व्यवहार में,
जीवन - मरण अशरण शरण कोई नहीं संसार में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांत्वनाष्टक

शान्त चित्त हो निर्विकल्प हो, आत्मन् निज में तृप्त रहो,
व्यग्र न होओ क्षुब्ध न होओ, चिदानन्द रस सहज पिओ।

स्वयं स्वयं में सर्व वस्तुएं सदा परिणमित होती है,
इष्ट अनिष्ट न कोई जग में, व्यर्थ कल्पना झूठी है,
धीर-वीर हो मोह भाव तज आतम-अनुभव किया करो। (1)

देखो प्रभु के ज्ञान मांहि सब लोकालोक झलकता है,
फिर भी सहज मग्न अपने में, लेश नहीं आकुलता है,
सच्चे भक्त बनो प्रभुवर के ही पथ का अनुसरण करो। (2)

देखो मुनिराजों पर भी, कैसे कैसे उपसर्ग हुए,
धन्य धन्य वे साधु साहसी, आराधन से नहीं चिगे,
उनको निज आदर्श बनाओ, उर में समता भाव धरो। (3)

व्याकुल होना तो दुख से, बचने का कोई उपाय नहीं,
होगा भारी पाप बंध ही होवे भव्य अपाय नहीं,
ज्ञानाभ्यास करो मन मांही, दुर्विकल्प दुखरुप तजो। (4)

अपने में सर्वस्व है अपना, पर द्रव्यों में लेश नहीं,
हो विमूढ पर में ही क्षण क्षण करो व्यर्थ संक्लेश नहीं,
अरे विकल्प अकिंचित्कर ही ज्ञाता हो ज्ञाता ही रहो। (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर्दृष्टि से देखो नित, परमानन्दमय आत्मा,
स्वयंसिद्ध निर्द्वन्द निरामय, शुद्ध बुद्ध परमात्मा,
आकुलता का काम नहीं कुछ, ज्ञानानन्द का वेदन हो। (6)

सहज तत्व की सहज भावना, ही आनन्द प्रदाता है,
जो भावे निश्चय शिव पावे, आवागमन मिटाता है,
सहज तत्व ही सहज ध्येय है, सहज रुप नित ध्यान धरो। (7)

उत्तम जिन वचनामृत पाया, अनुभव कर स्वीकार करो,
पुरूषार्थी हो स्वाश्रय से इन विषयों का परिहार करो,
बह्म भाव मय मंगल चर्या हो निज में ही मग्न रहो। (8)

भोर की स्वर्णिम छटा सम क्षणिक सब संयोग हैं,
पद्मपत्रों पर पडे जलबिन्दु सम सब भोग हैं,
सान्ध्य दिनकर लालिमा सम लालिमा है भाल की,
सब पर पडी मनहूस छाया विकट काल कराल की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

અપૂર્વ અવસર

અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે?
ક્યારે થઈશું બાહ્યાંતર નિર્ગ્રંથ જો?
સર્વ સંબંધનું બંધન તીક્ષ્ણ છેદી ને,
વિચરશું ક્વ મહત્પુરુષને પંથ જો? (1)

સર્વ ભાવથી ઔદાસીન્યવૃત્તિ કરી,
માત્ર દેહ તે સંયમહેતુ હોય જો;
અન્ય કારણે અન્ય કશું કલ્પે નહીં,
દેહે પણ કિંચિત્ મૂર્છા નવ જોય જો. (2)

દર્શનમોહ વ્યતીત થઈ ઊપજ્યો બોધ જે,
દેહ ભિન્ન કેવળ ચૈતન્યનુ જ્ઞાન જો;
તેથી પ્રક્ષીણ ચારિત્રમોહ વિલોકિયે,
વર્તે એવું શુદ્ધ સ્વરૂપનું ધ્યાન જો. (3)

આત્મ સ્થિરતા ત્રણ સંક્ષિપ્ત યોગની,
મુખ્યપણે તો વર્તે દેહપર્યંત જો;
ઘોર પરીષહ કે ઉપસર્ગભયે કરી,
આવી શકે નહીં તે સ્થિરતાનો અંત જો. (4)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સંયમના હેતુથી યોગપ્રવર્તના,
સ્વરૂપલક્ષે જિન આજ્ઞા આધીન જો;
તે પણ ક્ષણ ક્ષણ ઘટતી જાતી સ્થિતિમાં,
અંતે થાયે નિજસ્વરૂપમાં લીન જો. (5)

પંચ વિષયમાં રાગદ્વેષ વિરહિતતા,
પંચ પ્રમાદે ન મળે મનનો ક્ષોભ જો;
દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર ને કાળ, ભાવ પ્રતિબંધ વણ,
વિચરવું ઉદયાધીન પણ વીતલોભ જો. (6)

ક્રોધ પ્રત્યે તો વર્તે ક્રોધસ્વભાવતા,
માન પ્રત્યે તો દીનપણાનું માન જો;
માયા પ્રત્યે માયા સાક્ષી ભાવની,
લોભ પ્રત્યે નહીં લોભ સમાન જો. (7)

બહુ ઉપસર્ગકર્તા પ્રત્યે પણ ક્રોધ નહીં,
વંદે ચક્રી તથાપિ ન મળે માન જો;
દેહ જાય પણ માયા થાય ન રોમમાં,
લોભ નહીં છો પ્રબળ સિદ્ધિ નિદાન જો. (8)

નગ્નભાવ, મુંડભાવ સહ અસ્નાનતા,
અદંતધોવન આદિ પરમ પ્રસિદ્ધ જો;
કેશ, રોમ, નખ કે અંગે શૃંગાર નહીં,
દ્રવ્યભાવ સંયમમય નિર્ગ્રંથ સિદ્ધ જો. (9)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શત્રુ મિત્ર પ્રત્યે વર્તે સમદર્શિતા,
માન અમાને વર્તે તે જ સ્વભાવ જો;
જીવિત કે મરણે નહીં ન્યૂનાધિકતા,
ભવ મોક્ષે પણ શુદ્ધ વર્તે સમભાવ જો. (10)

એકાકી વિચરતો વળી સ્મશાનમાં,
વળી પર્વતમાં વાઘ સિંહ સંયોગ જો;
અડોલ આસન, ને મનમાં નહીં ક્ષોભતા,
પરમ મિત્રનો જાણે પામ્યા યોગ જો. (11)

ઘોર તપશ્ચર્યામાં પણ મનને તાપ નહીં,
સરસ અન્ને નહીં મનને પ્રસન્નભાવ જો;
રજકણ કે રિદ્ધિ વૈમાનિક દેવની,
સર્વે માન્યાં પુદ્ગલ એક સ્વભાવ જો. (12)

એમ પરાજય કરીને ચારિત્ર મોહનો,
આવું ત્યાં જ્યાં કરણ અપૂર્વ ભાવ જો;
શ્રેણી ક્ષપકતણી કરીને આરૂઢતા,
અનન્ય ચિંતન અતિશય શુદ્ધ સ્વભાવ જો. (13)

મોહ સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર તરી કરી,
સ્થિતિ ત્યાં જ્યાં ક્ષીણ મોહ ગુણસ્થાન જો;
અંત સમય ત્યાં પૂર્ણ સ્વરૂપ વીતરાગ થઈ,
પ્રગટાવું નિજ કેવળજ્ઞાન નિધાન જો. (14)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ચાર કર્મ ઘનઘાતી તે વ્યવચ્છેદ જ્યાં,
ભવનાં બીજતણો આત્યંતિક નાશ જો;
સર્વ ભાવ જ્ઞાતા દ્રષ્ટા સહ શુદ્ધત્વ,
કૃતકૃત્ય પ્રભુ વીર્ય અનંત પ્રકાશ જો. (15)

વેદનીયાદિ ચાર કર્મ વર્તે જહાં,
બળી સીંદરીવત્ આકૃતિ માત્ર જો;
તે દેહાયુષ આધીન જેની સ્થિતિ છે,
આયુષ પૂર્ણે, મટિયે દૈહિક પાત્ર જો. (16)

મન, વચન, કાયા ને કર્મ ની વર્ગણા,
છૂટે જહાં સકળ પુદ્ગળ સંબંધ જો;
એવું અયોગી ગુણસ્થાનક ત્યાં વર્તતું,
મહાભાગ્ય સુખદાયક પૂર્ણ અબંધ જો. (17)

એક પરમાણુ માત્રની મળે ન સ્પર્શતા,
પૂર્ણ કલંક રહિત અડોલ સ્વરૂપ જો;
શુદ્ધ નિરંજન ચૈતન્યમૂર્તિ અનન્યમય,
અગુરુ લઘુ, અમૂર્ત્ત સહજપદરૂપ જો. (18)

પૂર્વપ્રયોગાદિ કારણના યોગથી,
ઊર્ધ્વગમન સિદ્ધાલય પ્રાપ્તિ સુસ્થિત જો;
સાદિ અનંત અનંત સમાધિસુખમાં,
અનંત દર્શન, જ્ઞાન અનંત સહિત જો. (19)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

જે પદ શ્રી સર્વજ્ઞે દીઠું જ્ઞાનમાં,
કહી શક્યા નહીં પણ તે શ્રીભગવાન જો;
તેહ સ્વરૂપને અન્ય વાણી તે શું કહે?
અનુ ભવગોચર માત્ર રહ્યું તે જ્ઞાન જો. (20)

એહ પરમપદ પ્રાપ્તિનું કર્યું ધ્યાન મેં,
ગજા વગરને હાલ મનોરથરૂપ જો;
તો પણ નિશ્ચય રાજચંદ્ર મનને રહ્યો,
પ્રભુઆજ્ઞાએ થાશું તે જ સ્વરૂપ જો. (21)

नर देह उत्तम देश पूरण आयु शुभ आजीविका,
दुर्वासना की मंदता परिवार की अनुकूलता,
सत् सज्जनों की संगती सद्धर्म की आराधना,
है उत्तरोत्तर महादुर्लभ आत्मा की साधना।

संयोग हैं अशरण सभी निज आतमा ध्रुवधाम है,
पर्याय व्ययधर्मा परन्तु द्रव्य शाश्वत धाम है,
इस सत्य को पहिचानना ही भावना का सार है,
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

અમૂલ્ય તત્ત્વવિચાર

બહુ પુણ્ય કેરા પુંજથી શુભ દેહ માનવનો મળ્યો,
તોયે અરે! ભવચક્રનો આંટો નહિ એક્કે ટળ્યો;
સુખ પ્રાપ્ત કરતાં સુખ ટળે છે લેશ એ લક્ષે લહો,
ક્ષણ ક્ષણ ભયંકર ભાવમરણે કાં અહો રાચી રહો ? (1)

લક્ષ્મી અને અધિકાર વધતાં, શું વધ્યું તે તો કહો?
શું કુટુંબ કે પરિવારથી વધવાપણું , એ નય ગ્રહો;
વધવાપણું, સંસારનું નરદેહને હારી જવો,
એનો વિચાર નહીં અહોહો ! એક પળ તમને હવો ! (2)

નિર્દોષ સુખ, નિર્દોષ આનંદ, લ્યો ગમે ત્યાંથી ભલે,
એ દિવ્ય શક્તિમાન જેથી જંજીરેથી નીકળે;
પરવસ્તુમાં નહિ મૂંઝવો, એની દયા મુજને રહી,
એ ત્યાગવા સિદ્ધાંત કે પશ્ચાત્ દુઃખ તે સુખ નહીં. (3)

હું કોણ છું ? ક્યાંથી થયો? શું સ્વરૂપ છે મારૂં ખરૂં ?
કોના સંબંધે વળગણા છે ? રાખું કે એ પરહરૂં ?
એના વિચાર વિવેકપૂર્વક શાંતભાવે જો કર્યા,
તો સર્વ આત્મિક જ્ઞાનનાં સિદ્ધાંત તત્ત્વ અનુભવ્યાં. (4)

તે પ્રાપ્ત કરવા વચન કોનું સત્ય કેવળ માનવું ?
નિર્દોષ નરનું કથન માનો તેહ જેણે અનુભવ્યું;
રે આત્મ તારો ! આત્મ તારો ! શીઘ્ર એને ઓળખો,
સર્વાત્મમાં સમદ્રષ્ટિ દ્યો આ વચનને હૃદયે લખો. (5)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શ્રીસદ્‌ગુરુભક્તિ - રહસ્ય

હે પ્રભુ! હે પ્રભુ! શું કહું, દીનાનાથ દયાળ;
હું તો દોષ અનંતનું, ભાજન છું કરૂણાળ. (1)

શુદ્ધ ભાવ મુજમાં નથી, નથી સર્વ તુજરૂપ;
નથી લઘુતા કે દીનતા, શું કહું પરમસ્વરૂપ ? (2)

નથી આજ્ઞા ગુરુદેવની, અચળ કરી ઉરમાંહી;
આપ તણો વિશ્વાસ દ્રઢ, ને પરમાદર નાહીં. (3)

જોગ નથી સત્સંગનો, નથી સત્સેવા જોગ;
કેવળ અર્પણતા નથી, નથી આશ્રય અનુયોગ. (4)

હું પામર શું કરી શકું? એવો નથી વિવેક;
ચરણ શરણ ધીરજ નથી, મરણ સુધીની છેક. (5)

અચિંત્ય તુજ માહાત્મ્યનો, નથી પ્રફુલ્લિત ભાવ;
અંશ ન એકે સ્નેહનો, ન મળે પરમ પ્રભાવ. (6)

અચળરૂપ આસક્તિ નહિ, નહીં વિરહનો તાપ;
કથા અલભ્ય તુજ પ્રેમની, નહિ તેનો પરિતાપ. (7)

ભક્તિમાર્ગ પ્રવેશ નહિ, નહીં ભજન દ્રઢ ભાન;
સમજ નહીં નિજ ધર્મની, નહિ શુભ દેશે સ્થાન. (8)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કાળદોષ કળિથી થયો, નહિ મર્યાદાધર્મ ;
તોયે નહીં વ્યાકુળતા, જાુઓ પ્રભુ મુજ કર્મ. (9)

સેવાને પ્રતિકૂળ જે, તે બંધન નથી ત્યાગ;
દેહેંદ્રિય માને નહીં, કરે બાહ્ય પર રાગ. (10)

તુજ વિયોગ સ્ફુરતો નથી, વચન નયન યમ નાહીં;
નહિ ઉદાસ અનભક્તથી , તેમ ગૃહાદિક માંહી. (11)

અહંભાવથી રહિત નહિ , સ્વધર્મ સંચય નાહીં;
નથી નિવૃત્તિ નિર્મળપણે, અન્ય ધર્મની કાંઇ. (12)

એમ અનંત પ્રકારથી, સાધન રહિત હુંય;
નહીં એક સદ્ગુણ પણ, મુખ બતાવું શુંય ? (13)

કેવળ કરુણામૂર્તિ છો, દીનબંધુ દીનનાથ !
પાપી પરમ અનાથ છું, ગ્રહો પ્રભુજી ! હાથ. (14)

અનંત કાળથી આથડયો, વિના ભાન ભગવાન,
સેવ્યા નહિ ગુરુ સંતને, મૂકયું નહિ અભિમાન. (15)

સંતચરણ આશ્રય વિના, સાધન કર્યાં અનેક,
પાર ન તેથી પામિયો, ઊગ્યો ન અંશ વિવેક. (16)

સહુ સાધન બંધન થયાં, રહ્યો ન કોઇ ઉપાય,
સત્ સાધન સમજયો નહીં, ત્યાં બંધન શું જાય? (17)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

પ્રભુ પ્રભુ લય લાગી નહીં, પડ્યો ન સદ્‌ગુરુ પાય,
દીઠા નહિ નિજ દોષ તો, તરીએ કોણ ઉપાય? (18)

અધમાધમ અધિકો પતિત, સકળ જગતમાં હુંય,
એ નિશ્ચય આવ્યા વિના, સાધન કરશે શુંય? (19)

પડી પડી તુજ પદપંકજે, ફરી ફરી માગું એજ,
સદ્‌ગુરુ સંત સ્વરૂપ તુજ, એ દ્રઢતા કરી દેજ. (20)

दुखमय निरर्थक मलिन जो संपूर्णतः निस्सार है,
जगजालमय गति चार में संसरण ही संसार है,
भ्रमरोगवश भव-भव भ्रमण संसार का आधार है,
संयोगजा चिद्‌वृत्तियाँ ही वस्तुतः संसार है।

मंथन करे दिन-रात जल घृत हाथ में आवे नहीं,
रज-रेत पेले रात-दिन पर तेल ज्यों पावें नहीं,
सद्‌भाग्य बिन ज्यों संपदा मिलती नहीं व्यापार में,
निज आतमा के भान बिन त्यों सुख नहीं संसार में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કાળ કોઈને નહિ મૂકે

મોતીતણી માળા ગળામાં મૂલ્યવંતી મલકતી,
હિરાતણા શુભ હારથી બહુ કઠકાંતિ ઝળકતી;
આભૂષણોથી ઓપતા ભાગ્યા મરણને જોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

મણિમય મુગટ માથે ધરીને કર્ણ કુંડળ નાખતા,
કાંચન કડાં કરમાં ધરી કશીએ કચાશ ન રાખતા;
પળમાં પડયા પૃથ્વીપતિ એ ભાન ભૂતળ ખોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

દશ આંગળીમાં માંગલિક મુદ્રા જડિત માણિકયથી,
જે પરમ પ્રેમે પેરતા, પોંચી કળા બારીકથી;
એ વેઢ વીંટી સર્વ છોડી,ચાલિયા મુખ ધોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

મૂછ વાંકડી કરી ફાંકડા થઈ લીંબુ ધરતા તે પરે,
કાપેલ રાખી કાતરા, હરકોઈનાં હૈયાં હરે;
એ સાંકડીમાં આવિયા છટકયા તજી સહુ સોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

છો ખંડના અધિરાજ જે ચંડે કરીને નીપજયા,
બ્રહ્માંડમાં બળવાન થઈને ભૂપ ભારે ઊપજયા;
એ ચતુર ચક્રી ચાલિયા હોતા નહોતા હોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

જે રાજનીતિ નિપુણતામાં ન્યાયવંતા નીવડયા,
અવળા કર્યે જેના બધા સવળા સદા પાસા પડયા;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

એ ભાગ્યશાળી ભાગીયા તે ખટપટો સૌ ખોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

તરવાર બહાદુર ટેક ધારી પૂર્ણતામાં પેખિયા,
હાથી હણે હાથે કરી તે કેસરી સમ દેખિયા;
એવા ભલા ભડવીર તે અંતે રહેલા રોઈને,
જન જાણીએ મન માનીએ નવ કાળ મૂકે કોઈને.

इस सत्य से अनभिज्ञ ही रहते सदा बहिरातमा ,
पहिचानते निजतत्व जो वे ही विवेकी आतमा ,
निज आतमा को जानकर निज में जमे जो आतमा ,
वे भव्यजन बन जायेंगे पर्याय में परमातमा ।

सत्यार्थ है बस बात यह कुछ भी कहो व्यवहार में,
संयोग हैं सर्वत्र पर साथी नहीं संसार में ,
संयोग की आराधना संसार का आधार है,
एकत्व की आराधना आराधना का सार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ધર્મ વિષે

સાહ્યબી સુખદ હોય, માનતણો મદ હોય,
ખમા ખમા ખુદ હોય, તે તો કશા કામનું?
જુવાનીનું જોર હોય, એશનો અંકોર હોય,
દોલતનો દોર હોય, તે તો સુખ નામનું;
વનિતા વિલાસ હોય, પ્રૌઢતા પ્રકાશ હોય,
દક્ષ જેવા દાસ હોય, હોય સુખ ધામનું;
વદે રાયચંદ એમ, સદ્ધર્મને ધાર્યા વિના,
જાણી લેજે સુખ એ તો બેએ જ બદામનું!

મોહ માન મોડવાને, ફેલપણું ફોડવાને,
જાળફંદ તોડવાને, હેતે નિજ હાથથી;
કુમતિને કાપવાને, સુમતિને સ્થાપવાને,
મમત્વને માપવાને, સકલ સિદ્ધાંતથી;
મહા મોક્ષ માણવાને, જગદીશ જાણવાને,
અજન્મતા આણવાને, વળી ભલી ભાતથી;
અલૌકિક અનુપમ, સુખ અનુભવવાને,
ધર્મ ધારણાને ધરો, ખરેખરી ખાંતથી.

દિનકર વિના જેવો, દિનનો દેખાવ દીસે,
શશી વિના જેવી રીતે શર્વરી સુહાય છે;
પ્રજાપતિ વિના જેવી, પ્રજા પુર તણી પેખો,
સુરસ વિનાની જેવી, કવિતા કહાય છે;
સલિલ વિહીન જેવી, સરિતાની શોભા અને,
ભર્ત્તાર વિહીન જેવી, ભામિની ભળાય છે;
વદે રાયચંદ વીર, સદ્ધર્મને ધાર્યા વિના,
માનવી મહાન તેમ, કુકર્મી કળાય છે.
ચતુરો ચોપેથી ચાહી ચિંતામણિ ચિત્ત ગણે,
પંડિતો પ્રમાણે છે પારસમણિ પ્રેમથી;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કવિઓ કલ્યાણકારી કલ્પતરુ કથે જેને,
સુધાનો સાગર કથે, સાધુ શુભ ક્ષેમથી;
આત્માના ઉદ્ધારને ઉમંગથી અનુસરો જો,
નિર્મળ થવાને કાજે, નમો નીતિ નેમથી;
વદે **રાયચંદ** વીર, એવું ધર્મરૂપ જાણી,
ધર્મવૃત્તિ ધ્યાન ધરો, વિલખો ન વેમથી.

ધર્મ વિના પ્રીત નહીં, ધર્મ વિના રીત નહીં,
ધર્મ વિના હિત નહીં, કથું જન કામનુ;
ધર્મ વિના ટેક નહીં, ધર્મ વિના નેક નહીં,
ધર્મ વિના ઐકય નહીં, ધર્મ ધામ રામનું;
ધર્મ વિના ધ્યાન નહીં , ધર્મ વિના જ્ઞાન નહીં,
ધર્મ વિના ભાન નહીં , જીવ્યું કોના કામનું ?
ધર્મ વિના તાન નહીં , ધર્મ વિના સાન નહીં ;
ધર્મ વિના ગાન નહીં, વચન તમામનું.

ધર્મ વિના ધનધામ, ધાન્ય ધૂળધાણી ધારો,
ધર્મ વિના ધરણીમાં, ધિક્કાર ધરાય છે ;
ધર્મ વિના ધીમંતની, ધારણાઓ ધોખો ધરે,
ધર્મ વિના ધાર્યું ધૈર્ય , ધ્રુમ થઇ ધમાય છે ;
ધર્મ વિના ધરાધર, ધુતાશે, ન ધામધુમે,
ધર્મ વિના ધ્યાની ધ્યાન, ઢોંગ ઢંગે ધાય છે ;
ધારો, ધારો ધવળ, સુધર્મની ધુરંધરતા,
ધન્ય! ધન્ય! ધામે ધામે ધર્મથી ધરાય છે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

મૂળ માર્ગ

મૂળ માર્ગ સાંભળો જિનનો રે, કરી વૃત્તિ અખંડ સન્મુખ;
નોય પૂજાદિની જો કામના રે,નોય વ્હાલું અંતર ભવદુઃખ.

કરી જોજો વચનની તુલના રે, જોજો શોધીને જિન સિદ્ધાંત;
માત્ર કહેવું પરમારથહેતુથી રે,કોઇ પામે મુમુક્ષુ વાત.

જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્રની શુદ્ધતા રે, એકપણે અને અવિરુદ્ધ;
જિનમાર્ગ તે પરમાર્થથી રે; એમ કહ્યું સિદ્ધાંતે બુધ.

લિંગ અને ભેદો જે વ્રતના રે, દ્રવ્ય દેશ કાળાદિ ભેદ;
પણ જ્ઞાનાદિની જે શુદ્ધતા રે, તે તો ત્રણે કાળે અભેદ.

હવે જ્ઞાન દર્શનાદિ શબ્દનો રે, સંક્ષેપે સુણો પરમાર્થ ;
તેને જોતાં વિચારી વિશેષથી રે, સમજાશે ઉત્તમ આત્માર્થ.

છે દેહાદિથી ભિન્ન આત્મા રે, ઉપયોગી સદા અવિનાશ;
એમ જાણે સદ્‌ગુરુ ઉપદેશથી રે, કહ્યું જ્ઞાન તેનું નામ ખાસ.

જે જ્ઞાને કરીને જાણિયું રે, તેની વર્તે છે શુદ્ધ પ્રતીત ;
કહ્યું ભગવંતે દર્શન તેહને રે, જેનું બીજું નામ સમકીત.

જેમ આવી પ્રતીતિ જીવની રે, જાણ્યો સર્વેથી ભિન્ન અસંગ ;
તેવો સ્થિર સ્વભાવ તે ઊપજે રે, નામ ચારિત્ર તે અણલિંગ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

તે ત્રણે અભેદ પરિણામથી રે, જ્યારે વર્તે તે આત્મારૂપ;
તેહ મારગ જિનનો પામિયો રે, કિંવા પામ્યો તે નિજસ્વરૂપ.

એવાં મૂળ જ્ઞાનાદિ પામવા રે, અને જવા અનાદિ બંધ;
ઉપદેશ સદ્‌ગુરુનો પામવો રે, ટાળી સ્વચ્છંદ ને પ્રતિબંધ.

એમ દેવ જિનંદે ભાખિયું રે , મોક્ષમારગનું શુદ્ધ સ્વરૂપ;
ભવ્ય જનોના હિતને કારણે રે, સંક્ષેપે કહ્યું સ્વરૂપ.

जिस देह को निज जानकर नित रम रहा जिस देह में,
जिस देह को निज मानकर रच-पच रहा जिस देह में,
जिस देह में अनुराग है एकत्व है जिस देह में,
क्षण एक भी सोचा कभी क्या-क्या भरा उस देह में।

क्या- क्या भरा उस देह में अनुराग है जिस देह में,
उस देह का क्या रुप है आतम रहे जिस देह में,
मलिन मल पल रुधिर कीकस वसा का आवास है,
जडरुप है तन किन्तु इसमें चेतना का वास है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શ્રી સદ્‌ગરુ -માહાત્મ્ય

યમનિયમ સંજમ આપ કિયો, પુનિ ત્યાગ બિરાગ અથાગ લહ્યો;
વનવાસ લિયો મુખ મૌન રહ્યો, દ્રઢ આસન પદ્મ લગાય દિયો.

મન પૌન નિરોધ સ્વબોધ કિયો, હઠજોગ પ્રયોગ સુ તાર ભયો;
જપ ભેદ જપે તપ ત્યોંહિ તપે, ઉરસેંહિ ઉદાસી લહિ સબપૈં.

સબ શાસ્ત્રન કે નયધારી હિયે, મત મંડન ખંડન ભેદ લિયે;
વહ સાધન બાર અનંત કિયો, તદપિ કછુ હાથ હજુ ન પર્યો.

અબ કયોં ન બિચારત હૈ મનસેં, કછુ ઔર રહા ઉન સાધનસેં ?
બિન સદ્‌ગુરુ કોય ન ભેદ લહે, મુખ આગલ હૈ કહ બાત કહેં ?

કરુના હમ પાવત હે તુમકી, વહ બાત રહી સુગુરુ ગમકી;
પલમેં પ્રગટે મુખ આગલસેં , જબ સદ્‌ગુરુચર્ન સુપ્રેમ બસેં .

તનસેં, મનસેં, ધનસેં, સબસેં, ગુરુદેવકી આન સ્વઆત્મ બસેં;
તબ કારજ સિદ્ધ બને અપનો, રસ અમૃત પાવહિ પ્રેમ ઘનો.

વહ સત્ય સુધા દરસાવહિંગે, ચતુરાંગુલ હે દ્રગસે મિલહે;
રસ દેવ નિરંજન કો પિવહી, ગહિ જોગ જુગોજુગ સો જીવહિ.

પર પ્રેમ પ્રવાહ બઢે પ્રભુસેં , સબ આગમભેદ સુઉર બસેં;
વહ કેવલકો બીજ ગ્યાનિ કહે, નિજકો અનુભૌ બતલાઇ દિયે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

મંગળ - સ્તુતિ

મંગલમય મંગલકરણ વીતરાગ વિજ્ઞાન,
નમો તાહી જાતે ભયે અરિહંતાદિ મહાન.

વિશ્વભાવ વ્યાપિ તદપિ એક વિમલ ચિદ્રૂપ,
જ્ઞાનાનંદ મહેશ્વરા જયવંતા જિન ભૂપ.

મહત્તત્ત્વ મહનીય મહઃ મહાધામ ગુણધામ,
ચિદાનંદ પરમાતમા વંદો રમતારામ.

તીન ભુવન ચૂડા રતન સમ શ્રી જિનકે પાય,
નમત પાઈએ આપ પદ સબ વિધિ બંધ નશાય.

દર્શનં દેવદેવસ્ય દર્શનં પાપ નાશનમ્,
દર્શનં સ્વર્ગસોપાનં દર્શનં મોક્ષ સાધનમ્.

દર્શનાદ્ દુરિતધ્વંસી વંદનાદ્ વાંછિતપ્રદઃ
પૂજનાત્ પૂરકઃ શ્રીણાં જિનઃ સાક્ષાત્ સુરદ્રુમઃ

પ્રભુ દર્શન સુખ સંપદા પ્રભુ દર્શન નવનિધિ,
પ્રભુ દર્શનસેં પામિયે સકલ મનોરથ સિદ્ધિ.

બ્રહ્માનંદં પરમસુખદં કેવલં જ્ઞાનમૂર્તિમ્,
દ્વન્દ્વાતીતં ગગનસદ્રશં તત્ત્વમસ્યાદિ લક્ષ્યમ્

ગુરુર્બ્રહ્મા ગુરુર્વિષ્ણુર્ગુરુર્દેવો મહેશ્વરઃ,
ગુરુઃ સાક્ષાત્ પરબ્રહ્મ તસ્મૈ શ્રી ગુરવે નમઃ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ધ્યાનમૂલં ગુરુમૂર્તિઃ પૂજામૂલં ગુરુપદમ્,
મંત્રમૂલં ગુરુવાકયં મોક્ષમૂલં ગુરુકૃપા.

અખંડમંડલાકારં વ્યાપ્તં યેન ચરાચરમ્,
તત્પદં દર્શિતં યેન તસ્મૈ શ્રી ગુરવે નમઃ.

અજ્ઞાનતિમિરાન્ધાનાં જ્ઞાનાંજનશલાકયા,
ચક્ષુરુન્મિલિતં યેન તસ્મૈ શ્રી ગુરવે નમઃ.

ધ્યાનધૂપં મનઃપુષ્પં પંચેન્દ્રિય હુતાશનમ્,
ક્ષમાજાપ સંતોષપૂજા પૂજયો દેવો નિરંજનઃ.

અહો! અહો! શ્રી સદ્‌ગુરુ, કરુણાસિંધુ અપાર;
આ પામર પર પ્રભુ કર્યો, અહો! અહો! ઉપકાર.

શું પ્રભુ ચરણ કને ધરું, આત્માથી સૌ હીન;
તે તો પ્રભુએ આપીઓ, વર્તું ચરણાધીન.

આ દેહાદિ આજથી, વર્તો પ્રભુ આધીન;
દાસ દાસ હું દાસ છું, આપ પ્રભુનો દીન.

ષટ્ સ્થાનક સમજાવીને, ભિન્ન બતાવ્યો આપ;
મ્યાનથકી તરવારવત્, એ ઉપકાર અમાપ.

જે સ્વરૂપ સમજ્યા વિના, પામ્યો દુઃખ અનંત;
સમજાવ્યું તે પદ નમું, શ્રી સદ્‌ગુરુ ભગવંત.

પરમ પુરુષ પ્રભુ સદ્‌ગુરુ, પરમ જ્ઞાન સુખ ધામ;
જેણે આપ્યું ભાન નિજ, તેને સદા પ્રણામ.

દેહ છતાં જેની દશા, વર્તે દેહાતીત;
તે જ્ઞાની નાં ચરણમાં, હો વંદન અગણિત.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ક્ષમાપના

હે ભગવાન ! હું બહુ ભૂલી ગયો. મેં તમારાં અમૂલ્ય વચનને લક્ષમાં લીધાં નહીં.

તમારાં કહેલાં અનુપમ તત્વનો મેં વિચાર કર્યો નહીં. તમારા પ્રણીત કરેલા ઉત્તમશીલને સેવ્યું નહીં . તમારા કહેલાં દયા, શાંતિ, ક્ષમા અને પવિત્રતા મેં ઓળખ્યાં નહીં.

હે ભગવન્ ! હું ભૂલ્યો, આથળ્યો, રઝળ્યો અને અનંત સંસારની વિટમ્બનામાં પડયો છું.

હું પાપી છું . હું બહુ મદોન્મત્ત અને કર્મરજથી કરીને મલિન છું.

હે પરમાત્મા ! તમારાં કહેલાં તત્ત્વ વિના મારો મોક્ષ નથી.

હું નિરંતર પ્રપંચમાં પડયો છું. અજ્ઞાનથી અંધ થયો છું.

મારામાં વિવેકશકિત નથી અને હું મૂઢ છું, નિરાશ્રિત છું, અનાથ છું.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

નિરાગી પરમાત્મા ! હું હવે તમારૂં , તમારા ધર્મનું અને તમારા મુનિનું શરણ ગ્રહું છું . મારા અપરાધ ક્ષય થઇ હું તે સર્વ પાપથી મુકત થઉં એ મારી અભિલાષા છે. આગળ કરેલાં પાપોનો હું હવે પશ્ચાત્તાપ કરૂં છું.

જેમ જેમ હું સૂક્ષ્મ વિચારથી ઊંડો ઊતરૂં છું તેમ તેમ તમારા તત્ત્વના ચમત્કારો મારા સ્વરૂપનો પ્રકાશ કરે છે.

તમે નિરાગી, નિર્વિકારી, સત્‌ચિદાનંદસ્વરૂપ, સહજાનંદી, અનંતજ્ઞાની, અનંતદર્શી અને ત્રૈલોક્યપ્રકાશક છો.

હું માત્ર મારા હિતને અર્થે તમારી સાક્ષીએ ક્ષમા ચાહું છું.

એક પળ પણ તમારા કહેલાં તત્ત્વની શંકા ન થાય, તમારા કહેલા રસ્તામાં અહોરાત્ર હું રહું, એ જ મારી આકાંક્ષા અને વૃત્તિ થાઓ !

હે સર્વજ્ઞ ભગવાન ! તમને હું વિશેષ શું કહું? તમારાથી કંઇ અજાણ્યું નથી? માત્ર પશ્ચાત્તાપથી હું કર્મજન્ય પાપની ક્ષમા ઇચ્છું છું.

ૐ શાંતિ: શાંતિ: શાંતિ:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

પ્રણિપાત સ્તુતિ

હે પરમકૃપાળુ દેવ !

જન્મ, જરા, મરણાદિ સર્વ દુઃખોનો અત્યંત ક્ષય કરનારો એવો વીતરાગ પુરુષનો મૂળ માર્ગ આપ શ્રીમદે અનંત કૃપા કરી મને આપ્યો, તે અનંત ઉપકારનો પ્રતિઉપકાર વાળવા હું સર્વથા અસમર્થ છું ; વળી આપ શ્રીમત્ કંઇ પણ લેવાને સર્વથા નિઃસ્પૃહ છો; જેથી હું મન, વચન, કાયાની એકાગ્રતાથી આપનાં ચરણારવિન્દમાં નમસ્કાર કરું છું .

આપની પરમભક્તિ અને વીતરાગપુરુષ ના મૂળધર્મની ઉપાસના મારા હૃદયને વિષે ભવપર્યંત અખંડ જાગ્રત રહો એટલું માગું છું તે સફળ થાઓ.

ૐ શાંતિ: શાંતિ: શાંતિ:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छह सामान्य गुण

कर्ता जगत का मानता जो, "कर्म या भगवान को",
वह भूलता है लोक में, अस्तित्व गुण के ज्ञान को,
उत्पादव्ययुत वस्तु है, फिर भी सदा ध्रुवता धरे,
अस्तित्व गुण के योग से, कोई नहिं जग में मरे। (1)

वस्तुत्व गुण के योग से, हो द्रव्य में स्व-स्वक्रिया,
स्वाधीन गुण-पर्याय का, ही पान द्रव्यों ने किया,
सामान्य और विशेष से, कर रहे निज काम को,
यों मानकर वस्तुत्व को, पाओ विमल शिवधाम को। (2)

द्रव्यत्वगुण इस वस्तु को, जग में पलटता है सदा,
लेकिन कभी भी द्रव्य तो, तजता न लक्षण संपदा,
स्व-द्रव्य में मोक्षार्थी हो, स्वाधीन सुख लो सर्वदा,
हो नाश जिससे आजतक की, दुःखदायी भवकथा। (3)

सब द्रव्य-गुण प्रमेय से, बनते विषय हैं ज्ञान के,
रुकता न सम्यग्ज्ञान पर से, जानियों यों ध्यान से,
आत्मा अरुपी ज्ञेय निज यह, ज्ञान उसको जानता,
है स्व-पर सत्ता विश्व में, सुदृष्टि उनको जानता। (4)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह गुण अगुरुलघु भी सदा, रखता महता है महा,
गुण द्रव्य को पररुप यह, होने न देता है अहा!,
निज-गुण-पर्याय सर्व ही, रहते सतत निज भाव में,
कर्ता न हर्ता अन्य कोई, यों लखो स्व-स्वभाव में। (5)

प्रदेशत्व गुण की शक्ति से, आकार द्रव्यों का धरे,
निजक्षेत्र में व्यापक रहे, आकार भी स्वाधीन है,
आकार हैं, सब के अलग, हो लीन अपने ज्ञान में,
जानों इन्हें सामान्य गुण, रक्खों सदा श्रद्धान में। (6)

स्वाध्याय ही परम तप है

बार सविहम्मि य तवे अब्भंतर बाहीरे कुसलदिट्ठे,
ण वि अत्थि ण वि य होहिदि सज्झायसमं तवो कम्मं।

प्रवीण पुरुष जो श्री गणधर देव उनसे जो अवलोकन करने में आए हुए बाह्य अभ्यन्तर बारह प्रकार के तप है उनमें **स्वाध्याय** समान दूसरा तप कभी हुआ नहीं, होगा नहीं, है नहीं ....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(1)

मुक्तिपुरी का ऋषभ दुलारा, सबकी आंखों का तारा,
ध्यान करत मन आनन्द पावे, ऐसा प्रभु का अतिशय न्यारा।
सात सुरों के सरगम में, प्रभु तेरे गुण को गावें रे,
सुमरन करते नाम प्रभु का, भव-भव कर्म छुड़ावें रे,
घर-घर मंगल होवे सबके, पाकर प्रभु का अमर सहारा।
अष्ट कर्म की जंजीरों को, तोड़ के मोक्ष सिधारे हो,
ज्ञानज्योति से सबको स्वामी, सम्यक् ज्योति देते हो,
मन-मन्दिर में ध्यान लगावे, लेकर तेरा नाम निराला।
अमृतमय सन्देश तुम्हारा, धर्म की ज्योति जलावेगा,
मानवता में शान्ति करके, सद्बुद्धि फैलावेगा,
भव-भव में हम शरणा पावे, जो है सबका तारणहारा।

(2)

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है,
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है।
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है,
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है।
कंचन वरन चले मन रंच न, सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है,
जास पास आहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है।
शुद्ध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है,
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआं उड़ाया है।
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन, सबको नाश बनाया है,
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, "दौल" तास जस गाया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3)

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा,
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।
निश दिन तुमको जपूं, पर से नेहा तजूं,
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे,
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा, संयम धारा।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये,
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थारा।
जग के दुख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग-सुख की भी चाह नहीं है,
मेटो जामन मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।
लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं,
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन यह जिया, लागे खारा।

(4)

मेरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान।
भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर,
निशिदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान।
सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते,
गाते सब तेरा यश गान, पधारो महावीर भगवान।
जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया,
तुम हो दया निधि भगवान, पधारो महावीर भगवान।
भगत जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें,
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी,
तुम हो करुणा दयानिधान, पधारो महावीर भगवान।
रोम-रोम पर तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा,
रवि-शशि तुम से ज्योर्तिमान, पधारो महावीर भगवान।

(5)

निरखो अंग - अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार।
चरण कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार,
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्म तत्त्व ही सार,
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।
हस्त युगल जिनवर कहें, पर का करता होय,
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय,
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।
लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार,
पर दुःख मय गति चतुर में, ध्रुव आत्म तत्त्व ही सार,
यातें नाशा दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।
अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्म तत्त्व दरशाय,
जिनदर्शन कर निज दर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय,
यातें अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार।

(6)

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, मुझे नहिं चैन पड़ती है,
छवि वैराग्य तेरी सामने, आंखों के फिरती है।
निराभूषण विगत दूषण, परम आसन मधुर भाषण,
नजर नैनों की नाशा की, अनी पर से गुजरती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं कर्मों का डर मुझको, कि जब लग ध्यान चरणन में,
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है।
मिले गर स्वर्ग की सम्पत्ति, अचम्भा कौन सा इसमें,
तुम्हें जो नयन भर देखे, गति दुरगति की टलती है।
हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत - सी अन्य मत देखी,
शान्ति मूरत तुम्हारी - सी, नहीं नजरों में चढ़ती है।
जगत सिरताज हो जिनराज, सेवक को दरश दीजे,
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है।

(7)

संसारी जीवनां भावमरणो टालवा करुणा करी,
सरिता बहावी सुधा तणी प्रभु वीर ! तें संजीवनी।
शोषाती देखी सरितने करुणाभीना हृदये करी,
मुनिकुन्द संजीवनी समयप्राभृत तणे भाजन भरी।
कुन्दकुन्द रच्युं शास्त्र, साथिया अमृते पूर्या,
ग्रंथाधिराज ! तारामां भावो ब्रह्मांडना भर्या।
अहो ! वाणी तारी, प्रशमरस - भावे नितरती,
मुमुक्षुने पाती अमृतरस अंजलि भरी भरी,
अनादिनी मूर्छा, विष तणी त्वराथी उतरती,
विभावे थी थंभी, स्वरूप भणी दौड़े परिणती।
तूं छे निश्चयग्रन्थ भंग सघला, व्यवहारना भेदवा,
तूं प्रज्ञाछीणी ज्ञान ने उदयनी, संधि सहु छेदवा,
साथी साधकनो तूं भानु जगनो संदेश महावीरनो,
विसामो भवक्लांतनां हृदयनो, तूं पंथ मुक्ति तणो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूण्ये तणे रसनिबंध शिथिल थाय,
जाण्ये तने हृदय ज्ञानी तणां जणांय,
तूं रूचतां जगतनी रुचि आलसे सौ,
तूं रीझतां सकलज्ञायकदेव रीझे।
बनावुं पत्र कुन्दननां, रत्नोनां अक्षरो लखी,
तथापि कुन्दसूत्रोनां अंकाये मूल्य ना कदी।

(8)

महिमा है अगम जिनागम की।
जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतमकी।
रागादिक दुःख-कारन जानैं, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की।
ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शमदम की।
कर्मबंध की भई निरजरा, कारण परम्परा-क्रम की।
'भागचन्द' शिव-लालच लागौ, पहुँच नही है जहँ जम की।

(9)

सांची तो गंगा यह वीतरागवाणी,
अविछिन्न धारा निजधर्म की कहानी।
जामें अति ही विमल अगाध ज्ञानपानी,
जहाँ नहीं संशयादि पंककी निशानी।
सप्तभंग जहँ तरंग उछलत सुखदानी,
संतचित मरालवृन्द रमैं नित्य ज्ञानी।
जाके अवगाहनतैं शुद्ध होय प्राणी,
'भागचन्द' निहचैं घटमाहिं या प्रमानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(10)

चरणों में आ पड़ा हूं, हे द्वादशांग वाणी,
मस्तक झुका रहा हूँ, हे द्वादशांग वाणी।
मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा,
आपा - पराया - भासा, हो भानु के समानी।
षट् द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया,
भवफन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी।
रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में,
ठाड़े हैं मोक्ष मग में, तकरार मोंसों ठानी।
दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोडूं नाता,
होवे 'सुदर्शन' साता, नहिं जगमें तेरी सानी।

(11)

जिनवाणी माता, दर्शन की बलिहारियाँ।
प्रथम देव अरहन्त मनाऊं, गणधर जी को ध्याऊं,
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊं।
योनि लाख चौरासी मांही, घोर महादुःख पायो,
ऐसी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो।
जानै थॉको शरणा लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनो,
जनम-मरण मिटा के माता, मोक्ष महापद दीनों।
ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता,
द्वादशांग चौदह पूरव की, करदो हमको ज्ञाता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(12)

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग द्वेष नहीं तन में।
ग्रीष्म ऋतु शिखर के ऊपर, मग्न रहे ध्यानन में।
चातुरमास तरुतल ठाड़े, बून्द सहे छिन - छिन में।
शीत मास दरिया के किनारे, धीरज धरें ध्यानन में।
ऐसे गुरु को मैं नित प्रति ध्याऊं ,देत ढ़ोक चरणन में।

(13)

संत साधु बन के विचरूं, वह घड़ी कब आयेगी,
चल पड़ूं मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी।
हाथ में पीछी कमण्डलु, ध्यान आतम राम का,
छोड़कर घरबार दीक्षा, की घड़ी कब आयेगी।
आयेगा वैराग्य मुझको, इस दुःखी संसार से,
त्याग दूंगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी।
पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परीषह भी सहूं,
भावना बारह जु भाऊं, वह घड़ी कब आयेगी।
बाह्य उपाधि त्याग कर, निज तत्त्व का चिंतन करूं,
निर्विकल्प होवे समाधि, वह घड़ी कब आयेगी।
भव भ्रमण का नाश होवे, इस दुःखी संसार से,
विचरूं मैं निज आतमा में, वह घड़ी कब आयेगी।

(14)

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार।
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार,
कि तुमने छोड़ दिया संसार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी,
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भंडारी,
आतम स्वरूप में झूलते करते निज आतम उद्धार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार।
राग द्वेष सब तुमने त्यागे, वैर विरोध हृदय से भागे,
परमातम के हो अनुरागे, वैरी कर्म पलायन भागे,
सत् सन्देश सुना भविजन को करते बेड़ा पार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार।
होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते,
निजपद के आनंद में झूलते, उपशम रस की धार बरसते,
मुद्रा सौम्य निरखकर मस्तक नमता बारम्बार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार।

(15)

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लो,
बार बार आनो मुश्किल है, भाव भक्ति उर भर लो, हाँ।
हाथ कमंडलु काठ को, पीछी पंख मयूर,
विषय वास आरम्भ सब, परिग्रह से हैं दूर,
श्री वीतराग विज्ञानी का कोई ज्ञान हिया विच धरलो, हाँ।
एक बार कर पात्र में, अन्तराय अघ टाल,
अल्प - अशन लें हो खड़े, नीरस - सरस सम्हाल,
ऐसे मुनि मारग उत्तम धारी, तिनके चरण पकड़ लो, हाँ।
चार गति दुःख से टरी, आत्म स्वरूप को ध्याय,
पुण्य पाप से दूर दूर, ज्ञान गुफा में आय,
सौभाग्य तरण तारण मुनिवर का तारण चरण पकड़ लो, हाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(16)

देखा जब अपने अन्दर में कुछ, और नहीं भगवान हूँ मैं,
पर्यय ही दीन हीन पामर, अन्दर में वैभववान हूँ मैं।
चैतन्य प्राण से जीवित नित, इन्द्रिय बल श्वाशोच्छवास नहीं,
हूँ आयु रहित नित अजर-अमर, सच्चिदानंद गुणधाम हूँ मैं।
आधीन नहीं संयोगों के, पर्यायों से अप्रभावी हूँ,
स्वाधीन अखण्ड अप्रतापी हूँ, निज से ही प्रभुतावान हूँ मैं।
सामान्य-विशेषों सहित विश्व, प्रत्यक्ष झलक जावे क्षण में,
सर्वज्ञ सर्वदर्शी आदिक, सम्यक निधियों की खान हूँ मैं।
स्वधर्मों में व्यापी विभु हूँ, और धर्म अनन्तोमय धर्मी,
नित निज स्वरूप की रचना से, सामर्थ्य से वीरजवान हूँ मैं।
तृप्ती आनन्दमयी प्रकटी, देखा जब अन्तर नाथ को मैं,
नहीं रही कामना अब कोई, बस निर्विकार निष्काम हूँ मैं।
मेरा वैभव शाश्वत अक्षुण, पर से आदान प्रदान नहीं,
त्यागोपदान शून्य निष्क्रिय, और अगुरुलघु शिवधाम हूँ मैं।

(17)

दुनियाँ में सबसे न्यारा, यह आत्मा हमारा,
सब देखन जाननहारा, यह आत्मा हमारा।
यह जले नहीं अग्नि में, भीगे न कभी पानी में,
सूखे न पवन के द्वारा, यह आत्मा हमारा।
शस्त्रों से कटे न काटा, नहिं तोड़ सके कोई भाटा,
मरता न मरी का मारा, यह आत्मा हमारा।
माँ बाप सुता सुत नारी, झुठे झगड़े संसारी,
नहिं कोई देत सहारा, यह आत्मा हमारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मत फँसे मोह ममता में, 'मक्खन' आजा आपा में,
तन धन कुछ नहीं तुम्हारा, यह आत्मा हमारा।

(18)

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ।
मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण, पर की मुझमें कुछ गन्ध नहीं,
मैं अरस अरूपी अस्पर्शी, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं।
मैं रंग-रागसे भिन्न भेद से, भी मैं भिन्न निराला हूँ,
मैं हूँ अखन्ड चैतन्य पिण्ड, निज रस में रमने वाला हूँ।
मैं ही मेरा कर्त्ता धर्ता, मुझमें पर का कुछ काम नहीं,
मैं मुझमें रमने वाला हूँ, पर में मेरा विश्राम नहीं।
मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, पर परणति से अप्रभावी हूँ,
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्व, मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ।

(19)

जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे,
अनहोनी होसी नही क्यों जग में, काहे होत अधीर रे।
समय एक बढै नहिं घटसी, जो सुख-दुःख की पीरा रे,
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे।
लगै न तीर कमान बान कहुँ, मार सकै नहीं मीरा रे,
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनन्त तो तीरा रे।
निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे,
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारैं भव नीरा रे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(20)

स्वतः परिणमति वस्तु के क्यों करता बनते जाते हो,
कुछ समझ नहीं आती तुझको, निःसत्व बने ही जाते हो।
अरे कौन निकम्मा जग में है, जो पर का करने जाता हो,
सब अपने अन्दर रमते हैं, तब किस विधि करण रचाते हो।
वस्तु की मालिक वस्तु है, जो मालिक है वह कर्त्ता है,
फिर मालिक के मालिक बनकर, क्यों नीति-न्याय गमाते हो।
सत् सब स्वयं परिणमता है, वह नहीं किसी की सुनता है,
यह माने बिन कल्याण नहीं, कोई कैसे ही कुछ कहता हो।

(21)

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता द्रष्टा आतम राम।
मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान,
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह रागवितान।
मम् स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान,
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान।
सुख-दुख दाता कोई न आन, मोह राग रुप दुखकी खान,
निज को निज पर को पर जान, फिर दुख का नहिं लेश निदान।
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम,
राग त्यागि पहुंचूँ निजधाम, आकुलता का फिर क्या काम।
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम,
दूर हटो परकृत परिणाम, 'सहजानन्द' रहूँ अभिराम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(1)

હે નેમી જિનેશ્વરજી, કાહે કસૂર પૈ ચલ દિયે રથ કો મોર.

કાહે કો દુલહા કા રૂપ બનાયા; કાહે બરાતિન કો જોર,
કાહે કો તોરણ પૈ લે સંગ આયે, ખેંચી કયોં રથકી ડોર.

કયા હૈ કિસીને બડા બોલ બોલા, કયા ગૂઢ બાતેં હૈં ઔર,
પશુઓં ને ઐસા કિયા કૌન જાદૂ, રૂઠે જો સુન કર શોર.

નવ ભવકી સાથિન હૂં પ્યારે સાંવરિયા, ફિર કયોં હો ઐસે કઠોર,
કાહે કો મુનિ પદ ધારા દિગંબર, ડારે કયોં ભૂષણ તોર.

ભવ ભવ યહી એક સૌભાગ્ય ચાહૂં દીજે ચરણ મેં સુઠોર,
આવાગમન સે મિલે શીઘ્ર મુક્તિ, યે હી અરજ કર જોર.

(2)

કહે રાજુલદે નાર, જરા મેરી ભી પુકાર,
સુનો સુનો ભરતાર જાતે હો કહાં રથ મોડકે.

ઓ! માઝી મુઝે અધ બીચમેં, કહો કૈસે તજી જગ કીચમેં,
મેરી નૈયાંકા પતવાર, ખેવો જીવન કે આધાર,
સુનો સુનો ભરતાર જાતે હો કહાં રથ મોડકે.

ઓ! સ્વામી પશુઓંકી પુકાર પર, હુવે ત્યાગી દયા ચિત ધાર કર,
મૈ ભી જગકા જૂઠા પ્યાર, આઈ તજકર સબ પરિવાર,
સુનો સુનો ભરતાર જાતે હો કહાં રથ મોડકે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

શ્રુત આવાગમન કા 'સૌભાગ્ય' સે,ભેટું ભવફંદ તેરે સુજાપસે,
કરું આતમકા ઉદ્ધાર, પાઉં સિદ્ધાસન પદ સાર,
સુનો સુનો ભરતાર, જાતે હો કહાં રથ મોડકે.

(3)

પ્રભુની વાણી જોર રસાળ, મનડું સાંભળવા તલસે.
સજલ જલદ જિમ ગાજતે।, જાણું વરસે અમૃતધાર.
સાંભળતાં લાગે નહિ, ખીણ ભુખને તરસ લગાર.
તિર્યંચ મનુષ ને દેવતા સહુ, સમજે નિજ નિજ વા।ણ.
જોજન ખેત્રે વિસ્તરે, નય ઉપનય રતનની ખાણ.
બેસે હરિ મૃગ એકઠા, ઉંદર માંજાર ના બાળ.
મોહ્ય। પ્રભુની વાણીયે, કો ન કરે એહની આળ.
સહસ વરસ જો નીગમે, તોહે તૃપ્તિ ન પામે મન્ન.
સાતાયે સહુ જીવના, રે।માંચિત હુવે તન્ન.
વાણી સીમંધરજિણંદની, શિવરમણીની દ।તાર.
વીતરાગી જીણંદજીને।, પ્રભુ હોજો જય જયકાર.

(4)

તન મન ફૂલા દર્શન પા, નષ્ટ હુઆ દુખ સારા,
સભી સુખ પાયા, પાયા સભી સુખ પાયા.
પ્યાસે પ્યાસે નૈના કબસે તરસ રહે, તરસ રહે,
દર્શન જલ પાનેં કો રો રો બરસ રહે, બરસ રહે,
પાવન શુભ દિન પાયા રે, પલ પલ રૂપ નિહારું,
પ્રભુ મન ભાયા, પાયા, સભી સુખ પાયા.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ઇન્દ્રાદિક પદવી કી મુઝકો ચાહ નહીં, ચાહ નહીં,
જગતી કે વૈભવ લખ પરકી દાહ નહીં, દાહ નહીં,
નિજાનંદ પદ પાઊં રે, એક યહી વર દીજો,
પ્રભુ ચિત્ત ચાયા, પાયા, સભી સુખ પાયા.

પ્રભુ ધરમ જાતિ કા મૈં ફિર દાસ રહૂં દાસ રહૂં,
અટલ રહૂં મુક્તિ મે તેરે પાસ રહૂં, પાસ રહૂં,
સુખ સૌભાગ્ય બઢાઊં રે તવ પદ પાકર કરલૂં,
સફલ સુ કાયા, પાયા, સભી સુખ પાયા.

(5)

આજ મારા હૃદયમાં, આનંદ સાગર ઊછળે,
જિનચન્દ્રના દર્શન વડે, સંતાપ સવિ સ્હેજે ટળે.

કળિકાળમાં જિનદેવનું, દર્શન જીવન આધાર છે,
પામશે જે શુદ્ધ ભાવે, તરી જશે સંસાર તે.

ભવવને ભમતાં થકાં, ભૂલા પડેલા માર્ગમાં,
દર્શનરૂપી દીપક લઈ, જાશું અમે અપવર્ગમાં.

રામનો સંગમ થયે, જેમ હર્ષ પામે જાનકી,
તેવી જ રીતે ભવિકને, જિનદેવના દર્શનથકી.

શ્રીગુરુ વચનામૃત સુણી, જાણ્યું અમે જિનદર્શને,
આત્મ જાગે, પાપ ભાગે, સિદ્ધની પદવી મળે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(૬)

સીમંધર મુખથી ફૂલડા ખરે,
એની કુંદ કુંદ ગૂંથે માળ રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

વાણી ભલી મન લાગે રળી,
જેમાં સાર-સમય શિરતાજ રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

ગુંથ્યાં પાહુડ ને ગૂથ્યું પંચાસ્તિ,
ગુંથ્યું પ્રવચનસાર રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

ગુંથ્યું નિયમસાર, ગુંથ્યું રયણસાર,
ગુંથ્યો સમયનો સાર રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

સ્યાદ્વાદ કેરી સુવાસે ભરેલો,
જિનજીનો ઊંકારનાદ રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

વંદું જિનેશ્વર, વંદું હું કુંદકુંદ,
વંદું એ ઊંકારનાદ રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

હૈડે હજો, મારા ભાવે હજો,
મારા ધ્યાને હજો જિનવાણ રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

જિનેશ્વરદેવની વાણીના વાયરા,
વાજો મને દિનરાત રે,
જિનજીની વાણી ભલી રે.

(7)

સુખશાન્તિ પ્રદાતા, જગના ત્રાતા, કુંદકુંદ મહારાજ;
જનભ્રાંતિ વિધાતા, તત્વોના જ્ઞાતા નમન કરૂં છું આજ,

જડતાનો આ ધરણી ઉપર, હતો પ્રબળ અધિકાર;
કર્યો ઉપકાર અપાર પ્રભુ! તેં, રચીને ગ્રંથ ઉદાર રે.

વરસાવી નિજ વચન સુધારસ, કર્યો સુશીતલ લોક;
સમયસારનું પાન કરીને, ગયો માનસિક શોક રે.

તારા ગ્રંથોનું મનન કરીને, પામું અલૌકિક ભાન;
ક્ષણે ક્ષણે હું જ્ઞાયક સમરૂં, પામું કેવળજ્ઞાન રે.

તારૂં હૃદય પ્રભુ! જ્ઞાન - સમતાનું, રહ્યું નિરંતર ધામ;
ઉપકારો ની વિમલ યાદીમાં, લાઓ વાર પ્રણામ રે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(૪)

જંગલ વસાવ્યું રે જોગીએ, તજી તનડાની આશજી,
વાત ન ગમે રે આ વિશ્વની, આઠે પહોર ઉદાસ જી.

શેજ પલંગ પર પોઢતાં, મંદીર ઝરૂખા માંયજી,
તેને નહિ તૃણ સાથરો, રહેતા તરૂતલ છાંયજી.

સાલ દુશાલા ઓઢતાં, ઝીણા જરકશી જામજી,
તેણે રે ન રાખ્યું તૃણ વસ્ત્રનું, સહે શિરસીત ઘામજી.

હાંજી કહેતાં હજાર ઉઠંતા, ચાલતાં લશ્કર લાવજી,
તે નર ચાલ્યા રે એકલા, નહિ પેંજાર પાવજી.

ભલો રે ત્યાગ રાજા રામને।, ત્યાગી અનેક નારજી,
મંદીર ઝરૂખા મેલી કરી, આસન કીધલાં દૂરજી.

ધન્ય ધન્ય શ્રીસુકુમાર મુની, ગ્રહ્યું સ્વરૂપ નિગ્રંથજી,
રાજ સાજ સુખ પરીહરી, વેગે ચાલીયા વનજી.

એ વૈરાગ વંતને જાઉં વારણે, બીજાં ગયાંરે અનેકજી,
ધન્ય રે જનો એ અવનીવિષે, તેને કરૂં હું નમનજી.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(9)

જાગો જોગી અલખ સ્વરૂપી, પૂર્ણાનન્દવિલાસી;
નિજપદમાંહિ વાસ તુમારા, જ્ઞાતાજ્ઞેય પ્રકાશી,
ખેલો આતમરે, અવસર આવ્યો સારો;
જીનજી તું મને પ્યારો, ખેલો આતમરે.

ચિદ્‌ઘન શુદ્ધ સ્વરૂપે સોહે, મુનિજનનાં મન મોહે;
દિનમણિ ત્રણભુવનમાં તું છે, પોતે પોતાને બોહે.

અન્તર ધન પરખીલે ! તારૂં, સારામાં જે સારૂં;
તન્મય વિશ્વાસી થા તેનો, પ્યારામાં જે પ્યારૂં.

ભુલી દુનિયાના ડહાપણને, વળજે આતમવાટે;
ઉંધીશ નહિ તું અગમપન્થમાં, માલ છે માથા સાટે.

હાથે નહીં તે સાથે કરવું, અદ્‌ભૂત એહ તમાસા;
પામ્યા અનન્તા પામે તેને, તે પદના તું પ્યાસા.

ચિન્તામણિ નિર્ધનના હાથે, તેતો કબહુ ન ચડશે;
માનો મનમાં જે તે આવ્યું, પરભવ માલુમ પડશે.

ચઉટામાં મીસરી વેરાણી, કીડી કળાથી ખાવે;
કુંજર તેને ગ્રહી શકે નહિ, યોગ્યતાએ સહુ પાવે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

જેના માથે સદ્‌ગુરૂ છે, તે જગમેં ઉજીયારો;
નિજ સ્વરૂપે આત્મ ઉજાગર, સદ્‌ગુરૂ તરે ને તારે.

(10)

પ્રભુ મેરે! તૂં સબ વાતે પૂરા,
પર કી આશ કહા કરે પ્રીતમ ! એ કિણ વાતે અધૂરા.

પર વશ વસત લહત પરતક્ષ દુઃખ, સબહી બાસે સનૂરા;
નિજ ઘર આપ સંભાર સંપદા, મત મન હોય સનૂરા.

પરસંગ ત્યાગ લાગ નિજ રંગે, આનંદ વેલી અંકૂરા;
નિજ અનુભવ રસ લાગે મીઠા, જ્યું ઘેવરમેં છૂરા.

અપને ખ્યાલ પલકમેં ખેલે, કરે શત્રુકા ચૂરા;
સહજાનંદ અચલ સુખ પાવે, ધૂરે જગ જીવ નૂરા.

(11)

એસા સ્વરૂપ વિચારો હંસા, ગુરૂગમ શૈલી ધારીરે.
પુદ્‌ગલ રૂપાદિકથી ન્યારો, નિર્મળ સ્ફટિકસમાનોરે;
નિજ સત્તા ત્રિહુકાલે અખણ્ડિત, કબહુ રહે નહિ છાનોરે.

ભેદજ્ઞાન સૂર ઉદયે જાગી, આતમધંધે લાગોરે;
સ્થિરદષ્ટિ સત્તાનિજ ધ્યાયી, પરપરિણમતા ત્યાગો રે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

કર્મબંધ રાગાદિક વારી, શકિત શુદ્ધ સમારીરે;
ઝીલો સમતાગંગાજલમેં, પામી ધ્રુવકી તારીરે.

નિજગુણ રમતો રામ ભયો જબ, આતમરામ કહાયોરે;
શ્રીસદ્‌ગુરુ કહે શોધો ઘટમાં, નિજમાં નિજ પરખાયોરે.

(12)

સંસારસાગર તારવા જિનવાણી છે નૌકા ભલી,
જ્ઞાની સુકાની મલ્યા વિના એ નાવ પણ તારે નહીં;
આ કાળમાં શુદ્ધાત્મજ્ઞાની સુકાની બહુ બહુ દોહ્યલો,
મુજ પુણ્યરાશિ ફલ્યો અહો! ગુરુ કહાન તું નાવિક મલ્યો.

અહો! ભક્ત ચિદાત્માના, સીમંધર - વીર - કુંદના!
બાહ્યાંતર વિભવો તારા, તારે નાવ મુમુક્ષુનાં.

સદા દૃષ્ટિ તારી વિમળ નિજ ચૈતન્ય નીરખે,
અને જ્ઞપ્તિમાંહી દરવ - ગુણ - પર્યાય વિલસે;
નિજાલંબીભાવે પરિણતિ સ્વરૂપે જઈ ભળે,
નિમિત્તો વહેવારો ચિદઘન વિષે કાંઈ ન મળે.

હૈયું સત સત, જ્ઞાન જ્ઞાન ધબકે ને વજ્રવાણી છૂટે,
જે વજ્રે સુમુમુક્ષુ સત્ત્વ ઝળકે; પરદ્રવ્ય નાતો તૂટે;
રાગદ્વેષ રુચે ન, જંપ ન વળે ભાવેંદ્રિમાં - અંશમાં,
ટંકોત્કીર્ણ અકંપ જ્ઞાન મહિમા હૃદયે રહે સર્વદા.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

નિત્યે સુધાઝરણ ચન્દ્ર! તને નમું હું,
કરુણા અકારણ સમુદ્ર; તને નમું હું;
હે જ્ઞાનપોષક સુમેઘ! તને નમું હું,
આ દાસના જીવનશિલ્પી! તને નમું હું,

ઊંડી ઊંડી, ઊંડેથી સુખનિધિ સતના વાયુ નિત્યે વહંતી,
વાણી ચિન્મૂર્તિ! તારી ઉર-અનુભવના સૂક્ષ્મ ભાવે ભરેલી;
ભાવો ઊંડા વિચારી, અભિનવ મહિમા ચિત્તમાં લાવી લાવી,
ખોયેલું રત્ન પામું , - મનરથ મનનો; પુરજો શક્તિશાળી!

(13)

ગુરુદેવ! તારાં ચરણમાં ફરી ફરી કરું હું વંદના,
સ્થાપી અનંતાનંત તુજ ઉપકાર મારા હૃદયમાં.

કરીને કૃપાદ્રષ્ટિ, પ્રભુ! નિત રાખજો તુમ ચરણમાં,
રે! ધન્ય છે એ જીવન જેવી તે શીતળ તુજ છાંયમાં.

ગુરુદેવ! અવિનય કંઈ થયો, અપરાધ કંઈ પણ જે થયા,
કરજો ક્ષમા અમ બાળને, એ દીનભાવે યાચના.

મન વચન-કાય થકી થયા જાણ્યે - અજાણ્યે દોષ જે,
કરજો ક્ષમા સૌ દોષની, હે નાથ! વિનવું આપને.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

તારી ચરણસેવા થકી સૌ દોષ સહેજે જાય છે,
ક્રોધાદિ ભાવ દૂરે થઇ ભાવો ક્ષમાદિક થાય છે.

ગુરુવર! નમું હું આપને, અમ જીવનના આધારને,
વૈરાગ્યપૂરિત જ્ઞાન - અમૃત સીંચનારા મેઘને.

મિથ્યાત્વભાવે મૂઢ થઇ નિજતત્વ નહિ જણ્યું અરે!
આપી ક્ષમા એ દોષની આ પરિભ્રમણ ટાળો હવે.

સમ્યક્ત્વ - આદિક ધર્મ પામું, તુજ ચરણ-આશ્રય વડે,
જય જય થજો પ્રભુ! આપનો, સૌ ભકત શાસનના ચહે.

(14)

અહો! અહો! શ્રી સદ્‌ગુરુ, કરુણાસિંધુ અપાર;
આ પામર પર પ્રભુ કર્યો અહો! અહો! ઉપકાર.

શું પ્રભુ ચરણ કને ધરું, આત્માથી સૌ હીન;
તે તો પ્રભુએ આપિયો, વર્તું ચરણાધીન.

આ દેહાદિ આજથી, વર્તો પ્રભુ આધીન;
દાસ દાસ હું દાસ છું, આપ પ્રભુનો દીન.
ષટ્ સ્થાનક સમજાવીને, ભિન્ન બતાવ્યો આપ;
મ્યાનથકી તરવારવત્, એ ઉપકાર અમાપ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

જે સ્વરૂપ સમજ્યા વિના પામ્યો દુઃખ અનંત ;
સમજાવ્યું તે પદ નમું , શ્રી સદ્‌ગુરુ ભગવંત.
પરમ પુરૂષ પ્રભુ સદ્‌ગુરુ , પરમજ્ઞાન સુખધામ;
જેણે આપ્યું ભાન નિજ, તેને સદા પ્રણામ..
દેહ છતાં જેની દશા, વર્તે દેહાતીત;
તે જ્ઞાનીના ચરણમાં, હો વંદન અગણિત.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સ્વાધ્યાય પદ્ય

હું એક શુદ્ધ સદા અરૂપી, જ્ઞાન દર્શનમય ખરે,
કંઈ અન્ય તે મારૂ જરી, પરમાણુ માત્ર નથી અરે. (1)

છે ચેતનાગુણ, ગંધ-રૂપ-રસ-શબ્દ વ્યક્તિ ન જીવને,
વળી લિંગગ્રહણ નથી અને સંસ્થાન ભાખ્યુ ન તેહને. (2)

જે ચેતનાગુણ, અરસરૂપ, અગંધ શબ્દ અવ્યકત છે,
નિર્દિષ્ટ નહિં સંસ્થાન, ઈન્દ્રિયગ્રાહ્ય નહિં, તે જીવ છે. (3)

જીવ ચેતનાગુણ, અરસરૂપ, અગંધશબ્દ અવ્યકત છે,
વણી લિંગગ્રહણ વિહીન છે, સંસ્થાન ભાખ્યું ન તેહ ને. (4)

મારો સુશાસ્વત એક દર્શન જ્ઞાન લક્ષણ જીવ છે,
બાકી બધા સંયોગ લક્ષણ ભાવ મુજ થી બાહ્ય છે. (5)

જીવ ચેતનાગુણ, શબ્દ-રસ-રૂપ-ગંધ વ્યક્તિ વિહીન છે,
નિર્દિષ્ટ નહીં સંસ્થાન જીવનું, ગ્રહણલિંગ થકી નહીં. (6)

છું એક, શુદ્ધ, મમત્વ હીન હું, જ્ઞાન દર્શન પૂર્ણ છું ,
એમાં રહી સ્થિત, લીન એમાં, શીઘ્ર આ સૌ ક્ષય કરૂં. (7)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

નથી અપ્રમત્ત કે પ્રમત્ત નથી, જે એક જ્ઞાયકભાવ છે,
એ રીત શુદ્ધ કથાય, ને જે જ્ઞાત તે તો તે જ છે. (8)

જયમ લોહનું ત્યમ કનકનું જંજીર જકડે પુરૂષને,
એવી રીતે શુભ કે અશુભ કૃત કર્મ બાંધે જીવને. (9)

સુની ઘાતિકર્મ વિહીન નું, સુખ સૌ સુખે ઉત્કૃષ્ટ છે,
શ્રદ્ધે ન તેહ અભવ્ય છે, ને ભવ્ય તે સંમત કરે. (10)

જે જાણતો અર્હંત ને, ગુણ દ્રવ્ય ને પર્યયપણે,
તે જીવ જાણે આત્મને, તસુ મોહ પામે લય ખરે. (11)

શાસ્ત્રો વળે પ્રત્યક્ષ આદિથી, જાણતો જે અર્થને,
તસુ મોહ પામે નાશ નિશ્ચય, શાસ્ત્ર સમધ્યયનીય છે. (12)

જેવા જીવો છે સિદ્ધિગત, તેવા જીવો સંસારી છે,
જેથી જનમ મરણાદિ હીનને, અષ્ટ ગુણ સંયુકત છે. (13)

અશરીર ને અવિનાશ છે, નિર્મળ, અતીન્દ્રિય શુદ્ધ છે,
જયમ લોક અગ્રે સિદ્ધ, તે રીત જાણ સૌ સંસારીને. (14)

મૂઢ જહીં વિશ્વસ્ત છે, તત્સમ નહીં ભયસ્થાન,
જેથી ડરે તેનાં સમું, કોઈ ન નિર્ભય ધામ. (15)

ઈન્દ્રિય સર્વ નીરોધી ને, મન કરીને સ્થિરરૂપ,
ક્ષણભર જોતાં જે દિસે, તે પરમાત્મ સ્વરૂપ. (16)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

દ્રશ્યમાન આ જડ બધાં, ચેતન છે નહીં દ્રષ્ટ,
રોષ કરૂ કંયા? તોષ કંયા? ધરૂં ભાવ મધ્યસ્થ. (17)

અનાત્મદર્શી ગામ વા વનમાં કરે નિવાસ,
નિશ્ચય શુદ્ધાત્મામહીં, આત્મદર્શી નો વાસ. (18)

બહુ સૂણે ભાખે ભલે, દેહ ભિન્ન ની વાત,
પણ તેને નહીં અનુભવે, ત્યાં લગી નહીં શિવલાભ. (19)

દિશા - દેશ થી આવીને, પક્ષી વૃક્ષે વસન્ત,
પ્રાતઃ થતાં નિજ કાર્યવશ, વિધ વિધ દેશ ઉડન્ત. (20)

દેખે વિપત્તિ અન્ય ની, નિજની દેખે નાહિં,
બળતાં પશુઓ વન વિષે, દેખે તરૂ પર જાંઈ. (21)

નિજ અનુભવથી પ્રગટ જે, નિત્ય શરીર પ્રમાણ,
લોકાલોક વિલોકતો, આત્મા અતિ સુખવાન. (22)

કયાં ભીતિ જયાં અમર હું ? કયાં પીડા વષરોગ ?
બાલ, યુવા, નહીં વૃદ્ધ હું, એ સહુ પુદ્ગલ જોગ. (23)

ચાર ગતિ દુઃખ થી ડરે, તો તજ સૌ પરભાવ,
શુદ્ધાતમ ચિંતન કરી, લે શિવસુખ નો લાભ. (24)

નિજરૂપ જો નથી જાણતો, કરે પુણ્ય બસ પુણ્ય,
ભમે તોય સંસાર માં, શિવસુખ કદી ન થાય. (25)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ગૃહકામ કરતાં છતાં, હેયા હેય નું જ્ઞાન,
ધ્યાવે સદા જીનેશ પદ, શીઘ્ર લહે નિર્વાણ. (26)

પુણ્યે પામે સ્વર્ગ જીવ, પાપે નરક નિવાસ,
બે તજી જાણે આત્મ ને, તે પામે શિવવાસ. (27)

કોણ કોની સમતા કરે, સેવે પૂજે કોણ,
કોની સ્પર્શાસ્પર્શતા, ઠગે કોઈને કોણ ? (28)

કોણ કોની મૈત્રી કરે, કોની સાથે કલેશ,
જયાં દેખું ત્યાં સર્વ જીવ, શુદ્ધ બુદ્ધ જ્ઞાનેશ. (29)

તન મંદિર માં દેવ જીન, જનદેરે દેખંત,
હાસ્ય મને દેખાય આ, પ્રભુ ભિક્ષાર્થે ભમંત. (30)

જેમ રમતું મન વિષય માં, તેમ જો આત્મે લીન,
શીઘ્ર મળે નિર્વાણ પદ, ધરે ન દેહ નવીન. (31)

ધ્યાન વળે અભ્યંતરે, દેખે જે અશરીર,
શરમજનક જન્મો ટણે, પીએ ન જનની ક્ષીર. (32)

પાપરૂપને પાપ તો જાણે જગ સહુ કોઈ,
પુણ્ય તત્વ પણ પાપ છે, કહે અનુભવી બુધ કોઈ. (33)

જે જાણે શુદ્ધાત્મને, અશુચિ દેહ થી ભિન્ન,
તે જ્ઞાતા સૌ શાસ્ત્રનો, શાશ્વત સુખમાં લીન. (34)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સર્વ જીવ છે જ્ઞાનમય, એવો જે સમભાવ,
તે સામાયિક જાણવું, ભાખે જીનવરરાવ. (35)

આત્મા તે અર્હન્ત છે, સિદ્ધ નિશ્ચયે એજ,
આચારજ ઉવઝાય ને, સાધુ નિશ્ચય તેજ. (36)

જે સિદ્ધયા ને સિદ્ધશે, સિદ્ધ થતાં ભગવાન,
તે આત્મ દર્શન થકી, એમ જાણ નિભ્રાન્ત. (37)

ત્યાગ વિરાગ ન ચિત્ત માં, થાય ન તેને જ્ઞાન,
અટકે ત્યાગ વિરાગ માં, તો ભૂલે નિજ ભાન. (38)

જ્યાં જ્યાં જે જે યોગ્ય છે, તહાં સમજવું તેહ,
ત્યાં ત્યાં તે તે આચરે, આત્માર્થી જન એહ. (39)

પ્રત્યક્ષ સદ્‌ગુરૂ યોગ થી, સ્વચ્છંદ તે રોકાય,
અન્ય ઉપાય કર્યા થકી, પ્રાયે બમણો થાય. (40)

એક હોય ત્રણ કાળમાં, પરમારથ નો પંથ,
પ્રેરે તે પરમારથ ને, તે વ્યવહાર સમંત. (41)

કષાય ની ઉપશાંતતા, માત્ર મોક્ષ અભિલાષ,
ભવે ખેદ પ્રાણી દયા, ત્યાં આત્માર્થ નિવાસ. (42)

ભાસ્યો દેહાધ્યાસ થી, આત્મા દેહ સમાન,
પણ તે બન્નેં ભિન્ન છે, પ્રગટ લક્ષણે ભાન. (43)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

સર્વ અવસ્થા ને વિષે, ન્યારો સદા જણાય,
પ્રગટરૂપ ચૈતન્યમય, એ એંધાણ સદાય. (44)

જડ ચેતન નો ભિન્ન છે, કેવળ પ્રગટ સ્વભાવ,
એક પણું પામે નહીં, ત્રણે કાળ દ્વય ભાવ. (45)

કયારે કોઈ વસ્તુ નો, કેવલ હોય ન નાશ,
ચેતન પામે નાશ તો, કેમાં ભળે તપાસ. (46)

જે જે કારણ બંધનાં, તેહ બંધ નો પંથ,
તે કારણ છેદક દશા, મોક્ષ પંથ ભવ અંત. (47)

કોટિ વર્ષ નું સ્વપ્ન પણ, જાગૃત થતાં સમાય,
તેમ વિભાવ અનાદિ નો, જ્ઞાન થતાં દૂર થાય. (48)

શુદ્ધ બુદ્ધ ચૈતન્યઘન, સ્વયં જ્યોતિ સુખધામ,
બીજું કહીએ કેટલું, કર વિચાર તો પામ. (49)

આત્મભ્રાંતિ સમ રોગ નહીં, સદ્‌ગુરૂવૈદ્ય સુજાણ,
ગુરુ આજ્ઞા સમ પથ્ય નહીં, ઔષધ વિચાર ધ્યાન. (50)

સર્વ જીવ છે સિદ્ધ સમ, જે સમજે તે થાય,
સદ્‌ગુરૂ આજ્ઞા જીન દશા, નિમિત કારણ માંય. (51)

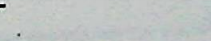

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"दौल" समज सुन चेत सयाने,
काल वृथा मत खोवे;
यह नरभव फिर मिलन कठिन है,
जों सम्यक् नहीं होवै। (1)

मुनिवृत धार अनंत बार, ग्रीवक उपजायो,
पै निज आत्म ज्ञान बिना, सुख लेश न पायो। (2)

यह मानुष पर्याय, सुकुल, सुनिवो जिनवानी;
इह विधि गये न मिले, सुमणि ज्यों उदधि समानी। (3)

पुण्य पाप फल मांहि, हरख विलखवौ मत भाई,
यह पुदगल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई। (4)

लाख बात की बात यही, निश्चय उरलाओ,
तोरि सकल जग दंद फंद, नित आतम घ्याओ (5)

इमि जानि आलस हानि,
साहस ठानि यह सीख आदरो;
जबलौं न रोग जरा गहे,
तबलौं जटिति निज हित करो। (6)

उपादान निज शक्ति है, जिय को मूल स्वभाव,
है निमित परयोगतें, बन्यो अनादि बनाव। (7)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपादान सु अनादिको, उलट रह्यो जगमाहिं,
सूलटत ही सूधे चलें, सिद्धलोक को जाहिं। (8)

उपादान कहे वह बली, जाको नाश न होय,
जो उपजत विनशत रहैं, बली कहाँ तें सोंय। (9)

उपादान अरु निमित ये, सब जीवन पै वीर,
जो निजशक्ति संभार ही, सो पहुंचे भवतीर। (10)

चेतना का वास है दुर्गन्धमय इस देह में,
शुद्धातमा का वास है इस मलिन कारागेह में,
इस देह के संयोग में जो वस्तु पलभर आयगी,
वह भी मलिन मल-मूत्रमय दुर्गन्धमय हो जायगी।

किन्तु रह इस देह में निर्मल रहा जो आतमा,
वह ज्ञेय है श्रद्धेय है बस ध्येय भी वह आतमा,
उस आतमा की साधना ही भावना का सार है,
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाध्याय गद्य

१. जो सकल निवारण अखण्ड, एक, प्रत्यक्ष -प्रतिभासमय, अविनश्वर और शुद्ध पारिणामिक लक्षणवाला निज परमात्मद्रव्य है, वही मैं हूँ अपितु खण्ड ज्ञान रूप मैं नहीं हूं।

२. जो देह में रहता है, तो भी देह से जुदा है, अशुचिमय देह को वह देव छूता नहीं, वही आत्मदेव उपादेय है।

३. मैं एक चैतन्य मयी हूं और कुछ अन्यरुप कभी नहीं होता हूं। मेरा किसी भी पदार्थ से कोई संबंध नहीं है। यह मेरा पक्ष परम मजबूत ऐसा ही है।

૧. જેમ દીપક વડે પ્રકાશવામાં આવતાં, ઘટાદિક પદાર્થો દીપક નાં પ્રકાશ પણાને જ જાહેર કરે છે, ઘટાદિપણાને નહીં, તેમ આત્માવડે ચેતવામાં આવતાં રાગાદિક અર્થાત જ્ઞાનમાં જ્ઞેયરુપે જણાંતા રાગાદિ ભાવો આત્માનાં ચેતક પણાને જ જાહેર કરે છે, રાગાદિપણાં ને નહીં.

૨. જેમ કમલ પત્ર અને પાણી સદાય જુદા જ રહે છે, તેમ શરીર ના સંયોગ માં રહેલો આ આત્મા પોતાનાં સ્વભાવ થી નિર્મલ છે અને શરીર, કર્મો તથા રાગાદિ મલ થી સદા અલિપ્ત રહે છે.

૩. જે સુબુદ્ધિઓને તેમ જ કુબુદ્ધિઓને પ્રથમથી જ શુદ્ધતા છે, તેમના માં કાંઈ પણ ભેદ હું કંઈ નય થી જાણું ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

૪. જેવી રીતે જયાં પુષ્પ નાં યોગથી સ્ફટિક મણિમાં જે લાલિમાનો પ્રતિભાસ થાય છે, તે ક્ષણિક છે, પણ સ્ફટિક નું સ્વરૂપ નથી, તેવી જ રીતે જીવાદિમાં, નવ તત્વો માં, જે જીવ નો પ્રતિભાસ થાય છે, તે વાસ્તવિક નથી, પરંતુ કેવલ વ્યવહાર દ્રષ્ટિ થી છે - શુદ્ધ દ્રષ્ટિ થી નથી. શુદ્ધ દ્રષ્ટિ થી તો જીવતત્વ અદ્વૈતરૂપ જ છે. તેમાં આ નવ અવસ્થાઓનો પ્રતિભાસ પ્રતીત થતો નથી.

૫. આદિ - મધ્ય - અંતરહિત, શુદ્ધ - બુદ્ધ એક સ્વભાવ પરમાત્મા માં, સકલ - નિર્મલ કેવલજ્ઞાનરૂપ નેત્ર વડે, અરીસા માં પ્રતિબિમ્બો ની પેઠે, શુદ્ધાત્મા આદિ પદાર્થો આલોકિત થાય છે - દેખાય છે - જણાય છે - પરિચ્છિન થાય છે, તેથી તે કારણે તેજ (શુદ્ધાત્માજ) નિશ્ચય લોક છે અથવા તે નિશ્ચય લોક નામનાં પોતાના શુદ્ધ પરમાત્મા માં અવલોકન તે નિશ્ચય લોક છે.

૬. જેમ લાલફૂલનાં નિમિતે સ્ફટિક લાલ રંગરૂપે પરિણમે છે, પરંતુ તે લાલ રંગ સ્ફટિક નો નિજ ભાવ નથી. સ્ફટિક સ્વચ્છતારૂપ પોતાનાં શ્વેત વર્ણથી વિરાજમાન છે. લાલરંગ છે તે સ્વરૂપમાં પેઠા સિવાય ઉપર ઉપર જ ઝલકમાત્ર દેખાય છે, ત્યાં રત્ન નો પારખુ ઝવેરી તો એમજ જાણે છે અને અપારખુ પુરૂષને સત્યરૂપ લાલ મણી ની જેમ લાલરંગ રૂપ જ પ્રતિભાસે છે, તેવી જ રીતે કર્મ નિમિત થી આત્મા રાગાદિ રૂપે પરિણમે છે, તે રાગાદિ આત્મા નાં નિજ ભાવ નથી. આત્મા પોતાની સ્વચ્છતારૂપ ચૈતન્ય ગુણ માં વિરાજમાન છે. રાગાદિ તે સ્વરૂપ માં પેઠા વિનાં ઉપર ઉપર જ ઝલક માત્ર દેખાય છે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

૭. નિશ્ચય થી રાગાદિ ભાવો ની ઉત્પતિ ન થવી એટલા માત્ર થી અહિંસા થાય છે. રાગાદિ ભાવો નું ઉપજવું તેજ હિંસા એવું જૈનસિદ્ધાન્તનું રહસ્ય છે.

૮. તાડનાં વૃક્ષથી તૂટેલું ફળ નીચે પૃથ્વી ઉપર પડવા માંડયા પછી વચ્ચે ક્યાં સુધી રહે ? બહુ જ અલ્પ કાલ અને તે પણ અનિયત ? તેથી હે ભવ્ય ! આ દેહાદિ ને આમ ક્ષળભંગુર જાણી ને વાસ્તવિક અવિનાશી પદનું સાધન બીજા બધાં કાર્યો જતાં કરીને પણ ત્વરાએ કરી લેવું, એ જ સુયોગ્ય છે, કારણ જીવન - સમય બહુ સાંકડો છે.

૯. જેમ કોઈ મનુષ્ય બહૂમૂલ્ય ચંદન ને અગ્નિ માટે બાળે છે તેમ અજ્ઞાની જીવ વિષયોં ની વાંછા માં નિર્વાણ નું કારણ, જે મનુષ્ય ભવ તેનો નાશ કરે છે.

૧૦. જેમ સૂર્ય ઘોર અંધકાર ને નિમિષ માત્ર માં નષ્ટ કરી નાખે છે, તેમ આત્માની ભાવના વડે, પાપો એક ક્ષણમાં નષ્ટ થઈ જાય છે.

૧૧. સહજ જ્ઞાનરૂપી સામ્રાજય જેનું અસ્તિત્વ છે, એવા શુદ્ધ ચૈતન્યમય મારાં આત્માને જાણીને, હું આ નિર્વિકલ્પ થાઉં.

૧૨. આ જીવ જ્યાં સુધી ચેતન - અચેતન રૂપ પરપદાર્થોમાં પોતાપણાની બુદ્ધિ રાખે છે, પરપદાર્થોને પોતાનાં સમજે છે, ત્યાં સુધી, મોહ - મિથ્યાત્વ વધતો રહે છે.

૧૩. જેમ એક ડાબલી માં રત્ન તેનું કાંઈ બગડયું નથી, એ ગુપ્ત છે, પણ દૂર કરી કાઢે તો વ્યકત છે, તેમ શરીર માં છૂપાયેલો આત્મા છે, તેનું કાંઈ

4697

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

બગડયું નથી, તે ગુપ્ત છે અને કર્મ રહિત થતાં પ્રગટે છે, ગુપ્ત પ્રગટ એ અવસ્થા ભેદ છે. એ બન્ને અવસ્થામાં સ્વરૂપતો જેવું ને તેવું છે, એવો શ્રદ્ધાભાવ એ સુખ નું મૂલ છે.

૧૪. હે આત્મન્ ! જેમ પરપદાર્થો ને પ્રતિદિન તૂં સ્મરે છે, તેમ જો શુદ્ધ આત્મ સ્વરૂપને સ્મરે તો મોક્ષ શું તને હસ્તગત ન થાય ?

૧૫. મોક્ષમાર્ગ તો એક વીતરાગભાવ છે, માટે જે શાસ્ત્રો માં કોઈ પ્રકારે રાગ-દ્વેષ-મોહભાવનો નિષેધ કરી વીતરાગભાવ નું પ્રયોજન પ્રગટ કર્યુ હોય, તેજ શાસ્ત્રો વાંચવા ને સાંભળવા યોગ્ય છે.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by.Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi